आर.एन. आई.पंजीयन क्रं.
CHHIN/2017/72506

वर्ष 4 अंक 05 ,जून 2020

ENVIRONMENT DAY
JUNE .5

किलोल

http://Www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

H. No. 580/1 Street 17 B Durga Chowk,
Adarsh Nagar, Mowa Raipur (CG) 492007
email : wings2flysociety@gmail.com

मूल्य - 80 /-

अनुक्रमाणिका

वंदना 6

नानी के पैसे 8

चतुर तोता 9

करें सदा सम्मान 12

प्रकृति की गोद 14

भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है 16

गरमी बाढ़गे 18

कुदरत 19

चालाक ठग 21

पेड़ लगाओ 23

हारेगा कोरोना,जीतेगा भारत 25

सुनहरा सबेरा 27

आमदनी 29

सबको स्कूल जाना है 31

गाँधी जी के सपनों का भारत 33

सूरज काका 35

छतीसगढ़ के मान बढ़ाबोन 37

वृक्ष से ही जल है 39

मलेरिया 41

ऐसा था हमारा बचपन 43

अनोखी धरा 45

बूढी अम्मा 47

छात्र जीवन में शिक्षक की सीख -डॉ ए.पी.जे.अब्दुल कलाम 48

एक रोटी 50

श्रमिक 52

कोरोना और पर्यावरण 54

घड़ी रानी 56

शेखचिल्ली 57

शिक्षक की पाती बच्चों के नाम 59

Polythene 62
स्कूल चलें 64
देश सेवा करने चले मजदूर 66
सादा जीवन उच्च विचार 68
बदलते परिवेश में 70
महामानव को नमन् 72
चरित्रवान बालक 74
कठिन डगर 76
जीने के लिए राह दिखाता हूँ 77
Books True friend 79
असर ये भी क्या खूब हुआ 81
कोरोना 83
सबसे अच्छा कौन 84
कोरोना के कहर 86
छत्तीसगढ़ की बेटी हूँ मैं 88
मीठी रसदार जलेबी 90
नंदा मैडम की क्लास 92
खेलें खेल 99
मेरी माता अनमोल नाता 101
लड़ाई 103
Corona 105
नवा सुरुज जागबो 107
खुश हैं वन्य जीव और प्रकृति मुस्काने लगी 109
नमस्कार का चमत्कार 113
जल्दी कोरोना से जीतना है तो... 115
तोते का निर्णय 117
पर्यावरण 119
पौधों को भी होता है दर्द 121
नटखट निन्नी 124
माँ 126
आसमान की कक्षा 128

पराया धन 130
एक कहानी : नवाचार की जुबानी 131
लॉकडाउन में घर पर रहकर 133
PLANT AND TREES 134
चलो नहाने 136
रोटी 138
मैं मजदूर हूँ 140
एक बनो नेक बनो 142
गर्मी से तुम बचके रहना 146
मेरा मित्र नन्हा चूहा 148
मेरा परिवार मेरा संसार 150
हमारे प्रेरणास्रोत- मिल्खा सिंह 152
ओ माँ... 154
नेताजी 156
नशा एक अभिशाप 158
पाठशाला 160
बालश्रम 162
अधूरी कहानी पूरी करो 164
रिश्ता 164
संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी 166
प्रीति सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी 167
डिजेन्द्र कुर्रे व्दारा पूरी की गई कहानी 168
तुषार देवांगन कक्षा आठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चंगोराभाठा दक्षिण पूर्व, रायपुर व्दारा पूरी की गई कहानी 169
कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी 170
अवसर की समानता 170
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 171
आम का पेड़ 173
मोर गाँव 175
देश सेवा करने चले मजदूर 177

हमारा पर्यावरण 179
कंप्यूटर 181
एक सवाल 183
इंटरनेट का कमाल 184
पहेलियाँ 185
पंचतंत्र की कहानी भाग 1 186
आत्मबल 188
बढ़े चलो 189
स्कूल चली 191
मानवता का पुल 192
सफलता की कहानी 194
My Mother 196
छुट्टियों में मैं खुश नहीं 197
सबसे अच्छे मेरे पापा 199
चित्र देखकर कहानी लिखो 201
पूर्णेश डड़सेना द्वारा भेजी गयी कहानी 201
अपर्णा वर्मा कक्षा दशवीं भानुप्रतापपुर, कांकेर द्वारा भेजी गयी कहानी 203
लॉकडाउन की पढाई 203
अगले अंक के लिये चित्र 205
भाखा जनुअला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली) 206

संपादक

डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू,धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, शिप्रा बेग, नीलेश वर्मा, कविता आचार्य

तकनीकी सहायक एवं ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चों,

लाकडाउन की अवधि बढ़ती जा रही है और हमारी छुट्टियां भी चल रही हैं. हम सबको इस बात का ध्यान रखना होगा कि छुट्टियां लंबी होने की वजह से हमारी पढ़ाई में नुकसान नहीं हो. कोरोना की वजह से आपके वो सभी साथी जो अपने पालकों के साथ बाहर चले गए थे, अब लौट कर वापस आने लगे होंगे. ये सभी अगले सत्र में आपके साथ आपके स्कूल में ही पढ़ेंगे.

पढई तुंहर दुआर कार्यक्रम के माध्यम से आपको अपनी कक्षा के सभी विषयों की बहुत सारी सीखने की सामग्री देखने को मिल सकती है. आनलाइन क्लास का फायदा भी आपको मिल रहा होगा. आपको गृहकार्य और अपनी शंकाओं के समाधान के अवसर भी मिल रहे होंगे. आपके मन में पढाई से संबंधित जितनी भी शंकाए हैं, उसे अपने शिक्षक से आप पूछ सकते हैं. इन सब सुविधाओं का लाभ उठाएं.

आपका

आलोक शुक्ला

वंदना

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे “कोहिनूर"

नित्य करूँ मैं वंदना,
गुरुवर को कर जोर.
पाउँ चरणों में जगह,
होकर भाव विभोर..

मात-पिता भगवान हैं,
करना वंदन रोज.
इन देवों को छोड़कर,
करते हो क्या खोज..

जिनके आशीर्वाद से,
हुआ सफल हर काम.
करता हूँ नित वंदना,
मात-पिता के नाम..

धरती माँ की वंदना,
यह ही जग में सार.
सबको समान जानकर,
करती है उपकार..

प्रेम भाव से वंदना,
जन - जन को है आज.
रहे सफलतम कर्म सब,
बन जाए सब काज..

नानी के पैसे

रचनाकार- धारा यादव

नानी से पाए कुछ पैसे
गाँठ में बाँधे रुपये जैसे
मेले चल दिए बिना बताए
दही-बड़े मज़े से खाए
दही गिरा कपड़ों में थोड़ा
वही दही ने भंडा फोड़ा
जब लौट के घर को आये
डाँट लगी और डंडे खाये

चतुर तोता

रचनाकार - मारुति शर्मा

एक समय की बात है. किसी जंगल में एक वृक्ष के कोटर में हरित नाम का एक तोता रहता था. एक दिन वह भूख के मारे उड़ते- उड़ते जंगल के समीप के गाँव में पहुंचा और एक घर की छप्पर पर जाकर बैठ गया. उसने देखा कि एक छोटे से पिंजरे के अंदर चने रखे हैं.

हरित ने सोचा- " मैं कितने समय से भोजन खोज रहा था, अब जाकर ये चने दिखे हैं. इससे पहले कि कोई आ जाए इन चनों को खा लेता हूँ. "

ऐसा सोच कर वह पिंजरे के अंदर चला गया.

पर यह क्या ! जैसे ही हरित ने उन चनों को चोंच से पकड़ा, पिंजरा बंद हो गया. उसने पिंजरे को खोलने का बहुत प्रयास किया. अपनी चोंच से पिंजरे को काटने लगा. परन्तु वह सफल नहीं हो पाया. अंत में वह थककर शांत बैठ गया.

तभी एक व्यक्ति वहां आया और उसने पिंजरे को उठाकर अपने घर के आँगन में एक पेड़ पर टाँग दिया. हरित ने देखा कि वहाँ पर एक पिंजरा पहले से ही टंगा हुआ है और उसमें भी एक तोता बंद है.

हरित ने उस दूसरे तोते से कहा- "मित्र! मैं हरित हूँ. तुम्हारा क्या नाम है? तुम कैसे इस पिंजरे में फंस गए?"

दूसरे तोते ने उत्तर दिया- "मित्र मेरा नाम सुकंठ है. चने के लालच में आकर मैं भी इस पिंजरे में फँस गया."

कुछ ही दिनों में हरित और सुकंठ में मित्रता हो गई. हरित सदैव उस पिंजरे से स्वतंत्र होने के उपाय सोचता रहता था.

एक समय रात्रि में उस घर में एक चोर आया. हरित उस चोर को देखकर सुकंठ से बोला- "मित्र! देखो, इस घर में एक चोर घुस आया है. परन्तु तुम एकदम शांत रहना."

सुकंठ ने कहा- "मित्र ! क्यों न हम चिल्लाकर गृहस्वामी को जगा दें, जिससे ये चोर पकड़ा जाए."

हरित ने सुकंठ को समझाते हुए कहा- " ऐसा न करना. मेरे मष्तिष्क में इस पिंजरे से स्वतंत्र होने की एक योजना है. बस तुम शांत होकर देखते जाओ."

सुकंठ ने कहा - "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा. यदि मैंने चिल्लाकर इस चोर को पकड़वा दिया तो गृहस्वामी मुझे पुरस्कार में मीठे - मीठे फल देगा और हो सकता है प्रसन्न होकर वह मुझे इस पिंजरे से स्वतंत्र भी कर दे."

हरित बोला- "पिंजरे में परतंत्र रहकर उस मीठे फल का भी क्या आनंद आएगा? उससे श्रेष्ठ तो यह है कि हम लोग स्वतंत्र होकर सूखा अनाज खाकर जीवन व्यतीत करें. तब भी यदि तुम ऐसा नहीं करना चाहते तो मेरे स्वतंत्र होते तक तुम शांत रहना. जब मैं उड़ जाऊँ तब चिल्लाना."

सुकंठ अपने मित्र की इस बात को तो मान गया परन्तु पुरस्कार के लोभ में गृहस्वामी को जगाने का हठ नहीं छोड़ा.

हरित ने उस चोर से कहा-"अरे चोर! हम लोगों ने तुम्हें देख लिया है. यदि हम लोग चिल्लाने लगे तो गृहस्वामी नींद से जागकर तुम्हें पकड़ लेगा. यदि तुम हमारी एक बात मान लो तो हम नहीं चिल्लाएंगे."

चोर ने डरकर हरित से कहा-"ठीक है, बताओ मुझे क्या करना होगा."

हरित ने चोर से कहा- "तुम मेरे पिंजरे के पट खोल दो. हम उड़कर दूर चले जाएंगे. तब तुम अपना कार्य कर लेना."

चोर ने डरते हुए वैसा ही किया. उसने हरित के पिंजरे का पट खोल दिया.

पट खुलते ही हरित उड़कर पेड़ की ऊँची शाखा पर बैठ गया. अब वह पिंजरे से मुक्त हो गया था.

तभी सुकंठ टाँय- टाँय कर चिल्लाने लगा. गृहस्वामी नींद से जागकर बाहर आया. गृहस्वामी को आता हुआ देख चोर अंधेरे में घर से बाहर भाग गया.

गृहस्वामी ने देखा कि बाहर कुछ भी नहीं है, लेकिन एक तोता पिंजरे से भाग गया है.

तब वह बड़बड़ाने लगा- "लगता है पिंजरे का पट ठीक से बंद नहीं था, इसलिए एक तोता उड़कर भाग गया. कोई बात नहीं, अब इस तोते के पिंजरे को अच्छी तरह बंद कर देता हूँ. नहीं तो यह भी उड़ जाएगा."

तब वह सुकंठ के पिंजरे के पट को भलीभांति बंद कर पुनः सोने चला गया.

अब तो सुकंठ पिंजरे के अंदर ही रह गया और अपने चतुर मित्र हरित की बात नहीं मानने पर बहुत पछताने लगा.

हरित अपनी बुद्धिमानी और धैर्य के कारण स्वतंत्र होकर अपने घर की ओर उड़ गया.

इसी कारण कहा जाता है कि विपत्ति के समय निर्भय होकर पूरे धैर्य के साथ उपाय ढूँढने से ही समस्या का समुचित समाधान प्राप्त होता है.

करें सदा सम्मान

रचनाकार- द्रोपती साहू "सरसिज"

माता हमारी जीवन देती,
हम उनके आँखों के तारे हैं.
पिता से हमने जीना सीखा,
हम उनके राजदुलारे हैं..

उनकी प्यार भरी आँखों में,
सुनहरे सपने हमारे हैं.
हमारी खुशियों में खुश होकर,
सारे सुख हम पर वारे हैं..

कहना इनका हरदम मानें,
सदा करते रहें सम्मान.
इस दुनिया में ये दोनों,
होते हैं भगवान समान..

सदा चाहते हित हमारा,
अनहोनी से भी बचाते हैं.
रोक निवाला अपने मुख का,
कौर हमें खिलाते हैं..

माता-पिता का कहना सदा,
उन्नत मार्ग दिखाते हैं.
अपनी रक्षा करने की और,
परोपकार सिखाते हैं..

प्रकृति की गोद

रचनाकार- रीता गिरी

आज मानव की करुण वेदना,
हमको ये समझाती है.
रूक जा हे ! मानव जाति,
तेरी रफ्तार मुझे न भाती है.
भाग-दौड़ के इस जीवन में,
हमने अपना सुख-चैन गवांया है.
चिंतन-मनन, विचार करें हम,
क्या खोया,क्या पाया है.
प्रकृति और मानव में अटूट संबंध,
हमने सदियों से जाना है.
मत काटो ये वन-उपवन,
ये धरती मां का सीना है
जीने दो जीव-जंतुओं को,
प्रकृति ही इनका ठौर- ठिकाना है.

समय-समय पर प्रकृति हमें,
अपनी शक्ति दिखलाती है.
कभी महामारी, कभी आपदा बनकर,
हमकों ये सबक सिखाती है.
हम कितने भी विकसित हो जाए,
इसके समक्ष बौने हो जाते हैं.
फिर भी हम छल, दंभ, द्वेष में,
कुछ समझ नहीं पाते हैं.
कर उत्पन्न विकार प्रकृति में,
जीवन चुनौतियों से जूझ रहा है.
घुटे जा रहे विकृतियों से,
मानवता के प्राण है.
कर दूर प्रकृति से प्रदूषण को,
पुनः संतुलन बनाना है
परस्पर प्रेम, सदभाव का अलख जगाकर,
जीवन को सुखमय बनाना है.
कर श्रृंगार बसुंधरा का,
धरती को स्वर्ग बनाना है.
जय हिन्द, जय भारत

भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है

रचनाकार- प्रियंका सिंह

पेपर के कैरी बैग्स का प्रयोग करें,
कपड़े के थैलों का सदुपयोग करें.
धरती से प्लास्टिक को हटाना है,
अपने भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है..

सिंगल यूज़ प्लास्टिक का प्रयोग बंद करें,
पानी की बोतल से पानी पीना बंद करें.
प्लास्टिक को उसकी औकात दिखाना है,
अपने भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है..

गीले व सूखे कचरे का सही प्रबंध करें,
प्लास्टिक में कभी ना रखें खाना जीव जंतुओं को मरने से बचाना है.
प्लास्टिक को सबके जीवन से हटाना है,
अपने भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है..

मृदा प्रदूषण बंद करें, प्लास्टिक को रिसाइकल करें.
अपनी पृथ्वी को प्लास्टिक से बचाना है,
अपने भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है..

प्लास्टिक बंद कर इंसानियत का फर्ज निभाना है |
इस तरह हमें सच्चे देशभक्त का परिचय दे जाना है,
अपने भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है..

गरमी बाढ़गे

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन माटी

गरमी बाढ़त रोज के, पानी सबो अटात.
मरना होगे गाँव मा, तरिया बोर सुखात.

रेंगत जावय कोस भर, पानी ला तब पाय.
छाला परगे पाँव मा, रोवासी अब आय.

नवा बहुरिया फोन मा, दाई करा बताय.
पानी के दुख होत हे, कइसे दिन ह पहाय.

बिजली नइहे गाँव मा, अँधियारी हा छाय.
गरमत हावय रात दिन, नींद कहाँ ले आय.

आय पसीना माथ मा, टोंटा अबड़ सुखाय.
गरमी अतका बाढ़गे, चैन घलो नइ आय.

कुदरत

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

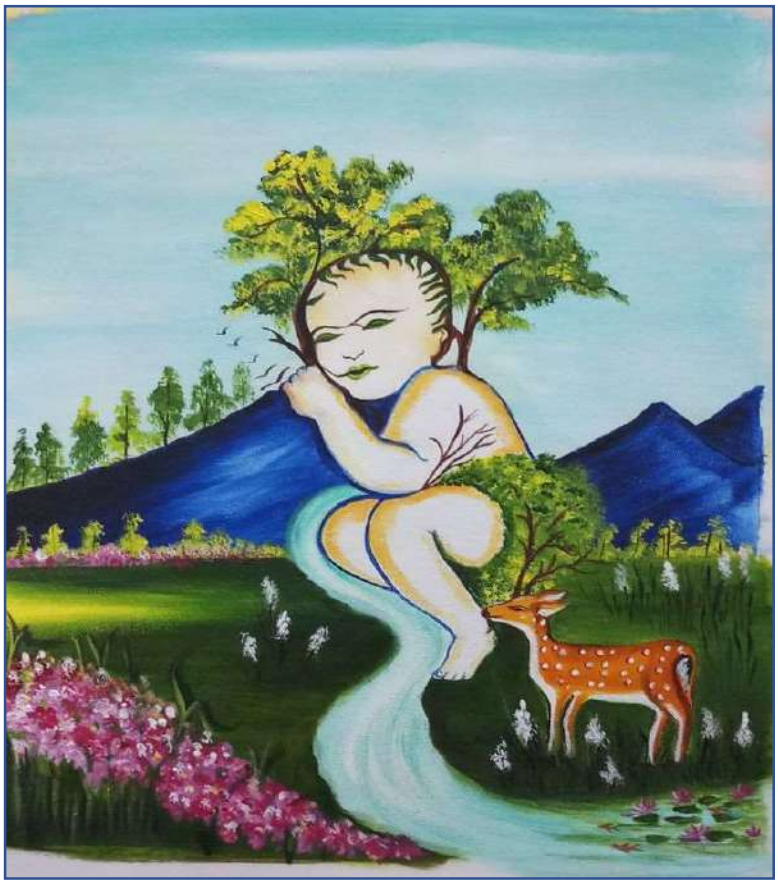

आज अहसास हुआ कि कुदरत के आगे हम जीरो हैं
अंधाधुंध शहरीकरण कर अपने को समझे हीरो हैं

जीवन को मशीनीकरण बनाकर हम जीरो हैं
गाँव की मिट्टी में पल बढ़कर बने हम हीरो हैं

शहरी जीवन के आगे गाँव का जीवन जीरो है
भौतिकवादी संसाधनों को पकड़ बनते हम हीरो हैं

बड़ा पद, बड़ी नौकरी के आगे सब नाते जीरो है
आलीशान बंगले और महंगी गाड़ियों वाले हम हीरो हैं

नौकर-चाकर, सोना-चांदी और पैसों के आगे सब जीरो है
माता-पिता, दादा-दादी,नाना-नानी के हम हीरो हैं

कोरोना वायरस के आगे धन-दौलत सब जीरो है
घर पर रहकर सोशल डिस्टेंसिंग को मानने वाले हम हीरो हैं

सिनेमा के अभिनेता आज महामारी के आगे जीरो हैं
डॉक्टर, नर्स, सिपाही और सफाईकर्मी आज मेंरे हीरो हैं

चालाक ठग

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे

एक शहर में एक ठग रहता था. लोगों को ठग-ठग के अपना तिजोरी भरता तथा परिवार का भरण पोषण करता था. ठग के 3 पुत्र और दो पुत्री थे. वह धार्मिक क्रियाकलापों के नाम पर ठगी करता था, शहर में जो भी बस चलती थीं उनमें चढ़ना, धार्मिक संस्थानों के निर्माण के नाम पर चंदा वसूल कर लोगो को ठगता था. इस तरह से प्रतिदिन सफर करता और संस्थानों के नाम पर पैसा लेता था. एक दिन एक सज्जन ने उसे निवेदन किया कि महाशय जी चलिए आज मंदिर का दर्शन करेंगे और वही जाकर मैं 10,000 रूपये दान में चढ़ाऊँगा. बस में बैठे यात्रियों ने उस सज्जन के शब्दों में हाँ में हाँ मिलाने लगे और पूरे बस के यात्री मंदिर दर्शन के लिए तैयार हो गए. इतनी भीड़ में वह ठग कैसे इंकार करता. मन ही मन सोच रहा था कि आज पकड़ा न जाऊँ. उसको लोगों को मंदिर ले जाना ही पड़ गया. फिर जिस मंदिर के नाम से ठग रहा था वहाँ ले गया. एक सज्जन ने मंदिर के पुजारीजी से पूछा “पुजारी जी इस मंदिर का उद्घाटन कब और कितना समय होना है” पुजारी जी ने कहा “बेटा इस मंदिर का उद्घाटन हुए 10

वर्ष हो गए हैं और उद्घाटन बार-बार थोड़े ही होता है. व्यक्ति ने कहा “यह महाशय जी तो हम लोगों से उद्घाटन के लिए पैसा माँग रहे हैं और इस मंदिर के नाम से बहुत पैसा चढ़ावा ले चुके हैं.“पुजारी जी ने कहा “बेटा इस व्यक्ति ने तो एक भी बार यहाँ दान नहीं दिया है, दानदाताओं की सूची मंदिर में टंगी है आप देख सकते हो.” फिर सभी बस यात्री क्रोधित गए और उसको दौड़ा-दौड़ा के पीटने लगे. उस दिन ठग की चालाकी पकड़ी गयी और उसने ठगी के गलत धंधे से तौबा कर ली.

पेड़ लगाओ

रचनाकार- द्रोपती साहू "सरसिज"

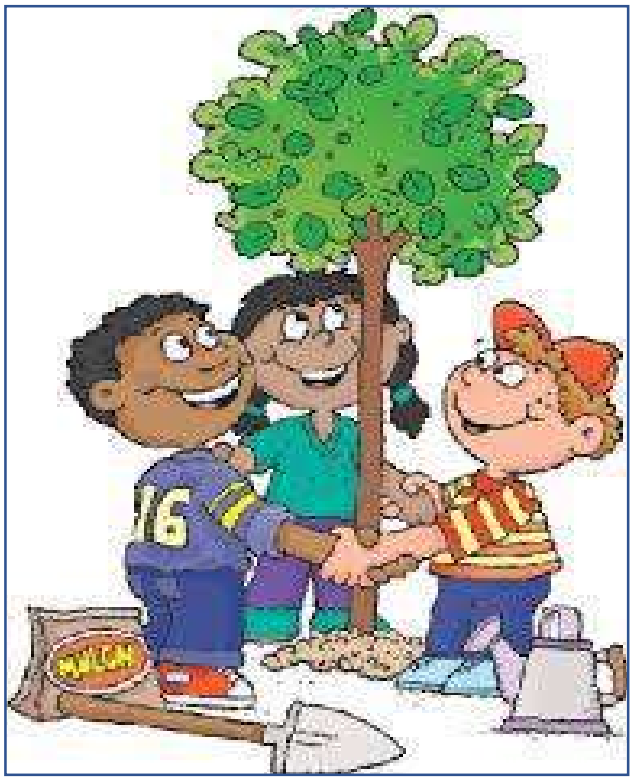

अपने दादा की ऊँगली थामें,
दीनू उछलते घूमने जाता.
तरह -तरह के पेड़ देखता,
डाली पर झूल जाता..

धूप लगे तो पेड़ की छाँव में,
झटपट जाकर वह छुप जाता.
बड़े काम का पेड़ है होता,
पके-पके फल तोड़ के खाता..

पेड़ हमारा सच्चा साथी,
पेड़ लगाने सबसे कहता.
शुद्ध हवा और भरपूर पानी,
पेड़ों से ही सबको मिलता..

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ,
दीनू उछलते सबसे कहता.

हारेगा कोरोना,जीतेगा भारत

रचनाकार- ऋषि प्रधान

कोरोना आया कहर है ढाया,पूरी दुनिया में कोहराम मचाया.
चीन,अमेंरिका,इटली होते ईरान से अब भारत आया.

सोच रखा था इस महामारी ने अब कोहराम मचाऊंगा,
जैसे डराया हूँ बाकियों को भारत में भी हाहाकार मचाऊंगा.

पूरे विश्व को राह दिखाने वाला(भारत),पहले से ही जाग गया.
लोग घरों में कैद रहे और कोरोना हार गया.

सोच रहा है यह महामारी कैसे कोहराम मचाऊं अब,
कब निकलेंगे लोग घरों से इनको भी हो जाऊं अब.

एक देश एक परिवार हैं हम यह सन्देश भारत के लोगों ने तभी दिया.
ऊंच-नीच सब चीजों को छोड़ भारत वसुधैव कुटुम्बकम का देश हुआ.

लोग घरों में रुके हुए हैं तकलीफों को झेलकर,
पुलिस डॉक्टर भी डटे हुए हैं कोरोना से खेलकर.

लोग घरों में थाली बजाकर, शंखनान्द से जयकारा उनका कर रहे.
जो ईश्वर का रूप बनकर इस कोरोना से हैं लड़ रहे.

हे! भारत के वीर वैज्ञानिको नया एक अंनुसन्धान करो,
पूरे जगत को इससे बचाओ कोरोना का भी विनाश करो.

सुनहरा सबेरा

रचनाकार- अविनाश तिवारी

फिर वही सुबह होगी
इंसान न फिर अकेला होगा
झूमेंगे सभी मस्ती में
खुशियों का फिर मेंला होगा

मन्दिर में गूँजेगी आरती
गुरुद्वारा में शबद कीर्तन होगा
सब मिलके फहराएंगे तिरंगा
मुस्कुराता अपना चमन होगा

फिर बागों में झूले झूलेंगे
बच्चों की होगी किलकारी
फिर गले लगाएंगे हम सबको
संकल्पित हैं सब नर-नारी

है कठिन समय तो क्या हुआ
बिजली बादल में ही चमकती है
भारत का दृढ़ निश्चय देख
हर मुश्किल भी तो डरता है

बीतेगी ये काली अमावस रात
फिर सामने सुनहरा सबेरा होगा
हारेगा ये बेरहम विषाणु
इंसानियत का फिर बसेरा होगा

आमदनी

रचनाकार - जयन्त कुमार पाठक

राम प्रसाद सोनपुर गाँव में रहता था. वहाँ के लोग बहुत गरीब थे. खेती-बाड़ी से उनका गुजर-बसर नहीं हो पा रहा था. सोनपुर गांव के लोग गरीबी में अपना गुजर-बसर कर रहे थे. एक दिन राम प्रसाद अपने दोस्त के साथ पास के ही शहर में घूमने गया. वहाँ उसने एक आदमी को फल बेचते हुए देखा. उसने फल वाले से पूछा कि भाई ये फल कहाँ से लाते हो. फल वाले ने बताया कि मैं, ये सभी फल बसन्तपुर गाँव से लाता हूँ. वहाँ के लोग फलों की खेती करते हैं.

राम प्रसाद अपने गाँव वापस आकर, अपने दो-चार दोस्तों को अपने-अपने खेतों में फल की खेती करने के लिए प्रेरित किया. सोनपुर गांव के लोगों ने आम, केला, पपीता, अमरूद, बेर, जामुन इत्यादि फलों के पेड़ लगा कर, इन फलों के खेती की शुरुआत कर दी और पूरे लगन, मेहनत एवं ईमानदारी से दिन-रात पेड़ो की देखभाल करने लगे.

कुछ वर्षों बाद राम प्रसाद व उसके दोस्तों के खेतों में फलदार वृक्षों से फल की महक आसपास के पूरे गाँव-शहर में फैलने लगी. अब शहर के फल दुकानों के व्यापारी सोनपुर गाँव से फल खरीद कर ले जाने लगे.

गाँव के बाकी लोग भी राम प्रसाद व उसके दोस्तों की देखा-देखी अपने-अपने खेतों में फलों की खेती शुरू कर दी. इससे वहाँ के लोगों की आमदनी बढ़ गयी. जिससे सोनपुर गाँव वालों की गरीबी खत्म हो गई. वृक्षों को अधिक मात्रा में लगाने के कारण वहाँ का वातावरण पहले से और अधिक शुद्ध हो गया.

सबको स्कूल जाना है

रचनाकार- ऋषि प्रधान

नया सूरज नया नाम हे गढ़ना,
स्कूल जाके रोज है पढ़ना.
निरक्षर नहीं है हमको बनना,
साक्षरता के राह पर है चलना.
खुद भी है जाना औरों को भी है लाना,
गली मोहल्लों से है सबको बुलाना.
सीता गीता छोटू मोटू सबको लेकर जाना है,

रोज स्कूलमें पढ़ना है और मध्यान्ह भोजन भी खाना है.
पुस्तक कपड़ा मुफ्त मिलेगा पैसा नहीं चुकाना है,
पढ़ लिख है कुछ तो बनना,अपना नाम कमाना है.
सबको ज्ञान की बात बताके,
सबको राह दिखाना है.

शिक्षकों से कुछ सिखकर हमको,
उनका मान बढ़ाना है.
पढ़ लिख कर खूब मेंहनत करके,
एक दिन अफसर बन जाना है.

गाँधी जी के सपनों का भारत

रचनाकार- प्रेमचंद साव "प्रेम"

गाँधीजी के सपनों का है ये भारत,
उन्नत होकर विकसित होता ये भारत.
ग्रामीण परिवेश में जागरूकता बढ़ाया,
स्वदेशी अपनाने का अभियान चलाया..

आर्थिक सामाजिक न्याय बताकर,
गाँव के विकास को समझाया.
व्यापकता की दृष्टि फैलाकर,
जाति,धर्म,भाषा का भेदभाव मिटाया..

नर-नारी को समानता दिलाकर,
जीवन जीने का ढंग बताया.
आम जनों को शिक्षा देकर,
मानव चेतना जागृत कराया..

नशा को अभिशाप बताकर,
समाज को आगे बढ़ाया.
हिंसा के ताण्डव को समझाकर,
अहिंसा परमो धर्म का पाठ पढ़ाया..

समर्थ भारत का सपना संजोकर,
पूर्ण स्वालंबन का बीड़ा उठाया.
घर-घर चरखा हस्तकला द्वारा,
कुटीर उद्योग का बिगुल बजाया..

सूरज काका

रचनाकार- रामनारायण प्रधान

मेरे प्यारे सूरज काका,
सूरज काका सूरज काका.
सुबह-शाम तुम होते लाल,
बाकी दिन रहते विकराल.
हिम्मत नहीं जो आँख मिलाए,
पास भी आए तो जल जाए.
सौरमंडल आपका परिवार,
नौ बच्चों का है संसार.
मेघा हो या हो सागर,
हर गुलशन की बात है.
पौधे हो या जीव-जंतु,
जीवन तेरे हाथ है.
उगने से जगता है जहाँ,
डूबने पर सो जाता है.

ठंडी हो या हो अधेरा,
धूप में मिट जाता है.
कोई नहीं इस जहाँ में,
आपके समान हैं.
इस जहाँ में आप सा,
न और कोई महान है.

छतीसगढ़ के मान बढ़ाबोन

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे

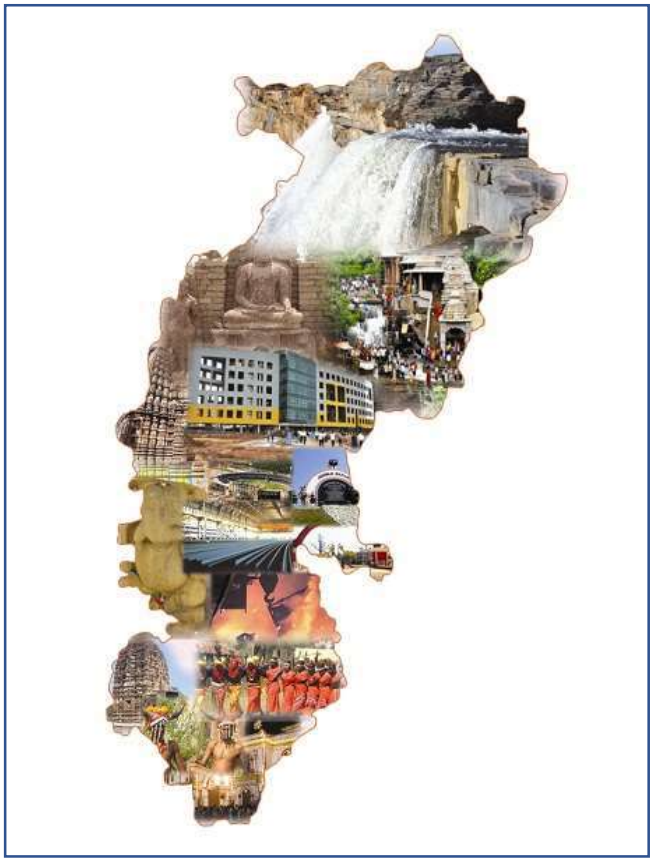

नई जावन तिरिथ गंगा,
नई जावन काशी ग.
छत्तीसगढ़ म रहिबो संगी,
खाबो हक्कन के बासी ग.

कामबुता नंगत करबो,
भुइयाँ म नागर चलाबोन ग.
धरती दाई के कोरा म संगी,
सोनहा धान ल उपजाबोन ग.

राजिम जाबोन गिरौदपुरी जाबोन,
नोनी बाबू ल दरसन कराबोन ग.
बड़का जईतखाम म चढ़के संगी,
सादा जीवन बिताबोन ग.

मेंला जाबोन मड़ई जाबोन,
आनी बानी के खई बिसाबोन ग.
सरकस सलिमा देखबो संगी,
खुशी से जिनगी बिताबोन ग.

खो खेलबोन कबड्डी खेलबोन,
अउ खेलबोन कुश्ती ग.
जीतके लानबोन मेंडल ल संगी,
छत्तीसगढ़ के मान बढ़ाबोन ग.

वृक्ष से ही जल है

रचनाकार - पेश्वर राम यादव

एक समय की बात है. एक छोटे से गाँव में एक लकड़हारा रहता था. वह लकड़ी बेचकर अपना जीवन- यापन करता था. प्रत्येक दिन वह पास के जंगल में हरे-भरे पेड़ को काट देता जब पेड़ सूख जाते तो उसकी लकड़ियाँ काटकर वह शहर जाकर अच्छे दाम में बेच आता था. वह अपनी रोजमर्रा के खर्च से अधिक पैसा कमाना चाहता था. जिससे उसके पास अच्छी बचत भी हो इस तरह वह पैसे के लोभ में हरे -भरे पेड़ों को बड़ी ही चालाकी से निर्दयतापूर्वक काटता था.

कुछ वर्ष बाद गाँव में बहुत अकाल पड़ा. गाँव में भूखमरी, दरिद्रता बढ़ने लगी. लोग गाँव से पलायन करने लगे. लकड़हारे की माली हालत भी कुछ ठीक नहीं थी. एक दिन उसके घर में शहर से एक ईट का सौदागर आया. सौदागर ने लकड़हारे से पूछा ईट पकाने के लिए मुझे सूखी लकड़ी के साथ- साथ कच्ची मोटी लकड़ी चाहिए. लकड़हारे ने कहा ठीक है. इस तरह दोनों के बीच में सौदा हुआ. दूसरे ही दिन लकड़हारा जंगल की ओर चल पड़ा और पेड़ों को निर्दयतापूर्वक

काटना शुरू कर दिया. दो -तीन दिन बाद लकड़हारा काटे हुए पेड़ों की टहनियों को चुनने गया तो उसने देखा कि पेड़ों की पत्तियों से अधिक मात्रा में पानी निकल रहा है और जमीन में फैला हुआ है. लकड़हारा सोच में पड़ गया उसने सभी काटे हुए पेड़ों को जाकर देखा वह आश्चर्यचकित था कि पेड़ों की पत्तियों से पानी कैसे निकल रहा है. उसकी आँखे खुल गई उसे समझ आ गया कि हरे -भरे पेड़ों से ही पानी बनता है और मैंने सैकड़ो हजारों हरे -भरे पेड़ों को काट-काट कर सूखाकर मार दिया. उसे बहुत पछतावा हुआ और भविष्य में हरे- भरे पेड़ों को नहीं काटने और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने का संकल्प लिया.

शिक्षा एंव सीख-बच्चो हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि पेड़- पौधों के पत्तियों में वाष्पोत्सर्जन की क्रिया होती है जिसके फ़लस्वरुप जल वाष्प से संघनित होकर बादल बनता है जिससे वर्षा होती है. इसलिए हमें हरे -भरे पेड़ -पौधों को नहीं काटना चाहिए और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए.

मलेरिया

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

लोगों को मलेरिया के प्रति जागरूक करना होगा
कंपकपी वाला बुखार है इसका लक्षण बताना होगा
पास-पड़ोस की पानी के जमाव को हटाना होगा
इससे बचना है तो स्वच्छता अपनाना होगा

साग-भाजी, भोजन-पानी को ढक कर रखना होगा
सोते समय मच्छरदानी भी लगाना होगा
उबला ठंडा ढका पानी ही पीना होगा
इससे बचना है तो स्वच्छता अपनाना होगा

बीमार जो पड़े तो अस्पताल भी जाना होगा
डॉक्टर से मिलकर खून जाँच कराना होगा
दवा को खाना और इंजेक्शन भी लगवाना होगा
इससे बचना है तो स्वच्छता अपनाना होगा

ऋतु परिवर्तन में मच्छरों की तादाद बढ़ेगी
मच्छरों को कम करने का उपाय भी करना होगा
अस्पताल से बचना है तो स्वच्छता अपनाना होगा
इससे बचना है तो स्वच्छता अपनाना होगा

ऐसा था हमारा बचपन

रचनाकार- गोविंद पटेल

जब हम बच्चे थे,
तब न कल की फ़िक्र थी,
न आज की चिंता थी.
कितना प्यारा बचपन था.

मस्ती ही मस्ती,
वो कागज की कश्ती,
वो रंग बिरंगे पत्थर,
वो टूटे काँच की चूड़ियाँ,
वो गुड्डे और गुड़ियाँ,

गिल्ली-डंडा, कंचे-गोली,
खेला करते हम हमजोली
मेले में खूब झूला झूले,

साथ में खाए खट्टी-मीठी गोली

लड़कर झगड़कर कर ली कुट्टी,
वो स्कूल की दोस्ती.
कुछ पल बाद मिट्ठि करके
फिर से कर ली दोस्ती.

नदी पहाड़ का खेल खेलें
छुक-छुक-छुक कर रेल भगाई.
आम, इमली चुराकर खाई
पकड़े जाने पर खूब डांट खायी.

दादी-नानी हमें सुनाते
रामायण महाभारत की कहानी
इन्हें सुन कर हम बड़े हुए
और बने संस्कारी.
ऐसा था हमारा बचपन.

अनोखी धरा

रचनाकार- कल्पना सिंह

सौर मंडल की अनोखी,
अलबेली नीली धरती,
हे जननी जन्मभूमि,
उर्वरा वसुधा वसुंधरा.

तूने हमें अन्न दिया
पीने को जीवन जल दिया
हमने विशाल मशीनों से
खन कूप खदान तन भेद दिया.

हमने पर्वत काट दिया
अपना पथ सुगम किया
बड़े विस्फोटक यंत्रों से
सुदृढ़ भूधर का धड़ भेद दिया.

हमने प्रवाहिनी का प्रवाह
कहीं मोड़ दिया, कहीं जोड़ दिया
उठा कर विशाल दीवारों से
नदी का तट बांध दिया.

गहन उपवन को काट दिया
वन जीवों का नीड उजाड़ दिया
समतल किया मशीनों से
अपनी बस्ती को आबाद किया.

नज़र नहीं आते पखेरू गगन में
खग का जीना दुश्वार किया
बना कर ऊँची चिमनियों से
पवन में विष घोल दिया

हे वन,पवन, पर्वत, सरिता
कर दे क्षमा सुन याचना
हे जननी जन्मभूमि
उर्वरा वसुधा वसुंधरा.

बूढी अम्मा

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

एक दिन कि बात है एक आदमी सुबह -सुबह टहलते हुए दूर तक चला गया उसे सड़क किनारे पेड़ के नीचे कोई पडा हुआ नजर आया उसने हिम्मत करके पास जाकर देखा तो वह थकी -हारी एक वृद्ध महिला थी. उस महिला को देखकर आदमी के मन में बहुत दया आई उसने महिला के समीप जाकर देखा तो पाया कि महिला बेहोश है, वह उस महिला को उठाकर पास के अस्पताल ले गया जहाँ नर्स ने उसकी जाँच की और बताया यह महिला बहुत भूखी प्यासी है इसके कारण बेहोशीहो गयी. कुछ देर बाद उस महिला को होश आया. वह अचरज मैं पड़ गयी मैं यहाँ कैसे ? कौन मुझे यहाँ लाया ? मेरा सारा सामान कहाँ है? यह सब प्रश्न वह इशारों ही इशारों में कर रही थी. आदमी का घर उस अस्पताल के निकट ही था वह कुछ खाने- पीने का सामान घर से ले आया और महिला को खाने के लिए दिया, सर नीचे किए वह महिला जल्दी -जल्दी खाने लगी और पानी भी खूब पी उसके बाद उसे राहत महसूस हुई. वह चहरे से वह कृतज्ञता प्रकट कर रही थी उसकी आँखों में धन्यवाद् का भाव गहरा भाव था.

छात्र जीवन में शिक्षक की सीख -डॉ ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

संकलनकर्ता- डॉ शिप्रा बेग

भूतपूर्व राष्ट्रपति (मिसाइल मैन) डॉ अब्दुल कलाम जी का जीवन सादगी और जिज्ञासाओं से भरपूर था. बचपन से ही प्रत्येक वस्तु के लिए उनके मन में जिज्ञासा रहती थी. उनकी आत्मकथात्मक पुस्तक "अग्नि की उड़ान " पढ़ी तो उनके प्रति आदर एवं श्रद्धा की भावना और भी बढ़ गई.उनकी आत्मकथा पढ़ना एक तीर्थयात्रा करने जैसा है.उसी पुस्तक में से एक बहुत सुंदर प्रसंग है जिसे छात्रों के साथ साझा करना चाहूँगी.

रामनाथपुरम के श्वार्ट्ज हाई स्कूल में मेरा मन लग जाने के बाद मेरे भीतर का पंद्रह साल का किशोर बाहर निकल पड़ा. वहाँ मेरे एक शिक्षक अयादुरै सोलोमन उन उत्सुक छात्रों के लिए आदर्श मार्गदर्शक थे जिन छात्रों के समक्ष उस समय संभावनाओं और विकल्पों की अनिश्चितता थी. श्री सोलोमन बहुत ही स्नेही और खुले दिमाग वाले व्यक्ति थे. हमेशा सभी छात्रों का उत्साह बढ़ाते थे. उनसे मेरे

संबंध गुरु -शिष्य से बढ़कर थे., उनके साथ रहते हुए मैंने जाना कि व्यक्ति खुद अपने जीवन की घटनाओं पर काफ़ी असर डाल सकता हैं.

उनका कहना था कि जीवन में सफल होने के लिए तीन प्रमुख ताकतों को समझना चाहिए इच्छा, आस्था, और उम्मीदें.

डॉ अब्दुल कलाम जी के लिए उनके शिक्षक श्री सोलोमन बहुत ही पूज़नीय थे. डॉ कलाम कहते हैं कि उन्होंने ही मुझे सीखाया कि मैं जो कुछ चाहता हूँ पहले उसके लिए तीव्र कामना करनी होगी. फिर वह निश्चित रूप से मुझे प्राप्त हो सकेंगी.

इसका मैं एक उदाहरण देता हूँ. बचपन से ही मैं आकाश औऱ पक्षियों के उड़ने के रहस्य के प्रति काफी आकर्षित रहता था. मैं सारस को समुद्र के ऊपर मँडराते ऊँची उड़ानें भरते देखा करता था. तब मैंने भी निश्चय किया कि एक दिन मैं भी आकाश में ऐसी ही उड़ानें भरूँगा,और वास्तव में कालांतर में उड़ान भरने वाला मैं रामेश्वरम का पहला बालक निकला.

शिक्षक श्री सोलोमन का यह कथन, मुझे सदैव प्रेरित करता रहता हैं---

"निष्ठा और विश्वास से तुम अपनी नियति बदल सकते हो."

संकलित - अग्नि की उड़ान (रामेश्वरम से राष्ट्रपति भवन की कहानी : डॉ कलाम की जुबानी)

एक रोटी

रचनाकार-जितेंद्र सिन्हा

एक रोटी की जुगत में घर छोड़ दिया हूँ,
न जाने क्यों अपनों को छोड़ दिया हूँ.
जा बसा था परदेश में ये सोच कर,
पकड़ लूँगा सारे सपने दौड़कर..
मेरे बच्चे बड़े शहर में रहकर
बन जाएंगे नवाब,
शायद यही सोच आगे बढ़ गया,
गाँव से मुँह मोड़कर
अपनों से सारे रिश्ते तोड़कर.

ये वक़्त न जाने कैसा आया ?
गाँव से ज्यादा शहर ने मुझे रुलाया..
कल तक इसी शहर की गलियों को मैंने चमकाया,
आज उन्हीं सड़कों ने मुझ पर कहर बरपाया.

मेरे नवाब के पैरों में छाले हैं,
आँखों में थकान के जाले हैं.
चलते- चलते बीवी का चेहरा काला पड़ रहा है,
भूख- प्यास से मेरा परिवार लड़ रहा है..

कब पहुँच पाऊँगा उस पीपल के पेड़ की छाँव में,
कब मिलेगा वो कुएं का पानी गाँव में..
बहुत तड़प रहा हूँ, बहुत रो रहा हूँ,
क्यों छोड़ा था अपने गाँव को ?
क्यों न रोका अपने पाँव को ?
जब हम न होते तो भी,
खा लेते बच्चे रोटी पड़ोस में,
आज झुलस रहा हूँ,
एक रोटी के लिए रोड़ में.

ऐ मिट्टी मेरी माँ मुझे माफ़ करना,
अब कभी शहर नहीं जाऊँगा,
कर तेरी जतन औरों को भी रोटी खिलाऊँगा..

श्रमिक

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

एक मई श्रमिक दिवस को,
श्रम दिवस स्वरूप है मनाया जाता.
आठ घण्टे काम करते हैं जो,
श्रमिक उन्हें है कहा जाता.
श्रम दिवस को,
श्रमिकों के काम से छुट्टी रुप में है जाना जाता.
समाज-देश को नव निर्माण का,
श्रमिकों के श्रम को श्रेय है जाता.
बड़े-बड़े भवनों की भव्यता,
पर हर कोई मोहित हो जाता.
ना है समय किसी के पास,

जो श्रमिकों के दर्द को है पूछ जाता.
इस दिवस पर,
श्रमिकों के श्रम का है सम्मान किया जाता.
मई दिवस है इन्हें समर्पित,
जिसके दम पर नव निर्माण है किया जाता.

कोरोना और पर्यावरण

रचनाकार- प्रियंका सिंह

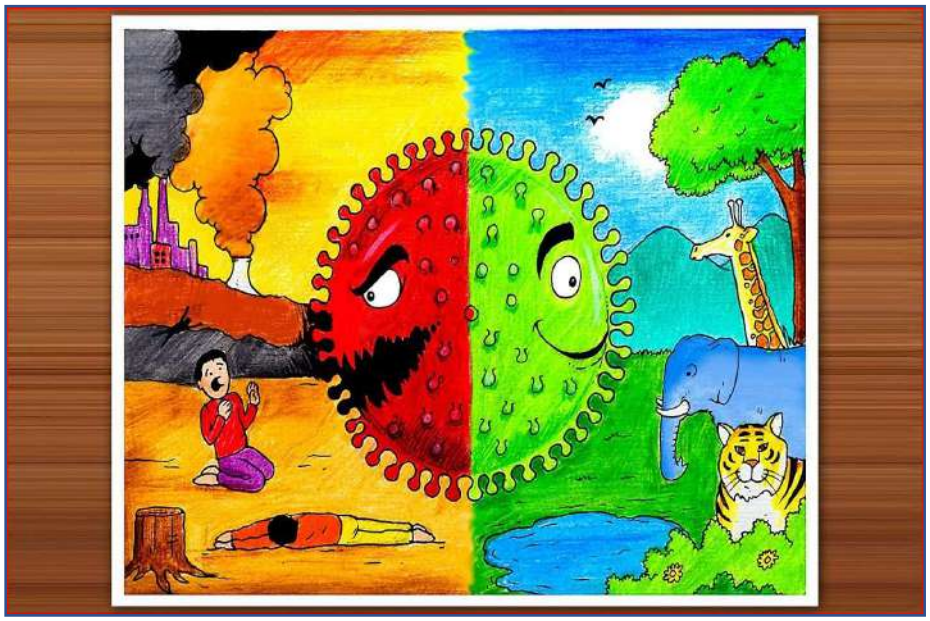

चीन के वुहान से आई कोरोना महामारी दुनिया में खूब आतंक मचा रही है.
फिर भी मुझे इसमें सकारात्मकता नजर आ रही है..
मानव ने ना दिखाई कभी मानवता, यह सोच प्रकृति पछता रही है.
फिर भी हम बच्चों को माफ कर प्रकृति वात्सल्य दिखा रही है..
अर्थव्यवस्था और शेयर बाजार औंधे मुंह गिरी जा रही है.
फिर भी मुझे इसमें सकारात्मकता नजर आ रही है..
वायु, ध्वनि और जल प्रदूषण में लगातार कमी आ रही है.
रुई जैसे सफेद बादलों की छटा सबके मन को लुभा रही है..
सुबह-सवेरे मोबाइल अलार्म नहीं पक्षियों की चहक सबको नींद से जगा रही है.
सड़के हैं वीरान ये बात मन को दुखा रही है..
फिर भी मुझे इसमें सकारात्मकता नजर आ रही है.
मंजर है साफ और चहुओर शांति नजर आ रही है..

लॉक डाउन में कैद है इंसान, प्रकृति मंद -मंद मुस्कुरा रही है.
फिर भी कर अपने बच्चों को माफ फिर से नवजीवन दिला रही है..
हे मानव! वक्त है ठहर कर सोच, प्रकृति आवाज लगा रही है.
कर ले अपनी जीवन शैली में कुछ बदलाव, तेरी रूह तुझे आजमा रही है..
कर लो प्रण! लॉकडाउन के खत्म होने के बाद भी पर्यावरण का रखोगे ख्याल.
तेरी करनी तुझे सबक सिखा रही है..
चीन के वुहान से आई कोरोना महामारी दुनिया में खूब आतंक मचा रही है.
फिर भी मुझे इसमें कुछ सकारात्मकता नजर आ रही है..

घड़ी रानी

रचनाकार- शुभम पांडेय गगन

टिक- टिक चलती रहती हो.
कभी न तुम थकती हो.
सुबह से शाम हो जाये.
आराम भी न करती हो.
सुबह -सुबह जगाती हो तुम.
रात में समय पर सुलाती हो.
हर घण्टे तुम टन- टन कर.
घण्टी भी बजाती हो.
तीन सुई हैं तुममें घड़ी रानी.
तीन चीज़ बतलाने को.
घण्टे मिनट औऱ सेकेंड के.
पूरा गणित समझाने को.
तुम सिखाती हो बढ़ना.
कर्तव्य का पालन करना.
ठंडी,गर्मी या हो बरसात.
कभी न पथ से विचलित होना.

शेखचिल्ली

रचनाकार- नीरज त्यागी

राम और अमर बचपन के बहुत अच्छे मित्र हैं. दोनों इस वक्त दसवीं कक्षा के विद्यार्थी है. एक दूसरे से हर बात कहते हैं. कोरोनावायरस संकट के समय जहाँ हर आदमी अपने-अपने घरों में रुका हुआ है और सिर्फ जरूरत के कामों से ही घर से बाहर जा रहा है. ऐसे दौर में भी अक्सर राम ने देखा कि अमर बिना मास्क लगाए घर से बाहर घूमता रहता है.

सब पाबन्दियों को नकारता हुआ वह अक्सर पार्क में सुबह और शाम घूमता नजर आता है. यहाँ तक कि अपनी रोज सुबह रनिंग करने की आदत के कारण पार्क में रोज रनिंग करने और योगा करने से भी बाज नहीं आ रहा है.

राम ने उसे बातों ही बातों में कई बार समझाया यार दौड़ते और योगा करने का समय तो आगे बहुत मिलेगा. लेकिन इस समय थोड़ी सावधानी रखनी चाहिए

और अपने घर में ही रहने की कोशिश करनी चाहिए| हो सके तो घर में रहकर ही योगा करो.

राम ने उसे समझाया कि केवल जरूरी काम से ही बाहर निकलो. अमर बचपन से बड़बोला किस्म का लड़का है. उसने बड़ी ही लापरवाही से राम को जवाब दिया "अरे यार कुछ नहीं होता मैं किसी से नहीं डरता. कोरोनावायरस मेंरा कुछ नहीं बिगड़ने वाला| तुम बहुत ज्यादा डरते हो.

धीरे-धीरे जब लॉक डाउन का समय समाप्त होने का समय आया तो अचानक शहर के कुछ हॉट स्पॉट जगह को सील करने की खबर आई. राम ने अब भी अमर को समझाया, मित्र अब तो बहुत ही सावधानी रखने की जरूरत है. माना कि हमारा एरिया सील नहीं हो रहा लेकिन हमारी कोशिश ऐसी होनी चाहिए कि उसको सील करने की नौबत ही ना आए.

फिर भी अमर ने राम की बात नहीं मानी उसका जवाब फिर वही था. अमर की लगातार इस तरीके की बातो से राम का भी मन को भटकने लगा. वह काफी समय से घर में पड़े-पड़े बहुत परेशान हो गया था.

उसने विचार बनाया कि वह भी अमर की तरह सुबह-सुबह घूमने जाएगा अमर भी राम की इस बात से बहुत खुश था और शाम को दोनों ने पार्क में घूमने का विचार बनाया. सब लोग अंदर थे लेकिन दोनों पार्क में घूमने पहुँच गये.

कुछ देर बाद राम को पुलिस की गाड़ी के हॉर्न की आवाज जोर-जोर से सुनाई पड़ने लगी. राम बिना अमर की तरफ ध्यान दिए धीरे-धीरे घूम रहा था. अचानक पार्क के अंदर पुलिस वाले आ गए और ठीक राम के सामने खड़े हो गए.

राम की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई. उसने देखा कि अमर बहुत तेजी से भागता हुआ पार्क के बाहर निकल गया. वह अब समझ गया कि एक शेखचिल्ली की बातों में आकर आज वह फंस गया है. राम खुले पार्क में पुलिस वालों के हाथों दंड स्वरूप अपनी गलती पर उठक-बैठक लगा रहा था. उसने अपने कान पकड़े और पुलिस वालों से माफी मांग कर अपने घर की तरफ चल पड़ा.

शिक्षक की पाती बच्चों के नाम

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

माँ-बाप की आज्ञा मानना
घरेलू कार्यों में तुम हाथ बंटाना
इधर-उधर तुम कहीं ना घूमना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

घर में समय का सदुपयोग करना
रोज सुबह तुम जल्दी उठना
घर पर योग तुम करते रहना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

स्कूल में जो पढे हो, उसे घर में दोहराते रहना
परीक्षा चाहे हो ना हो, अपना ज्ञान बढ़ाते रहना
ज्ञान तो अथाह सागर है, इसमें गोता लगाते रहना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

पढ़ते-पढ़ते कोई अंश, न समझ पाना
तुरंत मोबाइल से दीक्षा ऐप चलाना
अपनों से छोटों को एप से तुम पढ़ाना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

वक्त नाजुक है संभल कर रहना
स्वच्छ कपड़े पहनते रहना
घर को भी स्वच्छ तुम रखना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

अपनी कला को निखारते रहना
बड़ों से कुछ सीखते रहना
पेंटिंग और कलाकृति बनाते रहना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

बड़ों से गीत कहानी सुनते रहना
अपनी भाषा में उसे लिखते रहना
पठन कौशल को सफल बनाना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

ना किसी के घर जाना, ना किसी को घर बुलाना
ना किसी को गले लगाना, ना किसी से हाथ मिलाना
दूर से प्रणाम कर, अपना शिष्टाचार निभाना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

बार-बार चेहरा को मत छूते रहना
बीस सेकंड तक हाथ धोते रहना
बात करते समय एक मीटर की दूरी रखना
बच्चों तुम घर पर ही रहना..

Polythene

Poet- Tejesh Sahu

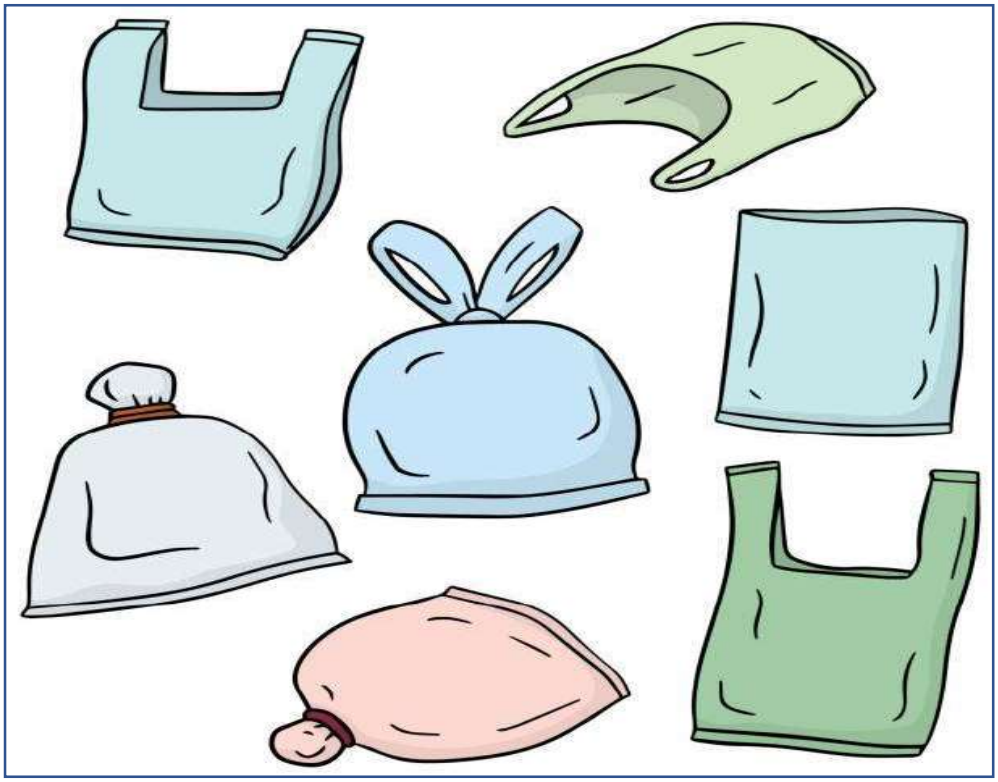

Polythene, Polythene,
You are the great,
You never rust,
And never biodegrade.
But when you cause pollution,
The humans have no solution.

You meet anyone anywhere,
But you never die forever.
You are very usable,
But not reusable,
You are currently in trend,
But you are not eco-friend.

So you are useful,
But also as harmful.
If humans understand it,
That if they do not recycle you,
Then they cannot be fit and live for long,
One day maybe it become true.

स्कूल चलें

रचनाकार- अविनाश तिवारी

आओ चलें सुनहरा सबेरा
बाट हमारी जोह रहा है,
स्कूल की बजता टन-टन घण्टा
कान में मिश्री घोल रहा है..

गढ़ना है भविष्य अपना
कलम हमारा हथियार है
दूर करें अज्ञानता अंधेरा
विद्या अनमोल उपहार है..

आओ कदम बढ़ाएं अपना
क्यों बैठे अलसाते हो
शीला गुड्डी मुन्ना बाबा
छुप-छुप क्यों मुस्काते हो..

पाठ पढ़ेंगे जीवन का
शिक्षा हमारा अधिकार है
बिन ज्ञान के चारों ओर
देखो घोर अंधियार है..

आओ चलें स्कूल को
पढ़ना और गढ़ना है
ज्ञान का दीपक जल उठा है
आगे -आगे बढ़ना है..

देश सेवा करने चले मजदूर

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

देश सेवा करने को चल पड़े हैं मजदूर.
दो वक्त रोटी के खातिर हो जाते हैं घर से दूर.
हाथ में थैला, कांधे में है भरा सामान.
परिवार संग साथ लेकर चल पड़े अरमान.
जहाँ मिले काम और मजदूरी वहीं देते हैं तंबू तान.
लग जाते है सब सेवा में क्या बच्चे और क्या सियान.
सुबह होते ही रहता है मन में एक ही ध्यान.
रूखी-सुखी रोटी खाकर करते हैं वे अपना काम.
साहेब लोगों का हमेशा चुप कर सुनते है डांट.
सब कुछ परिवार संग लेते हैं वे बांट.
फावड़ा, बेलचा धर करते नित दिन काम.

सूर्योदय से सूर्यास्त तक कभी न करते ये आराम.
खाना बनाने को न चूल्हा है न बर्तन.
इनको चिंता सताए कैसे करें परिवार का जतन.
कभी न थकते इनके चाहे पैरों में पड़ जाए छाले.
कमाकर रोटी खाते फिर भी पड़ते है इनको लाले.
सुन चिड़ियों की करलव अब हो गई नई बिहान.
सब मिलकर काम करेंगे तभी बनेगा देश महान.

सादा जीवन उच्च विचार

संकलनकर्ता - डॉ शिप्रा बेग

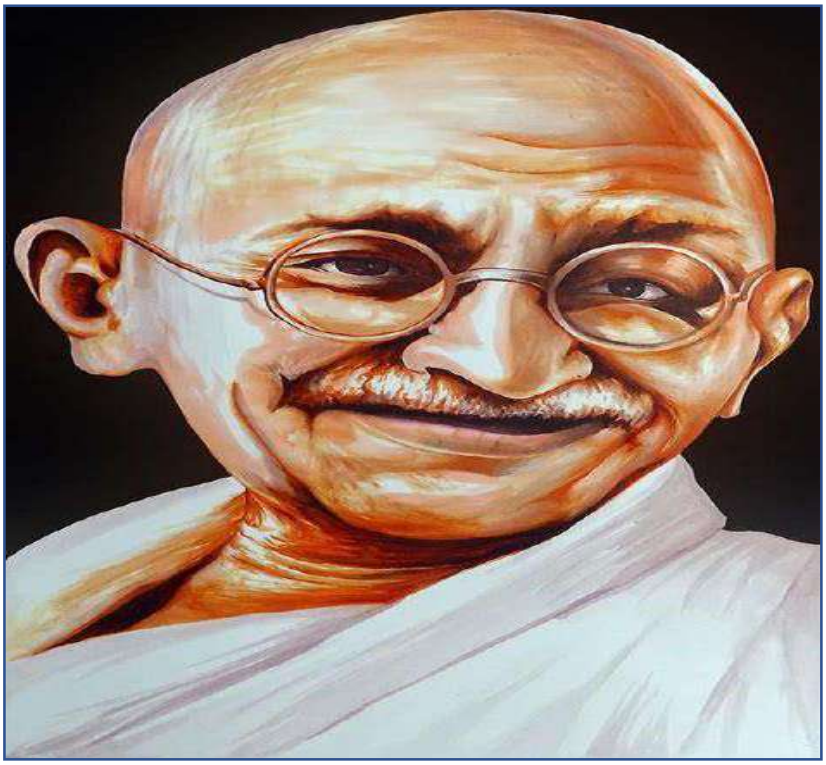

महात्मा गांधी जी ने अपने जीवन में सदैव 'सादा जीवन और उच्च विचार' को ही सर्वोपरी रखा. परन्तु गाँधी जी के जीवन में जो बदलाव आया,उसके पीछे भी एक रोचक प्रसंग हैं. बैरिस्टर बनने, कानून की पढ़ाई करने गाँधी जी जब इंग्लैंड जाते हैं तो,उनको सभ्य बनने की सनक सवार हुई. उन्होंने सोच लिया कि, किसी भी दृष्टि से वे अंग्रेजों के सामने अपने आप को असभ्य सिध्द नहीं होने देंगे. अतः उन्होंने अंग्रेजी सूट सिलवाया हैट ली, ईवनिंग सूट तैयार करवाया,टाई बाँधने की कला सीखी. आईने के सामने खड़े होकर टाई की 'नॉट' बाँधने और बालों को कंघी से साधने के अभ्यास शुरु हो गये. उन्होंने सोचा सभ्य आदमी को नाचना भी अवश्य आना चाहिए. अतः उन्होंने डांस भी सीखा. रोजाना कई - कई घण्टे बनने संवरने में गुजर जाते.

मगर एक दिन उन्होंने सोचा कि, वे यहाँ क्या करने आये हैं और किस दिखावे में उलझ गए. उन्हें अपने बड़े भाई की स्थिति का खयाल आया कि, किस प्रकार दुःख उठा कर उन्होंने मुझे बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए विदेश भेजा और वे उनके पैसे को यूँ ही उड़ा रहे हैं. सभ्य बनने के लिए कीमती वस्त्र और बनावटी चीजों की आवश्यकता नहीं होती हैं. उन्हें अपनी शिक्षा की तरफ ध्यान देना चाहिए. अतः उन्होंने सभी बनावटी चीजो को तिलांजली दे दी.

अब वे अपना सारा समय पढ़ाई में और बचे हुए समय में विदेशी भाषाओं को सीखने का निर्णय लिया. यहीं गाँधी जी को मितव्ययिता की आदत पड़ी. अब उनका जीवन एकदम सादा और सहज हो गया. सादगी ने उच्च विचारों को जन्म दिया. और अब उनकी दृष्टि लक्ष्य पर टिक गई. इसी सन्दर्भ में गाँधी जी का कथन था कि, " कोई यह न समझे कि सादगी से मेंरा जीवन नीरस बन गया था. सच तो यह है कि,इससे मेंरे भीतर औऱ बाहर के जीवन में समरसता आ गई थी. यह संतोष भी था कि, मैं अपने परिवार पर अधिक बोझ नहीं डाल रहा हूँ. मेंरे जीवन में अधिक सच्चाई आ गई. मेंरी आत्मा में आनंद लहराने लगा. "

बदलते परिवेश में

रचनाकार- सावित्री यादव "सावि"

आम की बौरैया अब नहीं दिखती.
कुएँ पर गगरिया अब नहीं दिखती.
लहलहाते खेतों की पहली वाली रौनक नहीं दिखती.
हाँ बदलते परिवेश में,

मानवता की खुशबू अब नहीं आती.
मतलब का चादर ओढ़े दिखावे का
मुखौटा लगाए ये लोग.
लोगो में इंसानियत अब नहीं दिखती।
हाँ बदलते परिवेश में,

रिश्तों में गर्माहट अब नहीं होती.
चिडियो की चहचहाट अब नहीं आती.
मिट्टी में सोंधी खुशबू अब नहीं होती.
हाँ बदलते परिवेश में,

अपनों के साथ अपनों सी चाहत नहीं होती
संयुक्त परिवार की गरिमा अब नहीं दिखती.
सब मोह के पीछे हैं मोक्ष की चाहत अब नहीं दिखती
हाँ बदलते परिवेश में,

बच्चों की चाँद तारों की कहानियाँ अब नहीं होती.
मानवता में संस्कारों की सीख अब नहीं होती.
हाँ बदलते परिवेश में

महामानव को नमन्

रचनाकार- प्रेमचंद साव "प्रेम"

जीवनभर समानता के लिए,
संघर्ष करने वाले बाबा को नमन्.
ज्ञान के प्रतीक,प्रकाण्ड विद्वान,
विश्व प्रणेता,संविधान शिल्पकार को नमन्..
विपुल प्रतिभा व ज्ञान के धनी,
जातिगत भेदभाव को जिसने दूर किया.
सामाजिक अव्यवस्था को दूरकर,
असमानता व भेदभाव को दूर किया..
शिक्षा,सार्वजनिक स्वच्छता पर,
जिसने महत्वपूर्ण कार्य किया.
मानवतावाद,सत्य,अहिंसा,
भाईचारा का मार्ग प्रशस्त किया..
दूरदृष्टि व समय के आगे की,
सोच की झलक दिखलाया.

लोगों में चेतना की लहर,
दौड़ाने के उद्देश्य में कामयाबी दिलाया..
देश को सामाजिक न्याय,एकता का राह दिखाया.
समाजहित में सदैव कार्य कर समृद्ध बनाया..
बेजुबान,शोषित,अशिक्षित लोगों को जागृत किये.
समता,बंधुत्व का कार्यकर महामानव कहलाये..

चरित्रवान बालक

रचनाकार- खेमराज साहू

एक रात जब छत्रपति शिवाजी सो रहे थे तब एक बालक ने प्रहार करने का प्रयास किया, परंतु उसे सेनापति तानाजी ने पकड़ लिया. बाद में शिवाजी ने उससे पूछा- "तुम कौन हो और यहाँ क्यों आए थे?" बालक ने उत्तर दिया- "मेंरा नाम मालोजी है और मैं आपकी हत्या करने के लिए यहाँ आया था." शिवाजी ने पूछा- "तुम मेंरी हत्या क्यों करना चाहते हो?" बालक बोला- "मेंरे पिता आपकी सेना में एक सैनिक थे. उनके युद्ध में मारे जाने पर हमें राज्य की ओर से कोई भी सहायता नहीं मिली. घर में अनाज नहीं था. माँ तो कई दिनों से बीमार पड़ी है. मैं भोजन की तलाश में घर से निकला था कि आपके शत्रु सुभागराय ने मुझे बताया कि शिवाजी कितना निष्ठुर है. तुम्हारे पिता के मृत्यु के उपरांत उसने तुम्हारा तनिक भी ध्यान नहीं रखा, इसलिए तुम्हें शिवाजी से बदला लेना चाहिए. यदि तुम उन्हें मार आओगे, तो मैं तुम्हें बहुत सारा धन दूंगा. इसलिए मैं आपको मारने आया."

तानाजी ने कहा-- "दुष्ट ! अब तू अपने दुष्कृत्य हेतु मरने के लिए तैयार हो जा. "बालक ने कहा --"मृत्यु से मैं बिलकुल भी नहीं डरता, परंतु मैं एक बार अपनी मरणासन्न माँ के दर्शन करने जाना चाहता हूँ. मैं वचन देता हूँ कि कल प्रात: लौट आऊंगा. " महाराज ने आज्ञा दे दी. दूसरे दिन सवेरे बालक दरबार में उपस्थित होकर बोला -- " महाराज ! मैं अब मृत्युदंड के लिए तैयार हूँ. " शिवाजी का दिल पिघल गया. उन्होंने कहा -- " ऐसे चरित्रवान बालक को मैं मृत्युदंड न दे सकूंगा. मालो! तेरे जैसे रत्न ही देश व जाति का गौरव बढ़ा सकते है. " शिवाजी ने उसे सेना में नौकरी दे दी.

कठिन डगर

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन माटी

कठिन डगर है ये जीवन का, कभी नहीं घबराना जी.
संकट में है देश हमारा, सबको जोश दिलाना जी..

कोरोना का वायरस देखो, कैसे चलकर आया है.
दिखे नहीं यह सूक्ष्म जीव पर, दुनियाभर में छाया है..

साफ सफाई रखना सीखो, भीड़-भाड़ मत जाना जी.
कठिन डगर है ये जीवन का, कभी नहीं घबराना जी..

बंद हुए सब घर के अंदर, ये कैसा दिन आया है.
काम-धाम सब बंद पड़े हैं, कितने संकट लाया है..

आयेगा अब नया सवेरा, हिम्मत सभी दिलाना जी.
कठिन डगर है ये जीवन का, कभी नहीं घबराना जी.

जीने के लिए राह दिखाता हूँ

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

जीने के लिये राह दिखाता हूँ,
बच्चों को सच्चा मार्ग बताता हूँ.
तराशता हूँ हीरे की तरह उन्हें,
असली डगर पर चलना सिखाता हूँ.

बच्चों को अच्छा इंसान बनाता हूँ,
मुश्किलों से लड़ना सिखाता हूँ.,
जिंदगी की हर राह में बच्चे,
आगे बढ़ना खूब सिखाता हूँ.

बच्चों में नव ज्योति जलाता हूँ,
राष्ट्र का निर्माण कराता हूँ.
यही है मेंरी कहानी साथियों,
समाज का उत्थान कराता हूँ.

Books True friend

Poet-Manoj Kumar Patnwar

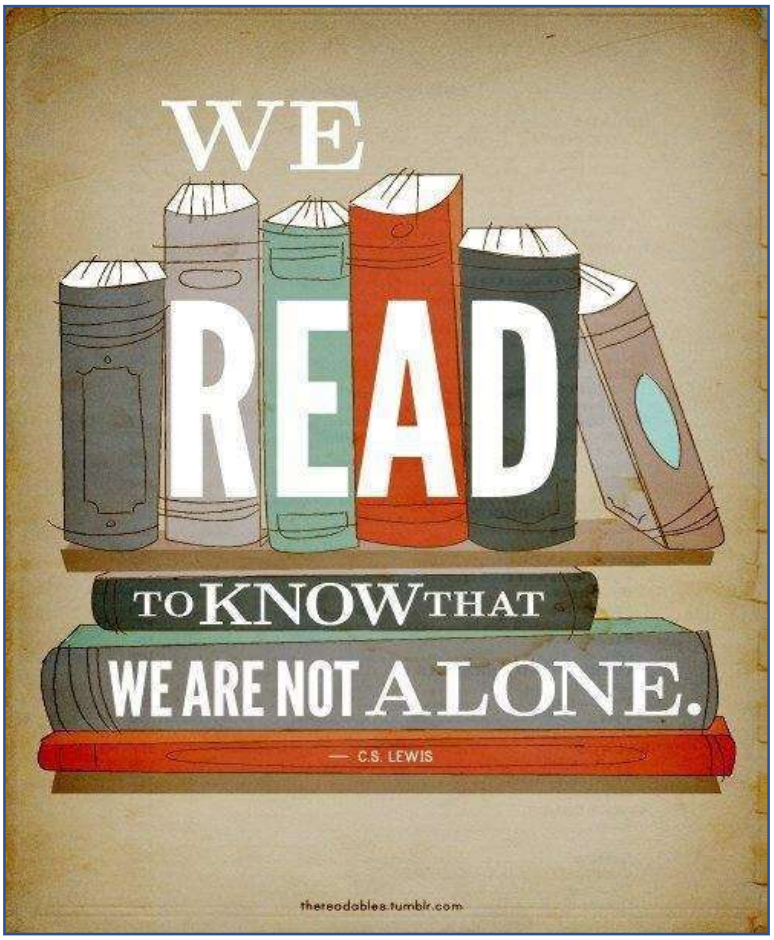

There should be every man, addict to books.
Who added not relate to it, called them ignorant
That's why the books should be read

Read a story with the creation of prose, verse
Poet, author, writer, the same knowledge
That's why the books should be read

Deeds, the religion things, be read Gita
Read Lakshmi books, Bundelo of Munhazubani
That's why the books should be read

reading geography, science, round the world, we did
We recognize the rotation, speed of the Earth, the experiments
That's why the books should be read

Known books, Wani language mythology of the Vedas
Gita, Bible, and a sign of the Koran scriptures
That's why the books should be read.

You do not know the books arbitrary
Cross ferry life texts, Saints matured
That's why the books should be read

Books you read, the excursion tourists
Should befall books, childhood, old age and youth
That's why the book should be read

Books from time to time, should exhibit
Read the book to remain, there is life pleasant
That's why the books should be read

A book then, Dasher diverse arts
Consists of knowledge of books, people subhashini
That's why the book should be read

See the book, to the histories
Shows the reading, fill in the Warriors
That's why the books should be read

असर ये भी क्या खूब हुआ

रचनाकार- पुष्पा कुमारी सुमन

असर ये भी क्या ख़ूब हुआ!
दुश्मन भी मर रहें तो निकल रही है दुआ..
आज खुला वो खजाना जो बरसों से था बंद पड़ा हुआ.
शायद...इसी दिन के लिए एक अमीर तो एक गरीब हुआ.
तड़पती अतृप्त आत्मा के लिए कोई यहाँ देवदूत हुआ.
मंदिर,मस्जिद,गुरूद्वारा के भी पट आज बंद हुआ.
हर आत्मा में परमात्मा का जा के अब दर्शन हुआ..
दान अब भगवान भी नहीं ले रहे अब अनाजों का वितरण हुआ.
कौन कितना शपथ ग्रहण कर किकर्तव्यमूढ हुआ !
बग़ैर अपनी परवाह के भी कर्तव्य पथ पर जो अग्रसर हुआ..
मनसावाचाकर्मणा से मानवता संपूर्ण हुआ.
मानव अपनी मुट्ठियों में सारा जहान भींच रहा था !
कैदी बन कर कैद का अनूठा उसे अनुभव हुआ !!
युगांतकारी क्रांति का आधार आज एक प्रलय बना है.
मानव से प्रकृति की जंग का ये आग़ाज़ हुआ है.
घर की चार दिवारी भी अब बनी प्रयोगशाला है.

जो दबी पड़ी थी सारी खूबियाँ, पुनः उनको उबारा है.
कुछ दिनों की दुर्दशा ने दूरियाँ भले बढ़ा दी है!
जो संभलें तो पुनर्मिलन होगा यही अब भाग्य हमारा है.
धुली-धुली चहूं दिशा है महकी निर्मल हुआ नदी नाला है.
सोच बदलने का अवसर मिला सार्थक मानव जीवन हुआ हमारा है..

कोरोना

रचनाकार- हर्षिता यदुराज

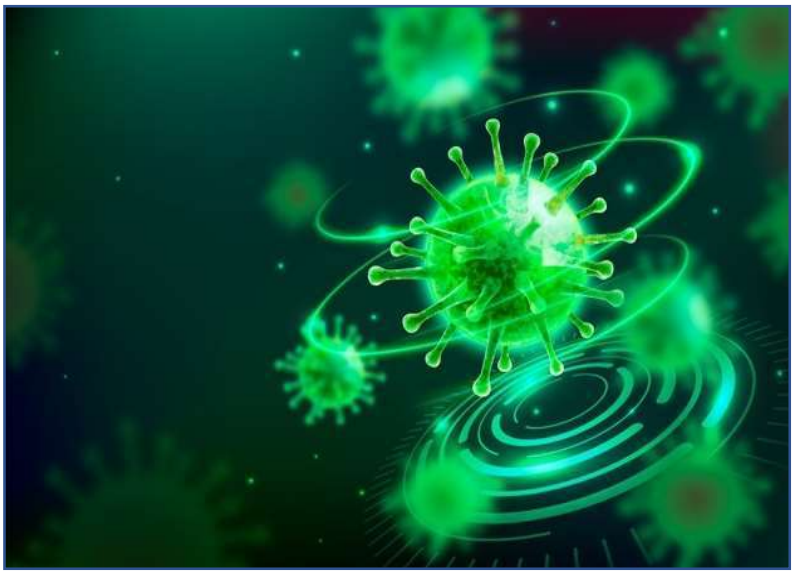

मेरा परिवार कोरोना से सुरक्षित है.
जीवन कोरोनाकाल मे असुरक्षित है,
आज चीनी वस्तुओं से परहेज़ है.
मैं हृषिता कोरोना दूर भगाऊंगी.
हाथ धो बीस सेकंड तक,
सोशल डिसटेंसिंग का पाठ पढ़ाऊंगी..
संसार को कोरोना मुक्त करने में,
इस तरह सहयोग कर पाऊँगी.
मैं हृषिता यदुराज प्रण करती हूँ,
अपने भारत देश का मान बढ़ाऊंगी...
कोरोना को भगाऊंगी.....
कोरोना भगाऊंगी.....

सबसे अच्छा कौन

रचनाकार- शीला गुरुगोस्वामी

सुग्गी आज बहुत गुस्से में थी. उसने अपनी सहेली को एक बहुत ही सुंदर फ्रॉक पहने हुए देखा था.

सुग्गी यों तो पढ़ने में तेज थी पर वह किसी और को अच्छा बनते नहीं देख सकती थी. उसे लगता दुनिया में वही सबसे अच्छी है और सारी अच्छी चीजें उसी के लिए है.

घर में उसके माता-पिता,भाई-बहन सभी उसकी इस आदत से परेशान थे. एक बार सुग्गी की तबियत खराब हो गई. उसे तेज बुखार हो गया था. माँ ने

उसे दवा पिलाई फिर उसकी बहन से कहा कि वह सुग्गी का ख्याल रखे. तभी सुग्गी की सहेली नया फ्रॉक पहन कर उससे मिलने चली आई. बस फिर क्या था सुग्गी का दिमाग चढ़ गया. उसने अपनी सहेली से बात नहीं की.
एक हफ्ते तक सुग्गी स्कूल न जा सकी. परीक्षा भी नज़दीक थी. उसकी कॉपियाँ पूरी नहीं हुई थी. वह अध्याय भी नहीं समझ पाई थी. जब सुग्गी स्कूल पहुँची तब मैडम सभी बच्चों से रिवीजन करा रही थी. सुग्गी कुछ भी बता नहीं पा रही थी. तभी उसने देखा उसकी दोस्त आई और उसने अपनी कॉपी सुग्गी के सामने रख दिया और सुग्गी के कॉपी में नोट्स उतारने लगी.
दो दिन में ही सहेली ने सुग्गी के कॉपी में सभी नोट्स को पूरी कर दी.
परीक्षा हुई तो सुग्गी अच्छे नम्बरों से पास हुई. उसने अपनी सहेली को गले से लगा लिया. उसे समझ आ गया कि मित्र और मित्रता के प्रति सम्मान भाव रखना कितना बड़ा गुण है.
अब सुग्गी अपने सभी मित्रों के साथ बड़ी ख़ुशी से रहती थी और सभी के साथ सामान व्यवहार रखने लगी.

कोरोना के कहर

रचनाकार- तुलस राम चंद्राकर

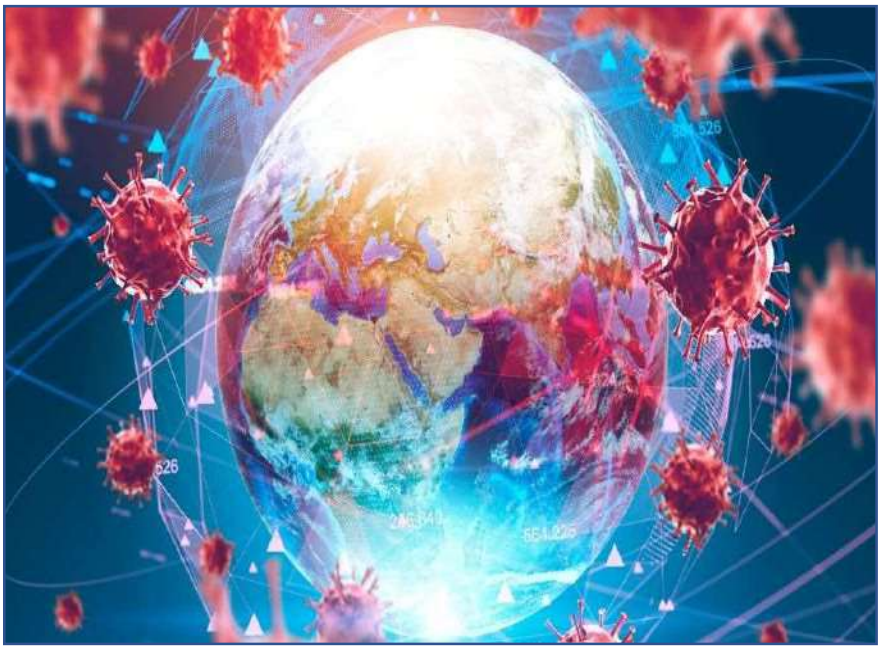

कोरोना आगे कोरोना आगे,
देश दुनिया म एहर छागे.

सरदी- खासी बुखार संग,
लगथे टोटा भारी -भारी.
माथ म पीरा, सास के फूलन,
एही ह ऐखर चिनहारी.
मुंह, नाक, छुए म समागे
अइसन का बीमारी आगे.
कोरोना आगे.....

घर ले बाहिर नई जाना हे,
न कखरो संग हाथ मिलाना हे.
साबुन से हाथ धोना हे,
करोना ल दुर -दुर भगाना हे.
मनखे के चेहरा मुरझागे,
अइसन का बीमारी आगे.
कोरोना आगे.....

बीमारी ल पाए बर काबु,
लाकडाउन होइसे लागु.
तभो ले जनता नई होथे काबु,
तभे कोरोना होवत हे बेकाबु.
बड़े-बड़े के चेत हरागे
अइसन का बीमारी आगे.
कोरोना आगे.....

छत्तीसगढ़ की बेटी हूँ मैं

रचनाकार- रीता चटर्जी

छत्तीसगढ़ की बेटी हूँ मैं,
प्रतिदिन शाला जाती हूँ.
नई -नई क़िताबे पाकर,
फूली नहीं समाती हूँ.

रंग-बिरंगी मेरी शाला,
देखकर मैं इतराती हूँ.
प्यारी- प्यारी मेरी सहेलियाँ,
जिन संग मैं समय बिताती हूँ.

मैडम मेरी गीत सुनाती,
संग-संग मैं गुनगुनाती हूँ.
सर जी मेरे देते सवाल,
झटपट हल कर दिखाती हूँ.

खुब पढ़ूँगी, आगे बढ़ूँगी,
मन में विश्वास रखती हूँ.
ज्ञान की ज्योति न बुझेगी,
यही प्रतिज्ञा मैं करती हूँ.

मीठी रसदार जलेबी

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित 'मलय'

हर मौसम की बहार जलेबी.
मीठी, बहुत रसदार जलेबी..

मिठाइयों की है रानी यह.
मानती कभी न हार जलेबी..

नाच रही घी में छन छना छन.
शीरा पिये हर बार जलेबी..

बालक, बूढ़े, मजदूर, किसान.
सबके हृदय का प्यार जलेबी..

लड्डू-पेड़ों की रौनक फीकी.
स्वाद बहुत सरदार जलेबी..

धनी-निर्धन का भेद न करती.
सबकी मनमीत-यार जलेबी..

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम में.
सबको सुखद स्वीकार जलेबी..

नंदा मैडम की क्लास

उस रात नंदा को देर तक नींद नहीं आई. वह दूसरे दिन होने वाली कक्षा पर लगातार सोचती रही. उसके दिमाग में दो-तीन सवाल थे. पहला तो यही कि कक्षा में गणित की शुरुआत करने की जो पारंपरिक प्रक्रिया है, उसमें संख्याओं के पहले की अवधारणाओं पर काम करने की आवश्यकता को कैसे जगह दी जाए.दूसरी बात यह कि इसे कक्षा प्रक्रिया के रूप में कैसे संचालित किया जाए, जिससे सभी बच्चों को बराबर मौके मिलें. वे सोचें भी, आपस में विमर्श भी करें और किसी परिणाम तक खुद पहुंचने की कोशिश भी करें.

इन दोनों बातों के अलावा नंदा यह भी सोच रही थी यह काम सुधा, हरप्रीत और एहसान सर खुद भी करें. सोने के पहले उसने अपनी योजना का एक खाका बना लिया और इन बातों को अपनी डायरी में लिख लिया.

सुबह वह बहुत जल्दी स्कूल पहुंच गई. वहां पहुंचकर अपने कबाड़ वाले थैले से उसने छांट-छांटकर कुछ-कुछ चीजें निकाल लीं. यह वे वस्तुएं थीं जिनका उपयोग

वह अपने शिक्षण में अक्सर किया करती थी. उसने मोटे कागज की पतली-पतली पट्टियों पर कुछ गतिविधियों के नाम लिखे और उन्हें लेकर कक्षा में आई. दीवारोंऔर जमीन पर एक-एक, दो- दो पट्टियों को टेप से चिपका दिया. हर गतिविधि के लिए जिन-जिन चीजों की जरूरत थी, उन्हें अलग-अलग थैलियों में रख लिया. इतनी तैयारी होते तक अभी स्कूल में कोई नहीं आया था. प्रार्थना होने में अभी काफी समय था. इस बीच नंदा ने अपने तीनों साथियों को काम बांटने की योजना भी मन ही मन बना ली.

थोड़ी ही देर में सुधा, एहसान और हरप्रीत एक-एक कर स्कूल पहुंच गए. नंदा ने मुस्कराकर सभी का स्वागत किया. सभी जाकर प्रधान पाठक के कमरे में बैठ गए. एहसान ने इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए पूछा, नंदा आज कुछ खास बात है क्या? तुम बड़ी जल्दी आ गई हो. यहां तो बड़ी तैयारियां दिखाई पड़ रही हैं.

नंदा दो पल चुप रही. फिर उसने कहा, सर कल संख्याओं को लेकर जो बातें हम कर रहे थे, उस पर ही एक शुरुआत मैं करना चाहती हूं. इसे लेकर कर मेरे दिमाग में जो योजना है वह मैं बताना चाहूंगी, यदि आपकी अनुमति हो. नंदा, तुम्हें अनुमति की जरूरत नहीं है. मुझे यकीन है तुम जो करोगी, अच्छा करोगी. बताओ तुमने क्या सोचा है. सर, मैंने सोचा है कक्षा एक और दो के बच्चों के साथ हम ऐसी गतिविधियां करेंगे जो संख्याओं की औपचारिक शुरुआत के पहले की जाना चाहिए. इससे हम सभी उस क्रम को समझ सकेंगे जिससे संख्याओं को समझने में मदद मिलती है. हम शायद उस फर्क को भी देख पाएं जो इस तरीके से आगे बढ़ने पर बच्चों में आता है. नंदा ने कहा.

सुधा ने पूछा, नंदा इस काम में कौन-कौन शामिल होंगे?

सुधा, मैं सोचती हूं तुम, मैं और प्रीत कक्षा एक और दो के बच्चों को साथ-साथ लेकर काम करें. कक्षा तीन, चार और पांच के बच्चों को एहसान सर संभाल लें.

वो तो ठीक है नंदा, लेकिन तीन अलग-अलग कक्षाओं के बच्चों के साथ मैं कौन सा काम करूंगा. एहसान ने पूछा.

सर, मैंने यह भी सोच रखा है. कक्षा चार और पांच स्तर पर गणित में एक अवधारणा है जिसमें यह समझने के मौके हैं कि कोई एक वस्तु अलग-अलग कोण से देखने पर अलग- अलग दिखाई पड़ती है. नंदा ने एहसान को आश्वस्त करते हुए कहा.

हरप्रीत जो अब तक चुप थी बोल पड़ी, क्या यह भी गणित का हिस्सा है?

इसका जवाब सुधा ने दिया. हां प्रीत, गणित माने केवल संख्या और संक्रियाएं भर नहीं है. इनसे परे भी बहुत सी बातें गणित में समाई हुई हैं.

अच्छा. हरप्रीत ने धीरे से कहा.

एहसान ने नंदा की ओर देखते हुए कहा, ठीक है नंदा, मैं गणित की पुस्तकों से इसे समझने की कोशिश करता हूं. यह भी सोचता हूं कि एक साथ तीन कक्षाओं के बच्चों के साथ इसे कैसे करना चाहिए.और हां, मैं थोड़ा अलग बैठ कर काम करता हूं. तुम तीनों यहीं बैठो.

ऐसा कहते हुए एहसान वहां से उठकर कक्षा तीन की ओर चले गए.

उनके जाने के बाद सुधा ने कहा, एहसान सर जैसे सहयोग करने वाले प्रधान पाठक कम ही होंगे. देखा नंदा, तुमने जो काम उन्हें सुझाया, उस पर तुरंत राजी हो गए. कोई और होता तो नाराज हो जाता. कहता, अपने सीनियर को काम बताते हो.

और हां, उन्होंने पूछा भी नहीं कि मुझे करना कैसे होगा, यह नया टॉपिक है कैसा. खुद से समझने के लिए भी तैयार हो गए. काम सीखने और नया करने की इच्छा ही उन्हें बड़ा बना देती है. हरप्रीत ने अहसान की प्रशंसा करते हुए कहा.

तुम दोनों की बातें बिल्कुल सही हैं. इन्हीं के सहयोग से हम कुछ नया कर पाते हैं. कोई और होता तो शायद कह देता यह सब प्रयोग हटाओ. इससे स्कूल की व्यवस्था बिगड़ती है. नंदा ने कहा.

सुधा, अब हमें कक्षा एक और दो में क्या-क्या करना है, कैसे करना है इस पर नंदा से थोड़ी बात कर लेनी चाहिए. ठीक है ना नंदा ?

आज हम जो कुछ शुरू करने जा रहे हैं वह संख्या के पहले की जरूरी अवधारणाएं हैं. इसमें हम पांच - छह तरह के काम करेंगे, जैसे चीजों को क्रम से जमाना, ढेर में से चीजों को छांटना या किसी खास गुण के आधार पर एक जैसी चीजों को साथ-साथ रखना, किसी खास क्रम में रखी चीजों के क्रम को आगे बढ़ाना, जोड़ी मिलाना वगैरह-वगैरह.

बाप रे बाप! इतना सारा काम एक साथ ?

यह कैसे होगा नंदा और यह हम क्यों कर रहे हैं. हरप्रीत ने थोड़ा परेशान होते हुए कहा.

मेरी प्यारी प्रीत, तुम बहुत जल्दी घबरा जाती हो. पर तुमने जो सवाल किए हैं वे बहुत ही बढ़िया और जरूरी सवाल हैं. हर टीचर के दिमाग में यह बात बिल्कुल साफ होनी चाहिए कि वह क्लास में क्या करेगी और क्यों करेगी. इन दोनों सवालों से फिर एक नया सवाल जन्म लेना चाहिए, इसे करूंगी कैसे.

सुधा ने नंदा की बात को आगे बढ़ते हुए कहा, इस काम को हम मिलकर करेंगे प्रीत. और तुम्हारे क्यों वाले सवाल पर ही तो कल इतनी लंबी चर्चा हुई थी. पर अभी इतना फिर से कह देती हूं कि बच्चों को संख्याओं के अनुभवों से जोड़ने के पहले उन्हें कुछ और अनुभवों से गुजरने देना चाहिए. ये अनुभव संख्याओं तक पहुंचने की सीढ़ियां हैं, ऐसा समझ लो.

नंदा ने सुधा की बात का समर्थन करते हुए कहा, कोई बच्चा स्कूल आने और संख्या सीखने के पहले अनौपचारिक रूप से ऐसे अनुभवों से बार-बार गुजरता है.

एक उदाहरण देती हूं, तुमने कभी दो-तीन साल की बच्ची को खिलौनों के ढेर के साथ काम करते देखा होगा. क्या वह अपनी पसंद की चीजों को अलग कर पाती है? एक दूसरे उदाहरण पर सोचें, मानलो किसी घर के बाहर बहुत से बच्चों के

जूते-चप्पल बिखरे पड़े हैं और एक बच्ची उनमें से अपनी चप्पलों को ढूंढने की कोशिश कर रही है, क्याउम्मीद करती हो?

हां, मुझे लगता है कोई तीन साल की बच्ची यह काम आसानी से कर लेगी. हरप्रीत ने कहा.

अब सोचो ऐसा करते समय उस बच्ची के दिमाग में क्या चल रहा होगा? कौन से पैरामीटर या मानदंड होंगे जिनका उपयोग बच्ची अपनी चप्पल पहचानने के लिए कर रही होगी?

सुधा ने कहा, मुझे ऐसा लगता है नंदा, हम इंसानों में कई गुण नैसर्गिक रूप से मौजूद होते हैं. मां- बाप या शिक्षक के रूप में हम बच्चों में उन गुणों या क्षमताओं को और मजबूत करने के मौके बनाते हैं.

हां सुधा, बहुत अच्छी बात कही तुमने. एक शिक्षक के रूप में हमें ठीक ठीक समझने की जरूरत होती है कि कब किस चीज पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए.

अब अगर हम कक्षा में चलें तो वहीं बता पाऊंगी हमें काम कैसे करना है.

प्रधान पाठक के कक्ष से निकलकर तीनों उस कमरे में आ गईं जहां पहली कक्षा बैठती थी. वहां नंदा ने कुछ देर पहले ही गतिविधियों के नाम वाली पट्टियां चिपका रखी थीं. कुछ पट्टियां फर्श पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चिपकी हुई थीं. हरप्रीत ने देखा कुल नौ गतिविधियों के लिए जगहें निर्धारित की गई थीं. हर जगह पर नंदा ने एक-एक थैली रख दी थी जिसमें उस गतिविधि के लिए कुछ-कुछ चीजें रखी हुई थीं.

सुधा ने देखा एक पट्टी पर लिखा था, दाईं मुट्ठी-बाईं मुट्ठी. उसने उसके पास रखी थैली खोली. उसमें इमली के बहुत से बीज रखे हुए थे. उसे कुछ समझ में नहीं आया. उसने नंदा की ओर देखा. नंदा मुस्कराई और बोली मैं हर गतिविधि के बारे में बताऊंगी, चिंता मत करो. फिलहाल इतना बता दूं कि इस गतिविधि में एक बच्चा अपनी बाईं और दाईं दोनों मुट्ठियों में एक-एक मुट्ठी बीज

निकालकर फर्श पर अलग-अलग रखेगा. फिर उसके समूह के बच्चे मिलकर दोनों ढेरियों से एक एक बीज निकाल कर जोड़ियां बनाते जाएंगे. अंत में देखेंगे क्या किसी ढेरी में बीज बच गए.यदि हां, तो बताएंगे किस मुट्ठी में ज्यादा बीज आए, किसमें कम. यदि किसी ढेरी में बीज नहीं बचे तो कहेंगे, दोनों ढेरियों में बराबर-बराबर बीज थे.

हमारी भूमिका क्या होगी नंदा? हरप्रीत ने पूछा.

प्रीत, अभी हमने नौ गतिविधियां रखी हैं इसलिए बच्चों के नौ ग्रुप्स होंगे. हर ग्रुप में कक्षा एक और दो के बच्चे मिले-जुले रहेंगे.

हम तीनों, तीन-तीन ग्रुप के बच्चों के साथ काम करेंगी. बच्चों को एक गतिविधि करने में पंद्रह से बीस मिनट लगेंगे. इसके बाद हर ग्रुप अपने आगे वाले ग्रुप की गतिविधि करने के लिए अपनी जगह छोड़ कर उसकी जगह पर चला जाएगा. नंदा ने समझाते हुए अपनी बात रखी.

हरप्रीत ने कहा, यानी जो ग्रुप गतिविधि एक पर था, गतिविधि दो पर चला जाएगा. गतिविधि दो वाला समूह गतिविधि तीन की जगह पर. ठीक है ना नंदा?

हां प्रीत, तुमने ठीक समझा.

इसी समय एहसान भी वहां आ गए. उन्होंने कहा, मैंने पूरा पाठ ठीक से समझ लिया है. कुछ ऐसी चीजें भी इकट्ठी कर लिया हूं जिनके चित्र बच्चे आसानी से बना सकते हैं. जैसे गिलास, कप, डस्टर, बोतल, वगैरह.

पर मेरे मन में यह सवाल है कि गणित की किताब में इस पाठ को क्यों रखा गया है?

सर, इस पर हमें बातचीत करनी पड़ेगी. वैसे जब आप बच्चों के साथ इस पर काम करेंगे तो कुछ बातें खुद-ब-खुद स्पष्ट होती जाएंगी. हां, एक अनुरोध आपसे है, आप कक्षा तीन, चार और पांच के बच्चों के आठ- दस ग्रुप बनाइएगा. हर ग्रुप में तीनों कक्षाओं के बच्चे रहें तो बहुत अच्छा रहेगा. हर ग्रुप के पास एक-एक वस्तु हो जिसका वे चित्र बनाएंगे. एक बहुत खास बात ध्यान में यह भी रखनी

होगी कि बच्चे वस्तु को अलग-अलग तरफ से देखेंगे. सामने से, बगल से, ऊपर से और वह चीज उन्हें जैसी दिखाई पड़ेगी वैसा ही चित्र बनाने की कोशिश करेंगे.

इन सब चर्चाओं के बीच प्रार्थना का समय हो गया था. घंटी बजी और ये चारों प्रार्थना के लिए बच्चों के पास चले गए.

क्या नंदा की योजना सफल हो पाई ?

दोनों कक्षाओं में क्या-क्या हुआ यह जानने के लिए अगला अंक पढ़ें.

खेलें खेल

रचनाकार- योगेश्वरी साहू

आओ बच्चों खेलें- खेल,
सब मिलकर बन जाएँ रेल.

भौंरा,बाटी, पिट्ठूल खेलें,
आओ हम सब मिलकर दौड़ें.

आओ फुगड़ी खेलें हम,
गोल -गोल अब घूमें हम.

लुका -छिपी का खेल अजब,
भोटकुल भी है बड़ा गजब.

बिल्लस, फल्ली खेलेंगे,
नदी पहाड़ में दौड़ेंगे.

कितने भाई कितने?
पोषम पा जितने.

डंडा पचरंगा खेल पुराना,
छु-छुऔल सबसे सुहाना.

तीरी -पासा का खेल निराला,
फेंको पासा मारो दाना.

खेल यहाँ है खूब सारे,
खेलो-कूदो नाचो प्यारे.

मेरी माता अनमोल नाता

रचनाकार- कन्याकुमारी पटेल

रखती सबका ख्याल हमेशा,
कभी न थकती मेरी माता.
बिना बोले ही सब समझती,
अजीब मंत्र है उसको आता.

जब भी मैं रूठा करती हूँ
मुझे हँसाती मेरी माता.
दुनिया की अच्छी बातों को,
मुझे सिखाती मेरी माता.

सब कहते हैं अनपढ़ उनको,
मन कि बात पढ़ लेती माता.

मुझे सुख या दुख जब भी आए,
मेरे साथ खड़ी होती मेरी माता.

जिसने मुझे मिट्टी से इंसान बनाया,
वो है मेरी भाग्य विधाता मेरी माता.
जिससे है दुनिया में मेरा अनमोल नाता,
वो है मेरी माता, मेरी माता, मेरी माता.

लड़ाई

रचनाकार- प्रिया देवांगन प्रियू

शहर की लड़की थी मीरा, उसकी शादी पास के गाँव में हुई थी. उसके घर में मीरा, उसके सास - ससुर और उसका पति रहते थे.पति दिन भर काम में चला जाता था. ससुर भी बाहर काम में चला जाते थे.घर में मीरा व उसकी सास दोनो रहती थीं.मीरा की सास थोड़ी लड़ाकू स्वभाव की थी. थोड़ी -थोड़ी बात में रोकती - टोकती थी.यह बात मीरा को अच्छी नहीं लगती थी.मीरा शहर की लड़की थी और थोड़ी चंचल स्वभाव की थी. वह काम हो जाने के बाद अपना व्हाट्सएप, फेसबुक चलाने लग जाती थी. मीरा का मोबाइल चलाना और उसका दूसरे लोगों से बातें करना उसकी सास को पसंद नहीं था.जैसे ही मीरा मोबाइल पकड़ती उसकी सास कुछ-कुछ काम करने के लिये बोल देती थी .इसी बात में दोनों की लड़ाई हो जाती. मीरा कहने लगी कि जब भी मैं मोबाइल चलाती हूं आप मुझे काम करने में लगा देती हो. मीरा की सास बड़बड़ाते हुये कहती हैं, न जाने तेरे इस मोबाइल में क्या है दिन भर पकड़ी रहती है कुछ काम नहीं करती है.एक दिन

फिर मोबाइल के कारण सास बहू में बहुत लड़ाई हुई, मीरा सोची रोज - रोज की लड़ाई अच्छी नहीं है. मीरा ने अपने सासु माँ के लिये एक मोबाइल भेंट किया और अपनी सास को बताई की व्हाट्सएप और फेसबुक कैसे चलाते हैं, उस दिन के बाद से मीरा और उसकी सास कभी लड़ाई नहीं किये. मीरा की सास अपना मोबाइल ले के फेसबुक और व्हाट्सएप चलाने लगी. वह अब अपने कमरे में बैठी रहती थी और मीरा को बेटी की तरह रखती थी.

Corona

Poetess- pushpa "pushp"

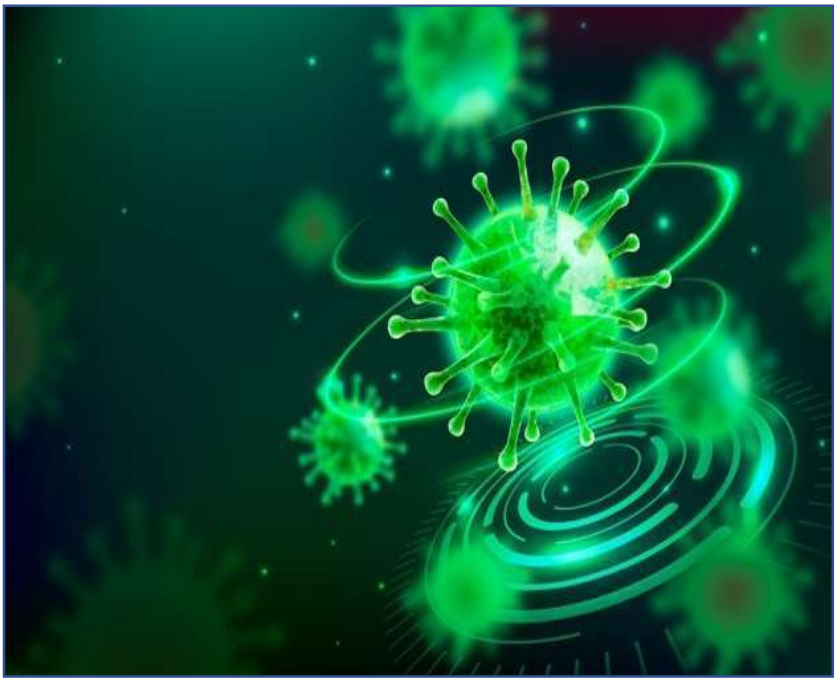

Don't go anywhere,
Corona is everywhere.

always use mask,
Don't do any task.

Wash your hands again and again,
Eat food after then.

Stay at your home,
Read and play game.

Please obey lock down,
Crowd is now in danger zone.

help doctors and nurses,
Corona is a curse.

Salute our Police team,
Help and just help Them.

Follow the social distancing,
Without any mistaking.

Eat fruits and vegetables,
But do not eat any animals.

Save your life,
Do not waste your time.

If you have time,
Pray for police and doctor’s life.

नवा सुरुज जागबो

रचनाकार- नेमीचंद साहू

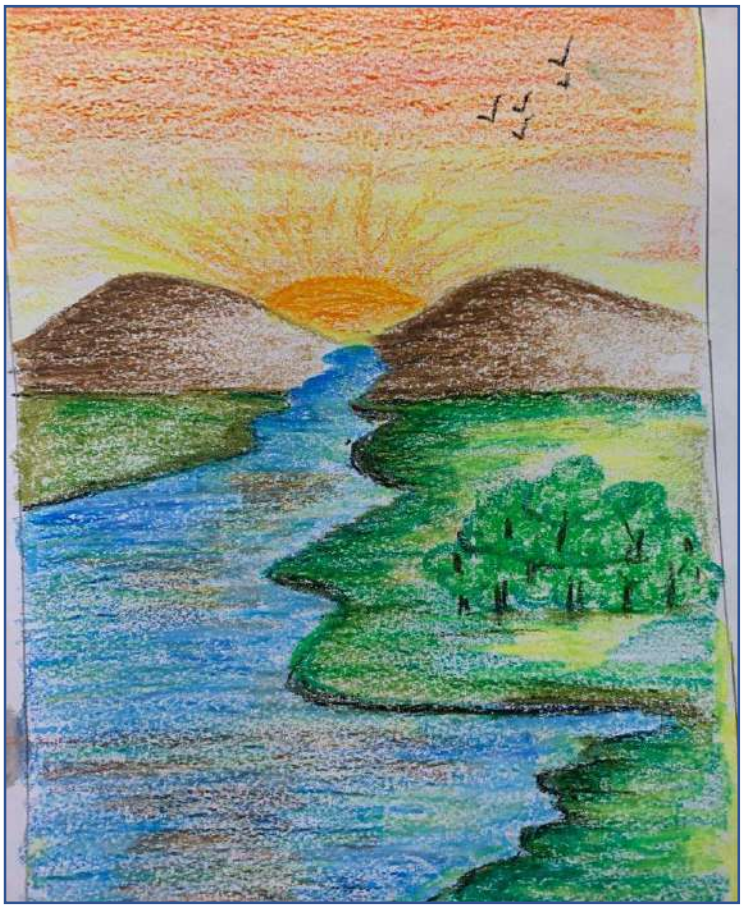

गरमी बाढ़त रोज के,
पानी सबो अटात.
विपदा ल तारे बर,
आवव करव सुमिरन.
एकमत हो के सब
करबो सुघ्घर भजन
आस ल छोड़ो झन
रीत ल छोडव झन
सुफल हो वो एक दिन

मुंह ल मोड़ो झन..
जीवन में परीक्षा होथे
हांसे के पहिली सबो रोते
यह सब जग की रीत
हारे के बाद जीत होथे
सोना ल चमके बर
आगी म तपाथे
अईसन तप हमर बर
आज यही बताते थे
समय एक ही रहे नहीं
एहि बात ल समझना है
कभी दुख कभी सुख
मिल एला सहना है
सुमत के मसाल ल
दुनिया में बगराना हे
सुमरन करबो मिलके
नवा सुरुज जगाना हे..

खुश हैं वन्य जीव और प्रकृति मुस्काने लगी

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित 'मलय'

देशव्यापी लाकडाउन के तीन सप्ताह बीत जाने के बाद भारतवर्ष के पर्यावरण में व्यापक सुधार देखने को मिला है. प्रकृति को नव जीवन मिला है. सुवासित इंद्रधनुषी सुमन खिलखिलाकर नित्य प्रातः बाल सूर्य का वंदन-अभिनंदन कर रहे हैं तो नदियां मां भारती के भाल पर निर्मल जल से पावन अभिषेक कर रही हैं. विषैले रसायन और कल-कारखानों का दूषित जल प्रवाहित न होने से सरिताएँ स्वच्छ निर्मल जलराशि से तृप्त हुई हैं और जलीय जीव-जन्तुओं के जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण कर रही हैं. वन्य जीव निर्भय निशंक हो नगरों के राजपथ और गलियों में विचरण कर रहे हैं. नोएडा में दिन में नीलगाय सड़क पर घूम रही है तो हरिद्वार में देर शाम को हिरन-सांभर टहलते दिखे और रात में हाथी घूमते हुए हर की पौड़ी तक पहुँच गये. मुम्बई के समुद्र तट पर हजारों की संख्या में कबूतर निर्भय किलोल कर रहे हैं तो कहीं सिंधु-जल में डाल्फिन अठखेलियाँ कर रही हैं. केरल के कोझिकोड शहर में लुप्तप्राय

मान लिया गया गंधबिलाव विचरण करता दिखा तो कर्नाटक में गौर भी राजपथ पर शान से चहलकदमी करता मिला. उड़ीसा के समुद्र तट पर अंडे देने आई ओलिव रिडले मादा कछुवों की सात लाख तक की अनुमानित संख्या जीव विज्ञानियों के लिए आश्चर्यमिश्रित खुशी का आधार है तो सुखद भविष्य का विश्वास भी. एक सौ से अधिक शहरों की हवा के प्रदूषण में तेजी से कमी हुई और गुणवत्ता में वृद्धि हुई है जिससे वायु श्वसन के अनुकूल हो गई है. आकाश निर्धूम हुआ है जिससे पंजाब के शहर जालंधर से हिमाचल की पर्वतमालाएँ दिखने लगी हैं. शहरों की छतों पर मयूर पंख फैलाकर नाचते हुए खुशी का इजहार रहे हैं और उन्हें देखकर मनुज-मन भी आनन्द के सरोवर में डुबकी लगा रहा है. मंद-मंद बह रही हवा शीतल और सुखदायी है. ग्रीष्मऋतु का आगमन हो चुका है पर दोपहर का ताप भी तन-मन के लिए कष्टकारी नहीं है. गत वर्षों में मध्य मार्च तक घरों की शोभा बन जाने वाले कूलर अभी टाड़ एवं तलघर में ही कैद हैं और पंखों की ही ठंढी हवा में मानव चैन की वंशी बजा रहा है. मैं जिस पीढ़ी से ताल्लुक रखता हूं, वह पीढ़ी प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की उदात्त भावना और संकल्प के साथ जीवन निर्वाह करने वाली रही है. मैंने ग्राम, वन, गिरि एवं सर्वदा जल प्रवाही सरिताओं के तट पर प्रकृति के साथ लोकजीवन को राग-रंग के आनन्द के साथ न केवल जीते हुए देखा है बल्कि परस्पर पूरकता के नवल अध्याय रचने का साक्षी भी रहा हूँ. यह समय का वह दौर था जब न ही कृषि विषयुक्त हुई थी और न ही मानव मन कलुषित. धरती माता हरीतिमा की चादर ओढ़े सुंदर और विषमुक्त थी, जिससे उपजे फल-फूल, सब्जियाँ, अन्न आदि संपूर्ण प्राणी जगत का पोषण करते हुए बल, आयु और आरोग्य प्रदान करते थे. नदियों एवं सरोवरों का पय पानकर पथिक तृप्त होता और समस्त लोक अपने दैनंदिन जीवन का निर्वाह कर माता समान आदर-सम्मान देता. गाय, बैल, सियार, लोमड़ी, हिरन, सांभर, खरहा, सेही, बिज्जू, कुत्ता, बिल्ली, लकड़बग्घा जैसे हिंसक-अहिंसक पशु घर एवं गाँव के चतुर्दिक स्थित गिरि, कंदराओं और वन प्रांतर में सहजता से जीवन यापन करते थे. पक्षियों की मधुर रसमय चहचहाहट मानो संगीत के सप्त सुरों का उद्रेक ही थी. ऋतु अनुकूल वर्षा से सिंचित कानन-गिरि देव दुर्लभ जड़ी-

बूटियों के संरक्षित भंडार थे. नदियों के शीतल जल में गाँव का संपूर्ण निस्तार निर्वाह था तो वही कच्छप, मत्स्य एवं शंख प्रजाति के सैकड़ों जीवों के जीवन का आधार भी. तथाकथित विकास की वाहक काली सड़क तब गाँव तक नहीं पहुँची थी. आवागमन के साधन सस्ते, सर्वसुलभ और प्रकृति हितैषी थे. बहुधा पैदल चलना श्रेयस्कर था और उत्तम स्वास्थय की कुंजी भी. कृषि कर्म गोवंश आधारित होने से परम्परागत हल-बक्खर जुताई के सर्वमान्य साधन थे और ट्रैक्टर गाँव से बहुत दूर था. यही कारण था सड़कों पर चलने वाले वाहनों से निकलने वाले धुएँ और कर्कश ध्वनि से रहित ग्राम्य परिवेश सुख-शांति का वह अभिराम स्थल था जहाँ पहूँचकर स्वर्ग का आनंद भी तुच्छ दिखाई पड़ने लगता था. लेकिन फिर ऐसा क्या हुआ कि प्रकृति कुपित होकर रूठ गई. मानव तो इस चराचर जगत का सबसे बुद्धिमान प्राणी है. आखिर वह गलती कहाँ कर बैठा, क्योंकर अपने पैरों स्वयं कुल्हाड़ी मार ली. ऐसे तमाम प्रश्नों के उत्तर यहीं हैं क्योंकि जहाँ की समस्या होती है तो समाधान का पंथ भी वहीं से निकलता है. वस्तुओं के अपरिग्रह और त्यागपूर्वक भोग के उपनिषदों के शुभ संदेश की अवलेहना कर मानव स्वार्थी और केवल भोगों में लिप्त अविवेकी पशुवत मनुष्य बन कर रह गया. प्राकृतिक संसाधनों का शोषक केवल शोषक बन गये मनुष्य ने जैसे अपने कर्तव्यों से मुंह मोड़ लिया है.

कोरोना के कारण तालाबंदी से पिछले 21 दिनों की अवधि ने घरों में कैद मानवीय जीवन में आये बदलाव से प्रकृति को पुनः नवल रूप धारण करने का एक स्वर्णिम अवसर प्रदान किया है. संचार के तमाम संसाधनों में चित्र और समाचार प्रकाशित प्रसारित होते रहे कि अब किस प्रकार प्रकृति खिली-खिली नजर आ रही है. हम अपने नगर-कस्बों में इस सकारात्मक प्राकृतिक परिवर्तन को प्रत्यक्ष देख, समझ और अनुभव कर सकते हैं. दिल्ली में यमुना का जल इतना स्वच्छ और निर्मल हो गया है कि तल में पड़े हुए पत्थर और अन्य वस्तुएँ सहजता से दिख रही हैं. यह दिल्ली की वही यमुना है जिसमें एक लाख कल-कारखानों के प्रवाहित दूषित जल से कलुषित विषाक्त फेनिल जल में हमने छठ के अवसर पर स्त्री-पुरुषों को सूर्य को अर्घ देते हुए भी देखा है. लाकडाउन के चलते कारखाने बंद हैं और न

केवन दिल्ली बल्कि कानपुर, मथुरा प्रयाग, वाराणसी, लखनऊ आदि नगरों की नदियां गंगा, यमुना गोमती आदि निर्मल हुई हैं.

जीवन का जरूरी पक्ष विकास भी है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता. विकास से विरोध भी नहीं. पर विकास प्रकृति की आहुति देकर तो नहीं किया जा सकता न. हमें प्रकृति के सह-अस्तित्व पर आधारित एक ऐसा विकासपरक मॉडल विकसित करना होगा जो दोनों को साध सके, जीवन को उमंग एवं उत्साह के साथ सदैव गतिशील करता रहे. इसके लिए जरूरी होगा कि हम भोगवाद एवं संग्रह करने की भावना एवं प्रवृत्ति से मुक्त हों. प्रकृति से उतना ही लें जितना जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक हो. कल-कारखानों के दूषित जल को बिना उपचारित किये सीधे नदी-नालों में प्रवाहित न किया जाये. बेहतर होगा दूषित जल निकासी की एक अलग समानान्तर व्यवस्था बना ली जाये. प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के साथ शाकाहार को प्रोत्साहित किया किया जाये. कृषि कार्य में रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों का प्रयोग योजनाबद्ध तरीके से सीमित किया जाये. चेतना सम्पन्न मानव ही प्रकृति का संरक्षक हो सकता है. कोरोना ने हमें जागने का एक संकेत और चेतावनी दी है. यदि हम वर्तमान संकट में ऐसे ही बेसुध सोये रहे तो आगामी पीढ़ी के सवालों के सम्मुख हम केवल सिर झुकाये मौन खड़े रहने को विवश होंगे.

नमस्कार का चमत्कार

रचनाकार - जयन्त कुमार पाठक

एक गाँव में अत्यंत गरीब परिवार रहता था. परिवार में माता - पिता के साथ उनके चार लड़के रहते थे. सबसे छोटे बेटे के सिवाय सभी अशिक्षित थे. सबसे छोटा बेटा सबका लाडला भी था. उसे सभी प्यार से ' राजा ' कहकर बुलाते थे. वह गाँव के ही स्कूल में पढ़ता था.

वह जिस स्कूल में पढ़ता था, उस स्कूल के शिक्षक नैतिक शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देते थे. वे बच्चों को कहानी सुनाते और उनसे घुल - मिल कर रहते थे. स्कूल के पास ही एक बैंक था. बैंक के मैनेजर रोज स्कूल के सामने से लगभग दस बजे गुजरते थे. राजा नित्य उन्हें प्रणाम करता था.इस बात से बैंक मैनेजर काफी प्रभावित थे.

गाँव के एक किसान को बैंक में किसान - कार्ड बनवाना था. किसान बार - बार बैंक जाता था लेकिन उसका कार्ड नहीं बन पाता था. वह इस बात से काफी परेशान था. राजा का घर किसान के घर के पास ही था. राजा ने किसान से

उसकी परेशानी का कारण पूछा तो उसने कार्ड नहीं बन पाने की बात राजा को बताई. राजा ने कहा कि आज मैं आपके साथ चलता हूं.

बैंक पहुँचकर वह मैनेजर से मिला और हर दिन की तरह उन्हें विनम्रता से प्रणाम किया. मैनेजर उसे देखते ही खुश हो गए. उन्होंने आश्चर्य से उससे बैंक आने का कारण पूछा. राजा ने उन्हें सारी बात बता दी.

मैनेजर उस बच्चे के भीतर सहयोग का ऐसा भाव देखकर बड़े प्रभावित हुए. उन्होंने उससे कहा, " बेटे, तुम स्कूल जाओ, इनका कार्ड बन जायेगा ". राजा खुशी - खुशी स्कूल चला गया. शाम को जब वह स्कूल से घर पहुँचा तो किसान उसके पास आया और उसे बहुत धन्यवाद दिया क्योंकि उसका कार्ड बन चुका था.

रोज नमस्ते करने की आदत के कारण राजा उस किसान का काम करवाने में सफल हो गया. संदेश है कि हम अपने विनम्र स्वभाव और नमस्कार की छोटी सी आदत से लोगों में अपनी अलग छवि बना सकते हैं.

जल्दी कोरोना से जीतना है तो...

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

जल्दी कोरोना से जीतना है तो...
घर में हमको रहना होगा
घर से नहीं निकलना होगा
हर घंटे हाथ साबुन से धोते रहना होगा
पहले कुछ सेकंड में ही हाथ धो लेते थे
अब 20 सेकंड तक हाथ धोते रहना होगा
पहले घर के सभी सदस्य पास पास बैठ जाते थे
अब घर में भी एक दूसरे से 1 मीटर की दूरी में रहना होगा
इधर उधर बेवजह नहीं घूमते हुए
लाकडाउन का पालन करना होगा
जरूरी काम से जब भी बाहर जाएं
मुंह में मास्क लगाकर जाना होगा

अपनी जिम्मेदारी निभाना होगा
बाहर से आए लोगों का मुखिया को सूचना देना होगा
बुखार, सुखी खांसी, थकान आए
तो डॉक्टर से जांच कराना होगा
शासन प्रशासन का सहयोग करते हुए
बताए नियमों पर चलते रहना होगा
भ्रामक संदेशों से बचना होगा
मन को स्थिर करना होगा
जानकारी और अपनी सुरक्षा के लिए
आरोग्य सेतु ऐप को डाउनलोड करना होगा
डॉक्टर पुलिस का सम्मान करना होगा
अभद्रता करने वालों पर कड़ी कार्यवाही करना होगा
विषम परिस्थिति में लोगों के लिए कर रहे काम
ऐसे लोगों को नमन के साथ धन्यवाद देते रहना होगा

तोते का निर्णय

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक

एक तोता एक दिन पेड़ के ऊँची डाल पर बैठा हुआ था.
वह कच्चा अनार तोड़ स्वाद लेकर उसे खा रहा था..
उसने देखा गुलाब के फूल में तितली और मधुमक्खी बैठी थी.
दोनों ही फूल के रस पीने के लिए झगड़ रही थी..
तितली बोली-"अरी! इस फूल पर अधिकार मेरा है पहले मैं आई हूँ.
मधुमक्खी कहने लगी-" तुम भागो यहाँ से. तुमसे पहले मैं आई हूँ.
दोनों काफी देर तक आपस में तू- तू,मैं-मैं कर रहीं थी.
अंधेरा घिरने लगा दोनों उस फूल को छोड़ नहीं रही थी..
सहसा उनकी निगाह सामने डाल पर बैठे तोते पर पड़ी उन्होंने तोते को पुकारा.
उन्होंने कहा-"तोता भाई हमारे झगड़े का फैसला कर बनो सहारा..
तोता गुलाब के पौधे के पास आकर उनसे पूछने लगा.
दोनों ने अपनी-अपनी समस्या रखी तोता उनसे कहने लगा..
मैंने आप दोनों को एक साथआते देखा था आप लोग ऐसा काम करो.
दोनों ही आधे-आधे गुलाब के रस पीकर झगड़ा शांत करो..
तितली बोली-"ओह!यह तो संभव नहीं आप कुछ अलग न्याय करो.

आप हम दोनों में से किसी एक के पक्ष में निर्णय कर झगड़ा दूर करो..
तोते ने दो पल सोचकर कहा-" अपना निर्णय सुनाता हूँ ध्यान से सुनना.
मधुमक्खी और तितली को पास बुलाकर कहा तुम दोनों बुरा न मानना..
इस फूल पर मधुमक्खी का पहला अधिकार है तोता कहने लगा.
यह सुनकर तितली उदास हुई हृदय मेंअप्रसन्नता का भाव जगा.
वह अपनी निराश दृष्टि से पूछने लगी तोता भाई ऐसा क्यों किया.
आखिर मेरा क्या अपराध है जो उसे पहले अधिकार दिया..
तोता बोला-" जो औरों को देता है वही पाने का है सच्चा अधिकारी.
मधुमक्खी फूलों के रस को बनाती है उपयोगी और गुणकारी..
वह स्वयं मारी जाती है पर फिर भी शहद बना कर देती.
तुम फूलों का रस केवल अपने स्वार्थ में लेती..
तोते की बात सुनकर तितली का मुँह बंद होगया.
वह बिना एक शब्द कहे चुपचाप वहाँ से उड़ गई..

शिक्षा- उस जीवन से क्या लाभ जो दूसरे के काम न आ पाए.

पर्यावरण

रचनाकार- अविनाश तिवारी

आओ एक पौधा लगाएँ
प्रकृति से प्यार का
सींचें स्नेह का पानी,
डालें खाद दुलार का.
रोकें तेज धूप अभिमान का
पोषण दे विश्वास का
सहेजें अपने रिश्ते
छोड़े हठ गुमान का
आओ एक पौधा लगाएँ
रिश्तों में प्यार का
अपनत्व के अहसास का
सँवारे वसुधा को जो
जीवन प्रदायनी है
रोके तरु की हरियाली

जिसको हमने दी बदहाली है
आओ फिर संकल्प उठाएं
धरा के सम्मान का
पीढ़ी के बचाव का
नैतिकता के मान का
जन्म के उत्थान का
आओ एक पौधा लगाएँ.

पौधों को भी होता है दर्द

रचनाकार- खेमराज साहू "राजन"

(5 जून विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष)

साधारण कटने,जलने या छिलने पर हमें दर्द महसूस होता है लेकिन क्या आप जानते है कि पेड़-पौधे भी दर्द महसूस करते हैं व प्रतिक्रिया स्वरूप चीखते भी हैं. जंतु में पोषण, उत्सर्जन, गति, संवेदनशीलता, वृद्धि, प्रजनन आदि का लक्षण सजीवो में पाए जाते हैं. तो पौधे भी सजीव है. अत: उनमें पोषण, उत्सर्जन, गति, संवेदनशीलता, वृद्धि तथा प्रजनन के लक्षण भी पाए जाते हैं. इसी प्रकार अन्य सजीवों के समान ही पौधों या वृक्षों में भी संवेदनशीलता पायी जाती है.

पौधों में गति तथा गुरुत्वाकर्षण में पौधो की जड़ जमीन की ओर ही बढ़ती जाती है. प्रकाशानुवर्तन की बात करें तो पौधों के तने हमेशा ही प्रकाश की ओर ही वृद्धि करते हैं. पौधों को जल की आवश्यकता हो तो पौधों की जड़ें स्वमेव ही जल की ओर वृद्धि करती हैं जिसे जलावर्तक कहते हैं. साथ ही स्पर्शानुवर्तन का गुण देखें तो लगता है कि पौधे अपने आप को संरक्षित रखना चाहते हैं. जैसे -

छुई-मुई के पौधों की विशेषता से सभी परिचित है. इस पौधे को छूने मात्र से ही इसकी पत्तिया बंद हो जाती है, इसे कम्पानुकुंचन भी कहते है वह गति जो पौधों में स्पर्श से उत्पन्न होती है उसे स्पर्शानुवर्तन कहते है. कुम्हड़ा, लौकी, मटर, करेला आदि की बेल में स्पर्शानुवर्तन पाया जाता है इनके 'प्रतान ' जैसे ही किसी सहारे को छूती हैं उसके चारो ओर स्प्रिंग की तरह लिपट जाते हैं. क्या होता है जब जलती हुई मोमबत्ती की लौ के ऊपर आपका हाथ पड़ जाता है? आप झटके से अपना हाथ हटा लेते हैं, ये क्रिया संवेदनशीलता के कारण होती है. पेड़- पौधों में भी संवेदनशीलता होती है, जैसे - कमल के फूल का सूर्योदय के साथ खिलना तथा सायंकाल के समय बंद हो जाना, रात में कचनार, इमली की पत्ति का बंद होना ये दोनों उदाहरण प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं. छुई- मुई की पौधों की पत्तियों का छूने से बंद हो जाना स्पर्श के प्रति संवेदनशीलता है.

अगर किसी पौधे या वनस्पति को उचित मात्रा में पानी न मिले या उसका तना काटा जाता है तो वे इसका दर्द महसूस करने के साथ चीखते भी है. इज़राइल के तेल अवीव विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने शोध में इसकी पुष्टि की है. वैज्ञानिकों ने बताया की कुछ वनस्पतियाँ ऐसी है, जो पर्यावरणीय तनाव सहन करने के बाद अत्यधिक आवृत्ति वाले दुःखी ध्वनि का उत्सर्जन करते हैं. वैज्ञानिकों ने बताया की वनस्पति द्वारा उत्सर्जित ध्वनि के कई प्रकारों को सुनने से बेहतर कृषि में मदद मिल सकती है.

सन् 1901 में भारतीय वैज्ञानिक *सर जगदीश चंद्र बोस ने साबित कर दिया था कि पेड़- पौधों में भी जीवन होता है. बोस ने " क्रेस्कोग्राफ " के जरिये बाहरी बदलाव होने पर पेड़ पौधों की प्रतिक्रिया रिकॉर्ड की. यह प्रयोग लंदन की रॉयल सोसाइटी में हुआ था. इसके बाद दुनिया ने बोस का लोहा माना.

शोध में वैज्ञानिकों ने टमाटर व तम्बाकू के पौधों में 10 से.मी. की दूरी से यह चीख माइक्रोफोन के जरिये रिकॉर्ड की. उन्होंने तना काटा व पानी डालना बंद कर दिया. हर घंटे 35 बार पौधों की चीख रिकॉर्ड हुई. तना को काटने पर टमाटर के पौधे के एक घंटे में 25 और तम्बाकू के पौधों में 15 अल्ट्रासोनिक भ्रंश ध्वनियों

का उत्सर्जन किया. पानी कम होने पर टमाटर के पौधों ने एक घंटे में 35 और तम्बाकू के पौधों में 11 अल्ट्रासोनिक भ्रंश ध्वनियों का उत्सर्जन किया. इस प्रकार पौधों को महसूस होता है दर्द. जब पौधे के पत्ती को कीड़ा काटता है तो यह कटा हुआ हिस्सा पौधे से कैल्शियम खींचता है. पत्तियों व तने के साथ कोशिकाओं में एक चेन रिएक्शन सेट करता है. कैल्शियम पत्तियों की रक्षा के लिए पौधे से हार्मोनल प्रतिक्रिया करता है. यहीं दर्द को रिकॉर्ड किया जाता है. इस प्रकार वैज्ञानिकों ने पता किया कि पौधों या वृक्षों को काटने,तोड़ने या पानी नहीं मिलने से दुःखी होते हैं । अतः आज 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शपथ लेनी होगी कि हमें पेड़- पौधों को नहीं काटना है तथा नए पेड़- पौधे लगाना एवं उसका संरक्षण करना है.

सबको देनी है ये शिक्षा,पर्यावरण की करो सुरक्षा.

नटखट निन्नी

1. शिक्षक : निन्नी, क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकती हो?
   निन्नी: हाँ पढ़ सकती हूँ अगर वह हिन्दी में लिखी हो.

2. शिक्षक: निन्नी, क्या तुम्हें न्यूटन का पहला नियम मालूम है?
   निन्नी: पूरा - पूरा तो याद नहीं पर आखिरी का याद है.
   शिक्षक: चलो जितना याद है उतना ही बताओ
   निन्नी: यही न्यूटन का पहला नियम है.

3. मां (निन्नी से): तुम्हें पता है रोज बादाम खाने से क्या होता है?
   निन्नी: बिल्कुल पता है, रोज - रोज बादाम खाने से बादाम खत्म हो जाते हैं.

4. निन्नी (माँ से): माँ, मैं कल स्कूल नहीं जाऊँगी.
   माँ : क्यों निन्नी?
   निन्नी: माँ आज टीचर ने हम सब बच्चों का वजन तौला था, मुझे डर लगता है कि कल कहीं वो हमें बेच न दें.

5. निन्नी: पिताजी, मुझे इतिहास विषय बिलकुल पसंद नहीं है?
   पिताजी: क्यों निन्नी?
   निन्नी: उसमें टीचर उस समय के बारे मे प्रश्न पूछती हैं जब मैं पैदा भी नहीं हुई थी.

6. टीचर (निन्नी से): जब मैं तुम्हारी उम्र की थी तो गणित के सवाल जल्दी से बना लिया करती थी.
   निन्नी : जरूर आपकी टीचर बहुत अच्छी रही होंगी.

7. टीचर: निन्नी, क्या तुम्हें पता है दुनिया का सबसे पुराना प्राणी कौन सा है?
   निन्नी: मैडम जरूर, वह जेब्रा होगा.
   टीचर: अच्छा पर क्यों?
   निन्नी: मैडम, वह ब्लैक एण्ड व्हाईट होता है न इसीलिए.

8. टीचर : निन्नी बताओ, अकबर का जन्म कब हुआ था?
   निन्नी: जी उसके जन्मदिन के दिन.

9. टीचर: निन्नी बताओ, छह आमों को आठ लोगों में कैसे बांट सकते हैं?
   निन्नी: मैंगो शेक बनाकर.

10. टीचर: कोई भी मनुष्य घोड़े से तेज नहीं दौड़ सकता.
    निन्नी: पर घोड़ा मुझसे आगे भी नहीं निकल सकता.
    टीचर: अच्छा! पर कैसे?
    निन्नी: मै खुद तो घोड़े की पीठ पर सवार रहूँगी न

माँ

रचनाकार- ऋषिता यदुराज

माँ मेरी बड़ी निराली है
रखती ध्यान हमेशा प्यारी है
सुबह उठाकर नहलाती है
कंघी कर बालों को सुलझाती है
स्वादिष्ट भोजन बना खिलाती है
स्कूल जाने की देती है सीख
होमवर्क में मदद को आती है
खेल भी मुझको करवाती है
मुश्किल घड़ियों में समझाती है
माँ मेरी बड़ी निराली है
जो मेरे प्राणों से प्यारी है
प्यार लुटाती है हर वक्त
मां मेरी बड़ी निराली है

गागर में सागर कहलाती है
मां मेरी बड़ी प्यारी है
सबकी राजदुलारी है
रखती ध्यान हमेशा प्यारी है
मां मेरी बड़ी निराली है

आसमान की कक्षा

रचनाकार- रीता मंडल

आसमान की कक्षा में
चाँद बना है टीचर.
तारों को वह पढ़ा रहा,
हौले से मुसकाकर.

टिम्मक-टिम्मक तारे अपने,
साथी लगे बुलाने.
छोड़ो खेल-कूद, शैतानी,
टीचर लगे पढ़ाने.

झिलमिल - झिलमिल नई रोशनी,
बाँटो इस दुनिया को.
मुस्का कर ये कहता चंदा,
नहला दो बगिया को.

दौड़े तारे जल्दी - जल्दी,
नन्हे-नन्हे पग धर.
हर पल को त्यौहार बनाकर,
गाओ जीवन भर.

यह प्यारा सा चित्र रोज,
पलकों में उगता है.
जब भी सपनों में आता,
जादू - सा जगता है.

आसमान की कक्षा में,
चांद बना है टीचर.
मन करता है नीला अंबर,
बन जाए मेरा घर

पराया धन

रचनाकार- प्रिया देवांगन प्रियू

चाँदनी एक छोटी सी लड़की थी. वह बहुत ही चुलबुली और शरारती थी. पर उसकी ये हरकतें चाँदनी की दादी को बिल्कुल भी पसन्द नहीं थी. वह थोड़ी - थोड़ी बात पर उसको चिल्ला देती थी. चाँदनी के घर में उसके दादा - दादी, मम्मी - पापा और उसका बड़ा भाई रहते थे. चाँदनी के मम्मी पापा घर बनवा रहे थे. सभी ने तय कर लिया था कि कौन सा कमरा किसका रहेगा. तभी छोटी चाँदनी आयी और बोली दादी जी मेरा कमरा कौन सा है? दादी बहुत ग़ुस्से वाली थी वह चिल्ला कर बोली तू तो पराया धन है तेरा कोई कमरा -वमरा नहीं है. तभी चाँदनी दादी जी से बोली - आप हमेशा मुझे पराया धन क्यों कहती हैं, वो क्या होता है. ये सब बातें दादा जी पास बैठ कर सुन रहे थे. उन्होंने चाँदनी को पास बुला कर बोले पराया धन बेटी को कहा जाता है जब बेटी बड़ी हो जाती है तो उसका ब्याह कर के पराये घर भेज देते है चाँदनी फिर दादी से बोली - दादी क्या आप भी पराया धन थीं ? आपका भी कोई घर न था. दादी चुपचाप वहाँ से चली गयीं. दादी के पास कुछ जवाब न था.

एक कहानी : नवाचार की जुबानी

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक

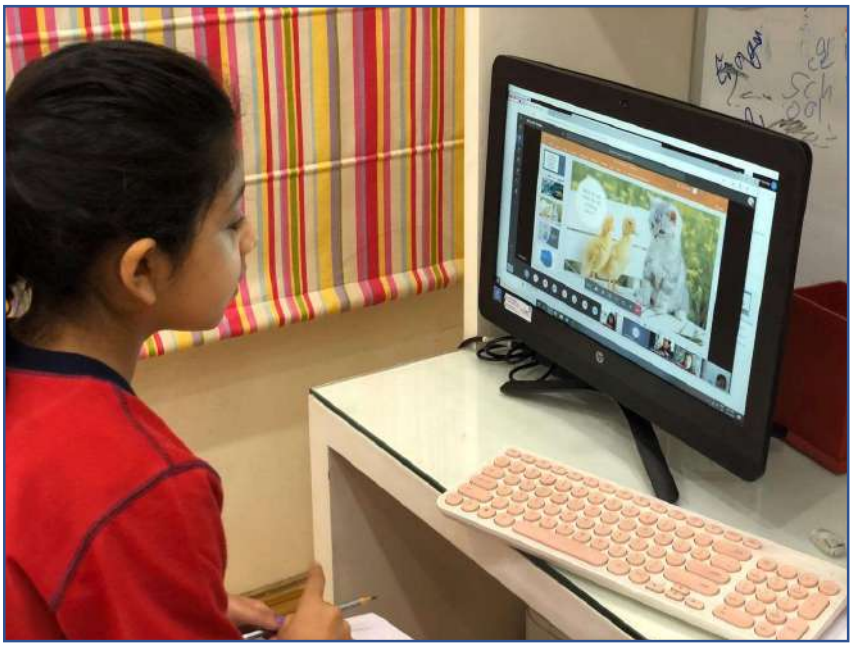

रानू और भानु एक गाँव के स्कूल में पढ़ती थीं.
शिक्षक के बताए हुए कार्य को लगन से करती थीं..
शिक्षक उनके अध्ययन कार्य को देखकर खुश हुआ.
कोर्स समाप्त कर, बच्चों ने परीक्षा की तैयारी को शुरू किया..
अचानक एक दिन उच्च कार्यालय से आदेश प्रसारित हुआ.
सभी बच्चे एवं शिक्षक घर में रहेंगे, स्कूल बंद हुआ..
स्कूल बंद होने का कारण, बच्चे समझ ना पाए.
शिक्षकों ने उन्हें फोन से वायरस के बारे में बताये..
बच्चो, चीन देश से आया हुआ है यह कोरोना.
जिसके कारण हम सब को पड़ रहा है रोना..
कोरोना से डरना नहीं सावधानी ही बचाव है प्यारे.
निश्चित दूरी, मास्क, हाथ धोना, लॉक डाउन यह उपाय है सारे..
रानू और भानु ने शिक्षक से पूछा कैसे होगी पढ़ाई घर पर हमारे.

शिक्षक ने कहा- चिंता न करो "पढ़ई तुंहर दुआर" आए हैं प्यारे..
स्कूल शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन ने सी जी स्कूल डॉट इन बनाया है प्यारे.
लॉक डाउन में भी छत्तीसगढ़ी बच्चों का हौसला बढ़ा रहे हैं.
सभी शिक्षक, वर्चुअल क्लास, व्हाट्सअप द्वारा ऑनलाइन पढ़ा रहे हैं..
कोरोना संकट के दौर में बंद स्कूलों से अध्ययन-अध्यापन की बाधा हुई दूर.
छत्तीसगढ़ के शिक्षक-छात्र ऑनलाइन पढने-पढ़ाने के सीख रहे हैं गुर..

लॉकडाउन में घर पर रहकर

रचनाकार- तेजेश साहू

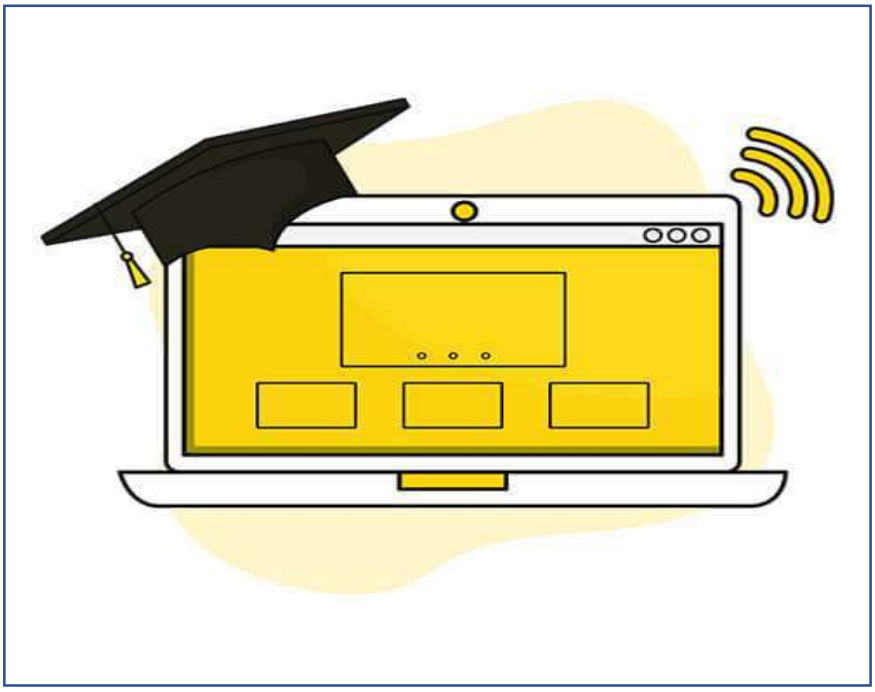

लॉकडाउन में घर पर रहकर
कोरोना को हराएँगे.
अच्छी-अच्छी चीजें बनाकर
हम कुछ नया सिखाएँगे.
कविता लिखकर, चित्र बनाकर
सबका मन बहलाएँगे.
लॉकडाउन में घर पर रहकर
हम कुछ नया बनाएँगे.
पापा मम्मी को बहुत काम है
उनको नहीं सताएँगे.
लाकडाउन में घर पर रहकर
कोरोना को हराएँगे.

PLANT AND TREES

Poet- DEVIKA SAHU

The tiny seeds of my blueberry,
That I buried deep under the soil,
Between the strawberries,
Today it came out peeping with two tiny leaves,
As if it needed some sunshine,
And water to rise.
It took some minerals from the soil,
And some carbon dioxide which,
I exhale when I breathe,
And a green pigment chlorophyll,
Already contained in its leaves.
It started preparing its food,
The process we call photosynthesis.

It gave out oxygen from the pores of its tiny leaves,
That's how we all breathe and live.
How grateful we should be,
To such a great bestowals,
The plants and trees.

चलो नहाने

रचनाकार- महाकान्त प्रसाद, मधुबनी

हाथी भैया चला नहाने
पीछे बन्दर गाए तराने
मद मस्त वह लगे इतराने
ठुमक ठुमक
ठुमक ठुमक.

रस्ते में मिला कोयल, मोर
भालू संग में डांगर ढोर
पहुँचा गैंडा लगाया जोर
झुमक झुमक
झुमक झुमक.

तितली भी है बड़ी अलबेली
सुग्गा संग करे अटखेली
बिजली कड़की बरसी बदली
झम झमाझम
झम झमाझम.

चलो नहाने जाएँ पोखर
कूद पड़े सब उसके अंदर
झट से बाहर निकला बंदर
चुभुक चुभुक
चुभुक चुभुक.

रोटी

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

रोटी बनी है गरमा गरम
मम्मी बनाती नरम-नरम,

देशी घी में तली हुई
देखो खुशी से फूली हुई,

सुबह खाओ, शाम खाओ
गरमा-गरम खूब खाओ,

मेहनत की रोटी है खाना
भूख लगे तो है बनाना,

छोट-बड़े सब मिल जुल खायें
खाकर रोटी स्वस्थ हो जायें,

रोटी संग सब्ज़ी है खाना
मेहनत से कभी जी ना चुराना,

करो मेहनत, पौधे लगाओ
फल की चिंता में जी ना चुराओ,

धरती मईया है वरदानी
जिनकी कृपा से मिले दाना-पानी,

कर्म करें तो मिले वरदान
जय जवान जय किसान.

मैं मजदूर हूँ

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

पर्वत को काट मैंने सड़क बनाई,
उन सड़कों पर लोगों ने वाहन अपनी दौड़ाई,
उसी सड़क में पैदल चलने को मजबूर हूँ,
सुविधाओं से दूर मैं मज़दूर हूँ.

न दिन को चैन, न रात को आराम,
जब तक है जान,निष्ठा से करूँ काम,
फिर भी मालिक के आगे,सिर झुकाने को मजबूर हूँ,
सुविधाओं से दूर मैं मजदूर हूं.

सूत कात कर वस्त्र बनाता,
वस्त्रों से सबके तन को सजाता,
फिर भी फटे पुराने वस्त्र पहनने को मजबूर हूँ
सुविधाओं से दूर मैं मजदूर हूँ.

फलों के मैंने सुन्दर बाग़ लगाए,
बाग़ के सारे फल मालिक खाए,
मैं तो सिर्फ रखवाली करने को मजबूर हूँ
सुविधाओं से दूर मैं मजदूर हूँ.

दैनिक मजदूरी से जीवन चलाते
श्रम से खून-पसीना ख़ूब बहाते
फिर भी अल्प मजदूरी पाने को मजबूर हूँ,
सुविधाओं से दूर मैं मजदूर हूँ.

लोगों के लिए मनचाहा घर बनाता,
घर में सुविधाओं का ध्यान रखा जाता,
फिर भी फुटपाथ पर रहने को मजबूर हूँ,
सुविधाओं से दूर मैं मजदूर हूँ.

दुनिया को रोशन करता
खुद रोशनी से दूर हूँ
आज भी अंधेरे में रहने को मजबूर हूँ,
सुविधाओं से दूर मैं मजदूर हूँ.

कारखाने में मशीनों को चलाता,
दिन दूनी रात चौगुनी आय बढ़ाता,
फिर भी अभाव में जीने को मजबूर हूँ,
सुविधाओं से दूर हूँ...हाँ,मैं मजदूर हूँ.

एक बनो नेक बनो

रचनाकार - श्वेता तिवारी

कहीं किसी राज्य में सूर्यदेव नाम का एक न्यायप्रिय राजा था. उस राज्य की जनता सुखी थी. प्रजा की हर समस्या को राजा सुनते थे और उचित समाधान करते थे. प्रजा तथा उनकी संपत्ति की रक्षा की जाती थी. राजा सूर्यदेव अकसर वेश बदलकर राज्य में भ्रमण करते और पता लगाते कि प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं है. इस स्थिति के कारण लोग अपने आप में ही मग्न रहने लगे थे. सभी केवल अपने और अपने परिवार के बारे में ही सोचते थे. आपस में सुलझाई जा सकने वाली समस्याओं के समाधान के लिए भी लोग राजदरबार पहुँच जाते थे. इस कारण राजा सूर्य देव का अधिकतर समय ऐसी समस्याओं को सुलझाने में व्यतीत होने लगा था.

राज्य की समाज व्यवस्था के कमज़ोर होंने की बात समझ में आने पर राजा सूर्यदेव ने एक उपाय सोचा और एक दिन पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया कि राज्य के सभी गांवों से राज्य के कर्मचारियों को हटाया जा रहा है अतः सभी नागरिक अपनी और अपने गाँव की सुरक्षा की जिम्मेदारी स्वयं उठाएँ. राजा के

इस निर्णय से कुछ मंत्री बहुत परेशान हो गए. उनके विचार में ऐसा निर्णय उचित नहीं था; क्योंकि प्रजा और उसकी संपत्ति की रक्षा करना राजा का कर्तव्य होता है. मंत्रियों को आशंका थी कि राजा के इस निर्णय से प्रजा में रोष और असंतोष फैल सकता है और लूटपाट की घटनाएं बढ़ सकती हैं. एक वरिष्ठ मंत्री ने अपनी आशंका व्यक्त करतें हुए राजा से कहा कि इस निर्णय से गांव की प्रजा गांव छोडकर शहरों की ओर पलायन करने लगेगी जिससे कृषि कार्य मे कमी आएगी, अनाज की पैदावार कम हो सकती है और शहरों में भी आवास की समस्या उत्पन्न हो सकती है.

मंत्रियों की असहमति के बाद भी राजा अपने निर्णय पर अडिग रहे और जल्दी ही गांवों से सुरक्षा कर्मचारी हटा दिए गए. कई दिन बीत गए, गांवों से सुरक्षा कर्मचारियों को हटाने के बावजूद भी गांव में लूटपाट की घटनाएं बढ़ने की खबरें नहीं मिली. एक बदलाव यह हुआ कि जिन छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर लोग राजदरबार दरबार में पहुंच जाते थे उनकी संख्या में काफी कमी आ गई. तब एक दिन राजा ने उस वरिष्ठ मंत्री को बुलाया और कहा कि गांवों से सुरक्षा कर्मचारी हटाए जाने के बाद राज्य में कहां-कहां लूटपाट की घटनाएं बढ़ीं हैं कहां-कहां हमारे प्रति रोष व्याप्त है ; इसका पता लगाओ और हमारे इस निर्णय से जिन लोगों को हानि पहुंची हैं उन्हें दरबार में हाजिर करो ताकि उन्हें उचित मुआवजा दिया जा सके.

मंत्री ने अपने गुप्तचरों को यह सारी जानकारी एकत्र करने के काम में लगा दिया और गुप्तचरों से सूचना मिलने पर राजा सूर्यदेव को बताया कि" राजन् आपके प्रति गांव वालों में कोई रोष या असंतोष नहीं है न ही कहीं लूटपाट की घटनाएं बढ़ी हैं बल्कि गांव में रहने वाले लोग अब अधिक संगठित हुए हैं उनमें एकता बढी है. राजन् पहले नागरिक केवल अपने परिवार की चिंता किया करते थे पर अब वे अपने पूरे गांव के विषय में जागरूक हुए हैं. नागरिक अब एक दूसरे पर अधिक विश्वास करने लगे हैं अब गांव वाले अपनी छोटी-छोटी समस्याएं साथ बैठकर आपस में सुलझा लेते हैं. वे एकता की शक्ति को पहचान गए हैं और उनका आत्मविश्वास बढ़ा है. राज्य के पहरेदार नियुक्त ना होने के कारण अब

पूरा गांव एकजुट होकर आने वाली हर आपत्ति का सामना करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है. "

राजा सूर्यदेव ने मंत्री से पूछा कि क्या आपने इस तथ्य का पता लगाया कि यह सकारात्मक परिवर्तन कैसे हुआ?

तब मंत्री ने राजा से कहा कि मैंने इस विषय में भी जानकारी एकत्र की है. शुरूआत में नागरिक आपके इस निर्णय से असंतुष्ट थे पर कुछ वरिष्ठ नागरिकों ने सभी को समझाया कि हमारे राजा हमारी शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं इसलिए उन्होंने गांव से राज्य के कर्मचारियों को हटा लिया है. अगर हम अपनी एकता से अपनी और अपनें गांव की सुरक्षा के लिए व्यवस्था बना लें तो हमारे राजा के संसाधन बचेंगे और राज्य की शक्ति भी बढ़ेगी. उन वरिष्ठ नागरिकों की बातों से सहमत होकर गांव वालों ने आपस में सलाह मशविरा करके अपने गाँव की रक्षा करने और आपसी विवाद सुलझाने की व्यवस्था तय कर ली और अब गांव वाले अपनी संपत्ति की रक्षा करने में सक्षम है. एक गांव के उदाहरण से प्रेरणा लेकर अन्य गांवों में भी नागरिकों ने अपनी एकता से ऐसी ही व्यवस्था कर ली है और अब हमारे राज्य में लगभग सभी गांव आत्मनिर्भर हो गए हैं और नागरिक पहले से भी अधिक सुखी और प्रसन्न हैं. मंत्री की बात सुनकर राजा सूर्यदेव बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने मंत्री से कहा कि "वेश बदलकर घूमने के दौरान मैने महसूस किया था कि हमारे राज्य के नागरिक अपने स्वार्थ की पूर्ति में ही लगे हैं और गांवों की सामाजिक व्यवस्था कमजोर हो रही है इसी व्यवस्था को फिर से स्थापित करने के लिए ही मैने कर्मचारियों को गांवों से हटाने का निर्णय किया था. मुझे खुशी है कि नागरिकों ने मेरे उद्देश्य को खुद भी समझा और अन्य लोगों को भी समझाया."

इस प्रकार राज्य के नागरिकों ने एकता की शक्ति को समझा और राज्य में सुख शांति के साथ-साथ नागरिकों के बीच आपसी प्रेम में भी वृद्धि हुई.

कहानी की शिक्षा यह है कि -

"हमें एक बनना है नेक बनना है एकता में ही शक्ति है हम एक होकर ही अपने देश की रक्षा कर सकते हैं और देश की तरक्की में अपना योगदान दें सकते है."

जय हिंद जय भारत

गर्मी से तुम बचके रहना

रचनाकार- सुजीत कुमार मौर्य

सूरज आँखें दिखा रहा है,
हम सबको अब सता रहा है.

कूलर पंखा फेल हुआ है,
घर मे रहना जेल हुआ है.

कोल्डड्रिंक-लस्सी, आइसक्रीम-ठंडाई,
गर्मी में हमको ये भायी.

खीरा-तरबूज पेट में जाए,
तन-मन को तर कर जाए.

पानी जितना पी सकते हो,
स्वस्थ जीवन जी सकते हो.

घर में रहना सबसे अच्छा,
खाओ चटनी आम का कच्चा.

ताजा खाना, नित तुम खाना,
स्वस्थ-निरोगी काया पाना.

जब बाहर जाना पड़ जाए,
पूरा शरीर ढकना है उपाय.

खाना कम और पानी ज्यादा,
भोजन करना पौष्टिक व सादा.

गर्मी से तुम बचके रहना,
वर्ना पड़ेगा तकलीफ सहना

इन बातों का रखना ध्यान,
बनी रहेगी चेहरे पे मुस्कान.

क्योंकि....

सूरज आँखें दिखा रहा है,
हम सबको अब ये सता रहा है.

मेरा मित्र नन्हा चूहा

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

मेरे घर रोज एक नन्हा चूहा आता,
खूब शरारत कर खूब उधम मचाता,
हम सबको वह खूब सताता..

घर में रखा अनाज छुपके से चट कर जाता,
चीं चीं चीं कर सबको खूब आवाज लगाता.

मेरी कॉपी के पन्नों को भी वह खा जाता,
एक भी कपड़ा उसके दाँतो से ना बच पाता.

उसको दांतों को देख मुझको याद है आता,
चूहे शेर की कहानी, वह याद मुझे दिलाता.

उसकी बहादुरी सोच-सोच कर मेरा मन भर जाता,
टॉम एंड जेरी कार्टून का जेरी मुझको खूब लुभाता

काश यह नन्हा मूषक मेरा वाहन बन जाता,
कितने मजे होते, वह मेरा मित्र कहलाता.

कभी डाल जेब में मैं, उसे सैर करा लाता,
लौटकर जब हम वापस आते, बिल में वो घुस जाता

मेरा परिवार मेरा संसार

रचनाकार- कु.विमला, कक्षा चौथी, शा.प्रा.शाला कन्या आश्रम शिवपुर

पापा की गुल - बकावली मैं,
उनकी उंगली पकड़ चली.

हूं मम्मी की छोटी गुड़िया,
उड़ती घर में जैसे चिड़िया.

छोटी बहना हूं भैया की,
फिक्र नहीं है इस दुनिया की.

बहना है प्यारी सहेली,
छोटी सी अनबूझ पहेली.

खूब दुलारें नाना - नानी,
मुझे सुनाते खूब कहानी.

मौसी की मैं प्यारी बिटिया,
कहती हैं जादू की डिबिया.

दादा - दादी की मैं रानी,
मुझमें देखें अपनी नानी.

चाचू मुझको बहुत ही भाते,
बुआ से मिलने को ले जाते.

है प्यारा परिवार हमारा,
यही तो है संसार हमारा.

हमारे प्रेरणास्रोत- मिल्खा सिंह

रचनाकार- प्रीति सिंह

प्यारे बच्चो,

आज मैं बात करूँगी एक एथलीट की, जिन्हें पद्मश्री जैसे सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया .उन्होंने हमारे देश को कई गोल्ड मेडल दिलाए, कुल अस्सी अंतर्राष्ट्रीय रेस में से सतहत्तर रेस जीत कर उन्होंने एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया. उस एथलीट का नाम है मिल्खा सिंह.

मिल्खा सिंह जी का जन्म पंजाब प्रांत के मुज़फ़्फ़रनगर में सन १९३२ में हुआ. यह आजादी के पहले की बात है. पंजाब का यह हिस्सा आज पाकिस्तान में है. १५ अगस्त १९४७ को आज़ादी के साथ ही भारत और पाकिस्तान में दंगों की शुरुआत हो गई. इन दंगों में मिल्खा जी ने अपने पूरे परिवार को खो दिया. सिर्फ़ एक भाई और एक बहन बच गए थे. इस बँटवारे के दौरान वह पाकिस्तान से भाग कर भारत आ गए. शुरू के दिनों में तो वह बहन के यहाँ रहे परंतु बाद में उन्होंने आर्मी में नौकरी कर ली. आर्मी का जीवन बहुत ही अनुशासित और थका देनेवाला होता था. उन्हें फिजिकल ट्रेनिंग के साथ -साथ गार्ड्निंग, रोड बनाना

और रसोई आदि के काम भी करने होते थे. उन्हें वहाँ पैंतीस रुपए तनख़्वाह ही मिलती थी और उसमें से भी दस रुपए परिवार को भेजना ज़रूरी होता था. बचे पैसों से वह अपनी दैनिक ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदते थे. एक रोज़ सुबह उन्हें जानकारी दी जाती है कि दूसरे दिन छह मील की राज्य स्तरीय दौड़ प्रतियोगिता आयोजित होगी. जो जवान यह प्रतियोगिता जीतेगा उसे रोज़ एक गिलास दूध मिलेगा और रोज़ के काम में भी कुछ छूट मिलेगी.

बच्चो, जीवन में मिलने वाले दुःख और अभाव अक्सर इंसान को तोड़ कर रख देते हैं. परन्तु जिनके हौसले बुलंद होते हैं वे तकलीफों से और भी मजबूत बनते जाते हैं. वे कमियों को ही ताकत बना लेते हैं. मिल्खा सिंह की गिनती ऐसे ही इंसानों में होती है.

दूसरे दिन रेस शुरू हुई. वे जान लगाकर पूरी ताक़त से दौड़े. उस दिन उनके पैरों में जूते नहीं थे पर मन में जीतने की ललक ज़रूर समाई हुई थी. उन्हें जीतना ही था. वे रेस जीत गए. यहाँ से उनके एथलेटिक जीवन की शुरुआत हुई.

१९६० में एक लम्हा वह भी आया जब पाकिस्तान सरकार की तरफ़ से उन्हें वहाँ इंडो -पाक मीट में खेलने का निमंत्रण मिला. पाकिस्तान में उन्होंने अपनी आंखों के सामने अपने परिवार को खत्म होते देखा था. वह दृश्य वे भूल नहीं सकते थे. वह जाना नहीं चाहते थे पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के कहने पर वह वहाँ गए.

लाहौर के गद्दाफ़ी स्टेडीयम मे हज़ारों की संख्या में लोग बैठे थे. तभी गन फ़ायर के साथ रेस शुरू हुई.उस दिन वह फ़ील्ड पर तूफ़ान की तरह दौड़े. हज़ारों की संख्या में महिलाओं ने उन्हें बुर्का उठा कर देखा. यह खबर पाकिस्तान न्यूज़ एजेंसी की हेडलाइन बन गयी. वह रेस जीत चुके थे. पाकिस्तान की सरज़मीं पर अपने देश का झंडा लहराता देखकर उनके दिल में गर्व और दर्द दोनों का एहसास था. पाकिस्तान के जनरल अयूब खान ने उन्हें फ़्लाइंग सिख की उपाधि दी.

उनका संघर्ष और उपलब्धियों से भरा जीवन हमें सदा प्रेरित करता रहेगा.

ओ माँ...

रचनाकार- सोनिया सिन्हा, कक्षा दशवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय अभनपुर

माँ,
हर वक्त हमारी खुशी की,
तू ही परवाह करती है.

माँ,
तू ही तो सच्चे दिल से
प्यार हमेशा करती है.

माँ,
काश! तू मेरे पास होती,
मेरी खुशियों की उड़ान नई होती.

माँ,
काश! तू मेरी बातें सुन पाती,
और मुझे तेरी गोद मिल जाती.

माँ,
याद तेरी जब आती है,
नयनों से मन की पीर बह जाती है.

नेताजी

रचनाकार- लाल देवेंद्र कुमार

एक बहुत मोटा सा बंदर,
अपनी टोली का वह नेता.
पेड़ से वह ढेरों फल तोड़े,
टोली के लोगों को देता.
टोली संग ही वह चलता,
आगे ही बढ़ कर रहता.
ढेला व पत्थर से कोई मारे,
पहले खुद ही वह सहता..
बच्चे जब भी उसे चिढ़ाते,
कुछ बच्चों को न कहता
बड़े उसे जब मारने आते

तब काटने को वो दौड़ता.
टोली के संग ही,
पेड़ों पर मस्ती वह करता.
आम अमरूद अंगूर सभी,
मिल बांट कर वह खाता..

नशा एक अभिशाप

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

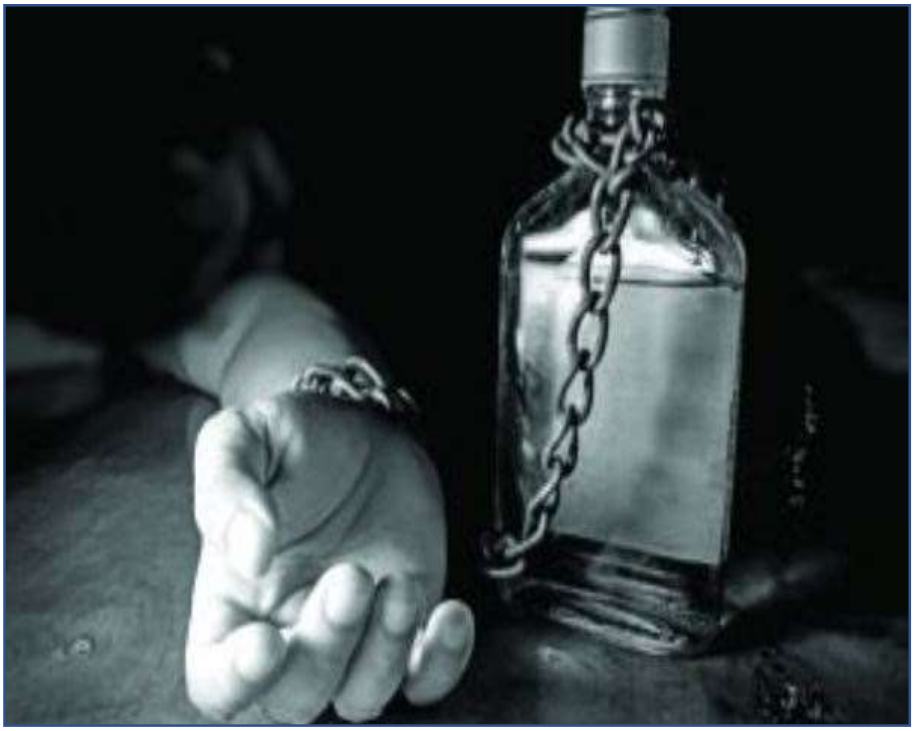

नशा मुक्त भारत हमको है बनाना
न होने देंगे अब कोई बर्बादी
सबको मिलकर कदम है बढ़ाना
नशा मुक्त भारत हमको है बनाना

खुद के साथ औरों को भी है जगाना
नशे से होती है हानि
मिलकर सबको है समझाना
नशा मुक्त भारत हमको है बनाना

नशे से बढ़ते अपराध सारे हमको है मिटाना
हर इंसान रहे खुश और जिंदादिल
हमको यह कर्तव्य है निभाना
नशा मुक्त भारत हमको है बनाना

ना कोख और ना किसी की माँग उजड़े
ना पड़े किसी को रोना
कोई व्यक्ति करें न नशा
यह अभियान हमको है चलाना
नशा मुक्त भारत हमको है बनाना

चारों और खुशियों का हो आना-जाना
ना कभी किसी की हो बदनामी
हमको सभ्य समाज है बनाना
नशा मुक्त भारत हमको है बनाना

शिक्षक समाज का है पथ-प्रदर्शक
सबको है यह बताना
कर गुजरेंगे ऐसा काम कोई
पड़ेगा ना किसी को जताना
नशा मुक्त भारत हमको है बनाना

पाठशाला

रचनाकार- दिनेश कुमार चन्द्राकर

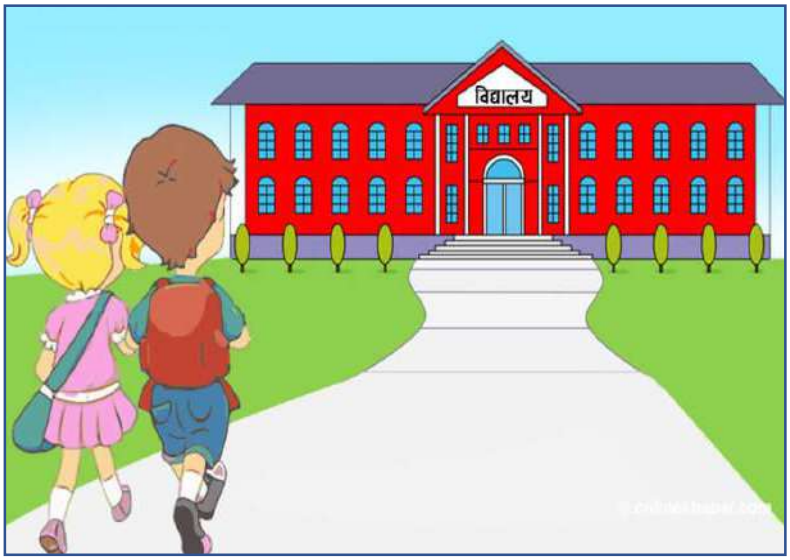

ज्ञान का है बोलबाला,
बस्ती में है पाठशाला,
मस्ती की है पाठशाला.

गोलू ,मोनू ,सोनू
चले पढ़ने को पाठशाला.
चिंकी ,मिन्की, पिंकी
चलीं सीखने को पाठशाला.

पेन, पुस्तक, कॉपी रख लें,
स्कूल बैग हाथ में पकड़ लें.
चलेंगे हम साथ- साथ,
होगी आपस में बात.

गुरु जी हमें पढ़ायेंगे,
गीत और कहानी सुनायेंगे.

पुस्तक से हमें मिलवायेंगे,
पढ़ना -लिखना सीख जायेंगे.

सीखेंगे हम अपनी भाषा,
भक्ति, नीति सबकी परिभाषा.
मिलेगा सभ्यता, संस्कृति का ज्ञान,
देवभाषा की सुभाषित पहचान.

सब भाषाओं की आधार है शाला
ज्ञान का है बोलबाला,
बस्ती में पाठशाला,
मस्ती की पाठशाला.

आकार-प्रकार, गुणा, भाग,
सीखेंगे अंकों का खेल.
ऋण और धन को जोड़,
जानेंगे अंकों का मेल.

भूगोल ,इतिहास और विज्ञान,
समझेंगे रहस्यमय ज्ञान.
जिज्ञासा बूझो तो जाने,
अविष्कार की जननी पहचाने,

ज्ञान- विज्ञान ने जग को पाला
स्वच्छ- सुंदर पाठशाला,
चले हम अपनी पाठशाला.
हम बच्चों की पाठशाला.

बालश्रम

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

ऐ भारत माँ, मैं भी तो तेरा ही बच्चा हूं,
फिर क्यों दो वक्त की रोटी को मैं तरसता हूं.

स्कूल जाकर पढ़ने को हमेशा तरसता हूं,
किताबें नहीं रद्दी के बोझ तले तड़पता हूं.

जहां खेलकर था मुझे पसीना बहाना,
वहां खेल का मैदान मुझे ही है बनाना.

आंसू पीकर भी काम करता,
हाथ पांव में पड़ जाते छाले,

एक-एक दाने को मैं तरसता,
खाने के पड़ जाते मुझे लाले.

इन्हीं अंधेरों की गुमनामी में खोता गया मेरा बचपन,
नन्ही सी जान और दर्द से तड़पता रहा मेरा तन मन.

सड़कों पर मैं काम करूं, कैसे देखूं कोई सुंदर सपना,
नहीं कोई फरिश्ता यहां और ना ही कोई मेरा अपना.

बाल श्रम अपराध है कानून तो बनाया है,
क्या सच में रुक गया अपराध या सब को मूर्ख बनाया है.

जहां बैठकर मुझे छप्पन भोग था खाना,
वही औरों के लिए मुझे खाना पड़ता है लगाना.

मां का आंचल छोड़ घर से पड़ता है निकल जाना,
कुछ तो तरस मुझ पर खाओ, सीख लो मन को पिघलाना.

सोचो भला कैसे देश का भविष्य खुद, देश का भविष्य बनाएगा,
जो खुद ही अंधेरे में है वह, औरों को कैसे रौशनी दे पायेगा..
ऐ भारत माँ, मैं भी तो तेरा ही बच्चा हूं,
फिर क्यों दो वक्त की रोटी को मैं तरसता हूं.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

<u>रिश्ता</u>

शनिवार का दिन था. कक्षा में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का कालखंड चल रहा था. बच्चे एक-एक कर कविता, कहानी, गीत, चुटकुले आदि प्रस्तुत कर रहे थे. कई बच्चे अपनी पारी की प्रतीक्षा किए बिना दौड़ - दौड़ कर आगे आते जा रहे थे. उनका उत्साह और उनकी तैयारी देखकर तिवारी सर को बहुत खुशी हो रही थी.

हो भी क्यों ना? वे बच्चों के लिए बड़ा परिश्रम करते थे. बच्चों की भाषा संबंधी योग्यता हो या उनके नैतिक मूल्यों का विकास, हर बात के लिए वे नए-नए प्रयत्न करते ही रहते थे.

कक्षा में यह सब चल रहा था. जो बच्चे मुखर थे, जिनमें किसी प्रकार का संकोच न था वे अपनी पारी आने के पहले ही सामने खड़े होकर अपनी प्रस्तुति दिए जा रहे थे.

पर इन सबसे अलग एक बच्चा और भी था, विवेक. विवेक बहुत योग्य था पर शांत रहता था. वह कभी खुद को दिखाने की कोशिश नहीं करता था. आज कक्षा में वह हर प्रस्तुति के बाद अपना हाथ उठाता था, शायद सर की दृष्टि पड़ जाए और वे उसे सामने आने की अनुमति दे दें. पर पता नहीं क्यों, ऐसा नहीं हुआ और छुट्टी का समय पास आ गया.

अचानक तिवारी सर की आवाज गूंजी, "आज बस इतना ही. और हां, जो अभी तक सामने नहीं आ पाए वह सब खड़े हो जाएं. "

देखते-देखते पंद्रह बीस बच्चे खड़े हो गए. तिवारी जी की कड़कती हुई आवाज फिर आई, " तो तुम लोगों ने कोई तैयारी नहीं की, चलो घुटनों के बल बैठ जाओ."

जिन बच्चों ने कोई तैयारी नहीं की थी उन्होंने सोचा, चलो सस्ते में छूटे. पर ऐसे बच्चे जिन्हें बहुत सी कविताएं, कहानियां, गीत आदि याद थे, पर जिन्हें आगे आने का अवसर नहीं मिल पाया, वे दुखी हो गए. विवेक भी उन्हीं में से एक था. सर का आदेश होते ही अपमान और दुख से उसका चेहरा लाल हो गया. दूसरे बच्चों की तरह वह भी कक्षा में पीछे की दीवार के किनारे घुटनों पर बैठ गया.

उसका सिर झुका हुआ था. वह सोच रहा था, मेरा अपराध क्या है, मैंने दूसरों के मौके नहीं छीने या मैंने अपनी बारी की प्रतीक्षा की या फिर चिल्ला-चिल्लाकर सर का ध्यान अपनी ओर नहीं खींचा. यह सब सोचते-सोचते उसका मन पीड़ा से भर गया. उसकी आंखें छलक पड़ीं और आंसू टप-टप नीचे गिरने लगे. उसके अगल- बगल के बच्चों ने जब यह देखा तो तुरंत चिल्लाने लगे सर विवेक रो रहा है.....

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

जब बच्चों ने अपने शिक्षक तिवारी सर को विवेक के रोने की बात बताई तब शिक्षक ने विवेक के पास आकर उसके रोने का कारण पूछा. विवेक ने बताया कि उसने सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए तैयारी की थी पर उसे अपनी प्रस्तुति देने का मौका ही नहीं मिला और सजा भी मिल गई यह बताते हुए विवेक पुनः रो पड़ा. शिक्षक को अपनी गलती का एहसास हुआ.विवेक के अलावा कुछ और बच्चे भी थे जिन्हें सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देने का अवसर नहीं मिला था. शिक्षक ने उन सभी बच्चों को सांत्वना देते हुए कहा कि , बच्चो मुझे भी दुख है कि आप लोगों को आज के कार्यक्रम में अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त नहीं हो पाया और मैंने आप लोगों को दण्ड भी दे दिया.मैं ऐसी गलती पुन: नही होने दूंगा.अब आगामी शनिवार को होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में आप लोगों को जरूर ही अवसर दिया जाएगा.

तिवारी सर की यह बात सुनकर विवेक को अच्छा लगा और उसने रोना बंद कर दिया. अब विवेक को अगले शनिवार की प्रतीक्षा थी उसने अपने कार्यक्रम के लिए बहुत अच्छी तरह से तैयारी की आखिर शनिवार आया और तिवारी सर ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में सबसे पहले विवेक को ही अपनी प्रस्तुति के लिए बुलाया. विवेक की प्रस्तुति सभी को बहुत पसंद आईं.

कार्यक्रम के बाद तिवारी सर ने विवेक को बुलाया और कहा कि तुम अच्छे कलाकार हो लेकिन अपने संकोची स्वभाव के कारण ही पीछे रह जाते हो तुम्हे अपनी संकोची प्रवृत्ति को बदलना चाहिए. उस दिन के बाद विवेक को अपने अंदर एक नये आत्मविश्वास का अनुभव होने लगा और उसका संकोची स्वभाव बिलकुल ही बदल गया

प्रीति सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी

बच्चे तिवारी सर को बताते हैं कि विवेक रो रहा है तिवारी सर को भी समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या हुआ जो विवेक इतना रो रहा है वह उससे पूछते हैं कि क्या हुआ, रो क्यों रहे हो फिर भी विवेक चुप रहता है और बिना कुछ बोले घर आ जाता है. घर पर माँ भी यही सवाल करती है क्या हुआ बेटा कुछ बोलते क्यों नहीं फिर भी वह कुछ नहीं बोलता और अपने कमरे में चला जाता है रात बीतती है रोज की तरह उस दिन भी सवेरा होता है फिर वही स्कूल जाने समय भी हो जाता है उसका स्कूल जाने का मन नहीं कर रहा था और माँ के कहने पर चला जाता है. वहाँ उसे पता चलता है कि सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रभारी अब तिवारी सर के जगह शुक्ला सर आ गए हैं. शुक्ला सर क्लासरूम में आते हैं क्योंकि उनका पहला दिन था तो सभी बच्चों से उनका नाम पूछते है और खूब सारी बात करते हैं. बहुत जल्द ही शुक्ला सर सभी बच्चों में लोकप्रिय हो जाते हैं. वे सभी बच्ची को आगे आने के अवसर प्रदान करते हैं उन्हें प्रोत्साहित करते परन्तु विवेक अभी भी सार्वजनिक सभा में प्रस्तुति देने से घबराता, मंच पर खड़े होते ही उसके शब्द और विचार दोनों शून्य हो जाते मूँह से एक शब्द भी ना निकलता.

शुक्ला सर भी बहुत दिनों से देख रहे थे कि विवेक कुछ शांत सा रहता है कुछ पूछने पर ज्यादा नहीं बोलता फिर एक दिन शुक्ला सर पूरी क्लास के सामने उसे बुलाते हैं उसके सर पर हाथ रख रखकर बोलते हैं तुमने जो कविता लिखी है मैंनेे तुम्हारी कॉपी में देखा है उसे आज सबके सामने सुनाओ. पहले तो वह संकोच करता है फिर सर की ओर देखता है तो उसे हिम्मत मिलती है. वह अपनी कविता कुछ अटकते हुए बोलता है और पूरी क्लास तालियों की आवाज से गूंज उठती है. उस दिन के बाद तो जैसे उसके पंखों को उड़ान मिल जाती है.

डिजेन्द्र कुर्रे व्दारा पूरी की गई कहानी

कुछ बच्चों ने तिवारी सर को बताया कि सर जी विवेक रो रहा है. उसके आंसू थम नहीं रहे हैं. तिवारी सर ने विवेक से पूछा- “विवेक बेटा क्यों रो रहे हो? आप लोगों ने तैयारी नहीं कि थी उसी का दंड आप लोगो को मिल रहा है.”विवेक सिसकते हुए कहा “सर मैंने तैयारी कि है परंतु मेरी बारी नहीं आने के कारण मैं नहीं बता पाया.”तिवारी सर ने बोला “चलो अभी सुनाओ. ”विवेक ने अपनी प्रस्तुति दी जो क्लास में सबसे अच्छी प्रस्तुति थी. बेहतरीन प्रस्तुति के लिए विवेक को इनाम भी दिया गया. बाद में तिवारी सर को आत्मग्लानि भी महसूस हुई कि वे सभी बच्चों को अवसर दे नहीं पाये.उन्होंने तय किया कि वें आने वाले समय में सभी बच्चों को उचित अवसर देने का प्रयास अवश्य करेंगे.

तुषार देवांगन कक्षा आठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चंगोराभाठा दक्षिण पूर्व, रायपुर व्दारा पूरी की गई कहानी

उसके बाद तिवारी सर बोले “विवेक तुम क्यों रो रहे हो?”तब विवेक रोते-रोते बोला “सर मुझे कहानी याद थी और मेरी बारी आई ही नहीं इसलिए मैं नहीं बोल पाया और आपने मुझसे बिना पूछे मुझे दंड दे दिया. ” तभी सर बोले कि ठीक है तुम रोना बंद कर दो और अपनी कहानी पूरी कक्षा को सुनाओ. फिर अगले शनिवार को हम ऐसी योजना बनाएंगे कि सभी बच्चों का बारी आए और जो सबसे अच्छी कहानी सुनाएगा उसे इनाम दिया जाएगा.

अगले हफ्ते जब फिर से सभी बच्चों ने कहानी सुनाई तो विवेक की कहानी सबसे अच्छी लगी. इसलिए उसे इनाम मिला और इससे सभी बच्चों का उत्साहवर्धन हुआ और वह नई-नई कहानी लिखने को प्रेरित हुए.

कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी

अवसर की समानता

जब अन्य बच्चों ने सर को बताया कि विवेक रो रहा है तब सर उसके पास जाकर उसे डाट कर चुप कराने की कोशिश करते है तब विवेक और जोर से रोने लगता है. तब सर को एहसास होता है कि विवेक तो बहुत योग्य व शांत रहने वाला है वह बिना किसी कारण के इस प्रकार रोने वाले बच्चों में से नहीं है. तब तिवारी सर ने उसे अपने साथ अपने कार्यालय में ले जाकर रोने व दुखी होने का कारण पूछा, विवेक ने सारी बात बताई तब सर को ये पता चला कि वे अनजाने में ही विवेक और उस जैसे कई अन्य प्रतिभाशाली बच्चों के साथ न्याय नही कर रहे है जो अपनी बारी आने का इंतजार करते है और अवसर नही मिलने पर सामने आकर अपनी बातों को कह भी नही पाते है. जिसके कारण उन बच्चों की प्रतिभा दबी रह जाती है. उस दिन तो सर ने सभी बच्चों को घर जाने के लिए छुट्टी दे दी और उन्हें अगली बार के लिए तैयारी करके आने को कह दिया.सोमवार को जब शाला पुनः लगी तो उस दिन भी बच्चें अपने अपने कार्यक्रमो की प्रस्तुति देने के लिये उत्सुक थे. निर्धारित समय पर कार्यक्रम शुरू हुआ सर ने सभी बच्चों से पूछा कि अपने तैयारी की है या नही बहुत से बच्चों ने हाथ उठा कर हाँ में जवाब दिया उनमें विवेक भी था, पर कुछ बच्चों ने कोई जवाब नही दिया और वे डर कर दूसरे बच्चों के पीछे अपना चेहरा छुपाने की कोशिश करते है. अब तिवारी सर ने पहले उन बच्चों को कविता, गीत पाठ के लिए बुलाया जो पीछे छुप रहे थे और उन्हें बड़े ही प्यार से समझाया कि तुम्हे जो भी आता है उसे निसंकोच सुनाओ, कुछ बच्चों ने तो डर कर ही सही गीत कविता आदि सुनाया पर जो कुछ नही सुना पाए सर ने उन्हें अगले दिन तैयारी करके आने को कहा. विवेक ने भी आज बहुत ही बढ़िया कविता पाठ किया. विवेक की प्रस्तुति को सुनकर सभी शिक्षकों व बच्चों ने बहुत जोर से तालिया बजा कर उसका उत्साह बढ़ाया.उसके बाद से तिवारी सर व अन्य शिक्षको ने सभी बच्चों पर समान रूप से ध्यान देना शुरू कर दिया अब स्कूल के सभी बच्चें पढ़ाई के साथ साथ अन्य गतिविधियों में बढ़- चढ़ कर हिस्सा लेने लगे, सबको समान अवसर मिलने पर सब खुश थे और सबकी प्रतिभा का विकास भी होने लगा.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

उस दिन बहादुर अपनी माँ के साथ घर की साफ सफाई में लगा हुआ था. दीवारों पर और छप्पर के नीचे मकड़ी ने जाले बना लिए थे.

एक लंबी छड़ी में झाड़ू बांधकर वह जाले निकालने की कोशिश कर रहा था.

अचानक उसने देखा, छप्पर और दीवार के बीच की खाली जगह में बहुत सा घास - फूस जमा हो गया है. उसने अपनी झाड़ू से घास-फूस के ढेर को दूसरी ओर आँगन में गिरा दिया. तभी अचानक उसे चिड़ियों की तेज चहचहाहट सुनाई दी. उसने खिड़की से झांक कर बाहर देखा.

घास-फूस का जो ढेर बाहर गिरा था वह दरअसल चिड़ियों का घोंसला था. चिड़ियों के दो छोटे-छोटे बच्चे भी घोंसले के साथ गिर पड़े थे. उन बच्चों के पंख तो निकल आए थे पर वे उड़ नहीं पा रहे थे. बच्चों के साथ की दोनों चिड़ियाँ बच्चों

की माँ और पिताजी थे उन दोनों ने चीख - चीख कर आसमान सर पर उठा लिया था. वे दोनों मजबूर थे. अपने बच्चों को उठाकर कहीं ले जा नहीं सकते थे

यह दृश्य देखकर बहादुर का मन दुःख और पश्चाताप से भर गया.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

आम का पेड़

रचनाकार- मारुति शर्मा

यह पेड़ आम का आँगन में,
हो मोती जैसे कंगन में.

कुछ आम छुपे हैं पत्तों में,
ज्यों शहद भरा हो छत्तों में.

शाखें इसकी तनी - तनी,
है नीचे ठंडी छाँव घनी.

कभी-कभी एक बुलबुल आती,
कभी रुपहली मैना गाती.

अक्सर कुछ बंदर भी आते,
पूँछ झुलाते और सो जाते.

यादों से कुछ गुंथा हुआ,
एक झूला भी है बंधा हुआ.

यह पेड़ अतीत का हिस्सा है,
जीवन का मीठा किस्सा है.

मोर गाँव

रचनाकार-बलराम नेताम

देख के शहर के चौका चौन्द,
सब शहर कोती ओरियावत हे,
बुढ़हत काल म संगवारी,
अब गाँव ला सोरियावत हे.

सरग कस मोर गाँव कहा गवागे,
आधुनिकता म ओहा समागे,
गरी खोल चौरा के बैठइय्या,
सब घर कोती ओरियागे.

गाँव लइका मन के सुघ्घर टोली,
डोकरी दाई के सुघ्घर मीठ बोली,
तरिया डबरी खेतकार डोली,
कहा नंदागे मीत मितान के बोली.

राम राम काहत हाय हैलो में आगे
मुंदरहा के उठईय्या बेरा म जागे,
पाव पतौरी छोड़ माड़ी के लागे पईय्या,
कहा नंदागे मोर गाँव के गोकुल कन्हैया.

शहर के चौका चौन्द म भइय्या,
जम्मो जुन्ना खेल ल तिरियावत हे,
फ्री फायर, पपजी गेम के खेलइय्या,
भौरा गेड़ी बाटी फुगड़ी ल भुलावत हे.

चाउमीन पिज्जा बरगर के खवईय्या,
पनपुरवा रोटी तेंदू चार ल सोरियावत हे,
बुढ़हत काल म गा संगवारी,
अब गाँव कोती ओरियावत हे.

देश सेवा करने चले मजदूर

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

देश सेवा करने को चल पड़ते हैं, मजदूर.
दो वक्त की रोटी के खातिर हो जाते हैं, घर से दूर..
हाथ में थैला, कांधे में सामान.
परिवार संग साथ लेकर, चल पड़े अरमान..
जहाँ मिले काम मजदूरी, वहीं देते तंबू को तान.
लग जाते है देश सेवा में क्या बच्चे और क्या सियान..
सुबह होते ही रहता मन में, एक बात का ही बस ध्यान.
रूखी- सुखी रोटी खाकर, करते हैं अपना काम..
बिन गलती भी सुन लेते है, लोगों की ये डांट.
सब कुछ सह लेते हैं ये, परिवार संग लेते हैं बांट.
फावड़ा, बेलचा धरकर करते हैं नित दिन ये काम.
सूर्योदय से सूर्यास्त तक, कभी न करते ये आराम..
खाना बनाने को है इनपर, न चूल्हा न बर्तन.
इनको चिंता सताए कैसे करें परिवार का जतन..

कभी न थकते ये चाहे, पड़ जाएँ पैरों में छाले.
कमाकर रोटी खाने को भी, रहते हैं इनको लाले..
चिड़ियों की कलरव सुनकर, होगी नई बिहान.
सब मिलकर काम करेंगे, बनेगा अपना देश महान..

हमारा पर्यावरण

रचनाकार- पद्यमनी साहू

उद्यान में खिले रंग- बिरंगे फूल, छोटे- बड़े बहुत सारे पेड़ पौधे, जमीन पर बिछी घास की हरी चादर, प्रणव और ज्योति के मन को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती है. प्रणव और ज्योति छुट्टियों के दिनों में अपने दादा जी के साथ उद्यान में जाया करते हैं. उनके दादा जी दीनदयाल पांडे जी प्रतिदिन उद्यान में सैर करने के लिए जाते हैं. आज सुबह उद्यान में लोगों की भीड़ अन्य दिनों से अधिक थी क्योंकि आज 5 जून है, जो कि विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है. इस दिन उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस पर एक कार्यक्रम भी रखा गया है. प्रणव और ज्योति भी अपने दादा जी के साथ इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए. नन्हीं सी ज्योति ने अपने दादा जी से बड़ी मासूमियत से पूछा दादाजी यह पर्यावरण दिवस क्या है और क्यों मनाया जाता है?दादा जी ने प्रणव और ज्योति को बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के दिन कई स्थानों पर कार्यक्रम

होते हैं.जिसमें कई विद्वान सम्मिलित होते हैं और पर्यावरण के विषय में महत्वपूर्ण चर्चा करते हैं. पर्यावरण पर मानवीय क्रियाकलाप से होने वाले अंतर को देखना व हमारे लिए और पर्यावरण के लिए यह लाभदायक है या हानिकारक है इस पर चर्चा करते हैं. इतने में उद्यान में कार्यक्रम की शुरुआत हो गई. कार्यक्रम में ज्योति के दादाजी को भी बोलने का अवसर दिया गया. दादा जी ने कहा कि हम जिस पर्यावरण में रहते हैं उसे साफ सुथरा व सुंदर बनाए रखना हम सबकी आवश्यकता एवं परम कर्तव्य है. जिससे स्वच्छ व सुंदर पर्यावरण में रहकर हम स्वस्थ व निरोगी और प्रसन्न चित्त रह सकते हैं क्योंकि बीमारी का कारण गंदगी एवं अव्यवस्था ही है.विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम में सभी लोगों ने अपने अपने विचार प्रकट किए सभी ने संकल्प लिया कि वे अपने पर्यावरण को साफ-सुथरा व सुंदर बनाए रखने का प्रयास करेंगे. खाली जगहों व अपने घरों में पेड़-पौधे लगाकर अपने पर्यावरण को सुंदर बनाएंगे. प्रणव और ज्योति को इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर बहुत ही अच्छा लगा. वे दोनों आज जान पाए कि पर्यावरण हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है.हम पर्यावरण के बिना और पर्यावरण हमारे बिना नहीं रह सकता. इसलिए हमें पर्यावरण को साफ बनाए रखने के लिए लिया गया संकल्प सदैव याद रखने का निश्चय किया.दोनों ने वर्षा ऋतु आने पर अपने दादा जी के साथ घर और घर के आस-पास बहुत सारे पौधे लगाए और उनकी देखभाल की. साथ ही वे अपने मित्रों और रिश्तेदारों को प्रतिवर्ष पौधे लगाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प भी लिया. दोनों का इस संकल्प से दादा जी को बहुत प्रसन्नता हुई कि उन्होंने अपने जीवन में जिस संकल्प को निभाया वह संकल्प निभाने का अब उनके पोते व पोती ने संकल्प लिया है

कंप्यूटर

रचनाकार- रीता मंडल

क्या होता है कंप्यूटर, पापा?
क्या होता है कंप्यूटर जी?

यह डिब्बा है जादू वाला,
जिसमें जादूगरी भरी.
बिना पंख के जो उड़ती है,
कंप्यूटर है एक सोनपरी.
कोई काम जो न कर पाए,
उसको करते कंप्यूटर जी.
ऐसा होता है कंप्यूटर जी..

कंप्यूटर पर चित्र बनाओ,
मनमर्जी के रंग लगाओ.
चाहो तो सब उलट-पुलटकर,
अपनी नयी दुनिया सजाओ.
सबको खूब हँसाता रहता,
पढ़ा-लिखा यह जोकर जी!
ऐसा होता है कंप्यूटर जी..

हार्डवेयर इसका शरीर है
सॉफ्टवेयर इसका है दिल.
धरती पर रहता है लेकिन,
आसमान इसकी मंजिल.
कहता मेरे संग-संग उड़ लो,
खा लो थोड़ा चक्कर जी!
ऐसा होता है कंप्यूटर जी.

एक सवाल

रचनाकार- द्रोण साहू

मम्मी मेरे बालों को,
मेरे सभी सवालों को,
तुम इतनी आसानी से,
कैसे सुलझा लेती हो?

दुनिया का हर सवाल,
क्या इतना ही आसान है?
तो फिर यहाँ हर इंसान,
रहता क्यों परेशान है?

इंटरनेट का कमाल

रचनाकार- तेजेश साहू

आओ बच्चो हम देखें इंटरनेट का कमाल
सभी काम होते हैं इससे यह है अद्भुत मायाजाल
इसकी एक अलग है दुनिया जिसमें है ज्ञान विज्ञान और खेल
इससे वाट्सअप, फेसबुक और करते हैं ईमेल
इसकी सहायता से हम पूरी दुनिया घूम आते
एक दूजे से ऑनलाइन बाते करते जाते
यह है मानव के लिए वरदान
इसने बनाया जीवन का आसान
इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं
यह इंटरनेट का है कमाल.

पहेलियाँ

रचनाकार- प्रमिला साहू

1. तीन पंखो वाली तितली,
घर घर मे टंगी ये रहती.
2. टिकटिक- टिकटिक करती रहती,
हरदम है वह चलती रहती.
3. टर्र टर्र की आवाज़ सुनाता,
फुदक -फुदक कर घर में आता.
4. सात रंग में हूं मै सिमटी,
बारिश में अक्सर मै दिखती.
5. धरती पर खड़ा मै रहता,
सबको हूं जीवन मै देता.
गन्दी हवा को सोख मै लेता,
शुद्ध हवा बदले में देता. .

उत्तर :- 1. पंखा 2. घड़ी 3. मेंढक 4. इन्द्र धनुष 5.पेड़

पंचतंत्र की कहानी भाग 1

एक नगर के बाहर एक मंदिर का निर्माण हो रहा था. मंदिर बहुत बड़ा और भव्य बन रहा था. मंदिर के आसपास निर्माण के लिए बड़े-बड़े पत्थर और लकड़ियों के बड़े - बड़े लट्ठे रखे हुए थे. शिल्पकार उन पर लगातार काम कर रहे थे. एक ओर लट्ठों को चीरने का काम हो रहा था. वहीं एक आधा चिरा हुआ एक बड़ा सा लट्ठ रखा हुआ था. शिल्पकारों ने चिरे हुए किनारे पर लकड़ी के एक नुकीला टुकड़ा फंसा रखा था ताकि चिरे हुए सिरे आपस में मिल न जाएं. दोपहर के समय सारे शिल्पकार भोजन के लिए नगर की ओर चले गए.

इसी समय बंदरों का एक बड़ा झुंड मंदिर के पास आया. झुंड में एक नटखट और शरारती बंदर भी था. वह कभी चैन से नहीं बैठता था. जो भी चीज देखता उसे उलटता - पलटता,फेंकता - उठाता. न जाने और भी कैसी - कैसी शरारतें करता.

उस बंदर ने उस आधे चिरे हुए लट्ठे को देखा तो उसके मन में बड़ा कौतूहल पैदा हुआ. वह उस लट्ठे के ऊपर बैठ गया और लकड़ी के फंसे हुए टुकड़े को हिलाने की कोशिश करने लगा. लेकिन यह टुकड़ा लट्ठे के अंदर बड़े गहरे तक

ऐसा फंसा हुआ था कि ट्स से मस नहीं हुआ. बंदर भी बड़ा जिद्दी था. उसने उसे हिलाना नहीं छोड़ा. बंदर की लगातार कोशिश से वह टुकड़ा थोड़ा-थोड़ा हिलने लगा. बंदर बड़ा खुश हुआ और अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे हिलाने लगा.

पर ऐसा करते समय उसे ध्यान नहीं रहा कि उसकी पूंछ उस लट्ठे के चिरे हुए हिस्से के अंदर चली गई है. और फिर अचानक एक बार टुकड़ा बाहर निकल ही गया. लट्ठे के चिरे हुए हिस्से तेज आवाज के साथ आपस में मिल गए और बंदर की पूंछ उसमें दब गई.

बंदर दर्द के कारण चीख पड़ा. परंतु अब कुछ नहीं हो सकता था. अपनी पूंछ निकालने के लिए वह बड़ी ताकत लगा रहा था किंतु अब उसकी पूंछ नहीं निकल सकती थी. ठीक उसी समय शिल्पकार भी वापस आ गए. उन्हें आते देखकर बंदर ने भागने की कोशिश की और इस कोशिश में उसकी पूंछ कट गई. वह चीखता - चिल्लाता वहां से भाग गया.

शिक्षा -सच है जो चीज हम से संबंधित नहीं है और जिसके बारे में हमें जानकारी नहीं है, उससे छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए.

आत्मबल

रचनाकार- शशि पाठक

टूटेगा कभी हौसला, छूटेगा कभी साथ.
पर न उठने देना, खुद पर से विश्वास.
कभी बिछुड़ेंगे अपने, कभी टूटेंगे सपने.
पर तुम न छोड़ना, मंजिल पाने की आस..

आएंगी विपत्तियाँ समय न होगा अनुकूल.
संकटों की तेज आंधियाँ चलेंगी प्रतिकूल.
हिम्मत न हारना तुम, रहना अडिग अविचल.
बुरे से बुरा वक्त भी, हो जाएगा विफल..

चाहते हो लक्ष्य अपना, तो दृढ़ हो संकल्प.
कर्तव्यपथ पर चलो,सुवासित है कल.
मंजिल न हो ओझल, न हारो किसी पल.
तुम्हे लक्ष्य तक पहुँचायेगा, तुम्हारा ही आत्मबल.

बढ़े चलो

रचनाकार- शशि पाठक

खोना न कभी धीर तुम,
माँ भारती के लाल हो.
हर संकटो को पार कर,
सत्मार्ग पर बढ़े चलो.

रहे अमिट नाम तुम्हारा,
कर जाओ कुछ ऐसा काम.
मंजिल जब तक मिल न जाये,
तुम मत स्वीकारो विश्राम.

उत्साह और उमंग लेकर,
मार्ग प्रशस्त करते चलो.
हर संकटो को पार कर,
सत्मार्ग पर बढे चलो.

माना मंजिल की राहों में,
विपदाओं का घेरा होगा.
मन ना विचलित होने देना,
रात के बाद सवेरा होगा.
हार के बाद जीत ही होगी,
आशा के दीप जलाते चलो.
हर संकटों को पार कर,
सत्मार्ग पर बढ़े चलो.

मोड़ दे लहरों की दिशा,
तुम ऐसी पतवार हो.
तूफानों से जो लड़ जाए,
तुम वो तीक्ष्ण तलवार हो.
आत्मबल पहचानो अब तुम,
विजय पथ पर बढ़े चलो.
हर संकटों को पार कर,
सत्मार्ग पर बढ़े चलो.

जग में होगा नाम तुम्हारा,
बढ़ेगा भारत देश का मान.
सब संकट हर लो जग के,
खुशहाल रहेगा हिंदुस्तान.
लेकर जीत का संकल्प,
बाधाओं से लड़े चलो.
हर संकटो को पार कर,
सत्मार्ग पर बढ़े चलो.

स्कूल चली

रचनाकार- अनीता चंद्राकर

स्कूल चली मैं, स्कूल चली,
बस्ता ले स्कूल चली.
गुड्डा गुड़िया खेल खिलौने,
मुझको हैं भातें.
पर उससे भी प्यारी लगती,
टीचर जी की बातें.
रोज सुनातीं नई कहानी,
भाषा का पाठ पढ़ाती हैं.
खेल खेल में गणित सिखातीं ,
मन का भय, भगती हैं.
नहीं घूमना अब, गली गली,
स्कूल चली मैं स्कूल चली..

मानवता का पुल

रचनाकार- पदमा साहू

मानवता का पुल बनाकर,
कठिन राह को पार लगाना है.
छोटे बड़े सबका सहयोग हो,
अपना फर्ज निभाना है.
कठिन राह पर मंजिल पाने को,
मनोबल सबका बढ़ाना है.
राह में आगे बढ़े सब,
मानवता का पुल बनाना है.
छूटे ना कोई अपना साथी,
सबको पार लगाना है.
क्यों ना हो विकट परिस्थिति,
पर्वतों में राह बनाना है.

जीवन-पथ अड़चनों से भरा,
विश्वास की पगडंडी बनाना है.
अज्ञानता के सागर को पाटने,
मानवता का पुल बनाना है.

सफलता की कहानी

नाम- अंजू साहू
पिता का नाम- श्रीमान् दनुक लाल साहू
माता का नाम- श्रीमती लता साहू
कक्षा - आठवीं
ग्राम- कोयलारी

"सबकी कंठवासी" शांत स्वभाव की शर्मीली बालिका सबकी चहेती है. पढ़ाई में भी अच्छी है. अनुशासन में रह कर सबको अनुशासित रहने हेतु प्रेरित करती है, जो शाला की छात्रा प्रतिनिधि के रूप में बाल संसद में प्रधानमंत्री के पद के अनुरूप अपनी जिम्मेदारियां निभाती है. अंजू को खेल विशेषकर बैडमिंटन, पेंटिंग, साहित्यिक गतिविधियों में भी सरुचि भाग लेती है और कंप्यूटर ऑपरेटिंग में तो इसे विशेष दक्षता हासिल है इसलिए कार्यालीन कार्यो के संचालन में एक लिपिक जैसे कार्य कर लेती है विद्यायलीन गतिविधियों में कंप्यूटर व तकनीकी संबंधी

कार्यो को यही संभालती है समय पड़ने पर अधीक्षिका मैडम के कार्यो में मदद करती है.

किन्तु शर्मीला स्वभाव व गुस्सा इसकी योग्यता को निखारने में रूकावट पैदा कर्ता है. जीवन कौशल सत्रों के दौरान इसे प्रेरित किया गया जीवन कौशल की शिक्षा से इसमें परिवर्तन स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा है. अंजू में खुलकर बात करने की क्षमता विकसित हुई और निडरता के साथ अपने विचारों को प्रस्तुत करने में सक्षम हो गई है.

अंजू का गुस्सा और अभिव्यक्ति में झिझक इसकी योग्यता व प्रतिभा को निखारने व उसे बहुउद्देश्य बनाने में रूकावट पैदा करता था. जीवन कौशल सत्र- "अपने गुस्से को नियंत्रण करना" एवं "दृढ़ता पूर्वक अपनी बात रेख पाना" सत्र अंजू के लिए बहुत लाभदायक रहा और अंजू का कहना है- **"आज मैं स्वयं कहती है मुझमें आत्मविश्वास बढ़ गया है, आने वाले समय में मैं जीवन कौशल सत्रों से और भी अच्छी आदतों को सीखकर अपना भविष्य गढ़ने का कार्य करुँगी."**

My Mother

Poetess- Devika Sahu

My mother is a super woman,
She does everything for me.
She cooks delicious food for me,
She stitches beautiful dresses for me,
She makes toys for me.
She dances when I win,
When I score good, she's so happy for me.
She tells me fairy tales,
She sings lullaby for me.
She's so calm and beautiful,
So caring and loving as every mother would be,
If she's there, there's nothing to bother,
She makes my life beautiful and happy
I love my mother I love my mother.

छुट्टियों में मैं खुश नहीं

रचनाकार- लाल देवेंद्र कुमार

छुट्टियों में खुश होते थे हम,
आपकी छुट्टी में परेशान.
बंद हुआ सब घूमना फिरना,
कोरोना ने किया हैरान.
इसका ऐसा हुआ प्रभाव ,
झटपट खत्म कर रहा इंसान.
साफ-सफाई और बचाव से ही,
बच सकती है अब पहचान..
खेलने कूदने को ना मिल रहा,
टीवी देख हम हो रहे बोर
मार्केट भी न जा सकते हम

मित्रों के संग ना होता शोर ..
दिन में कई बार हाथ धुल रहे,
साफ-सफाई हुआ प्रभाव.
जीत ही लेंगे इसको एक दिन ,
मस्ती का हो भले..

सबसे अच्छे मेरे पापा

रचनाकार- लाल देवेंद्र कुमार

सबसे अच्छे मेरे पापा,
ऑफिस से घर जब आते.
चॉकलेट व टॉफी ले आएं,
आकर झट मुझे बुलाते.
जब मैं आता तो ही पापा,
अपने गोदी में मुझे उठाते.
चॉकलेट और टॉफी देकर,
मुझसे खूब प्यार जताते..
नित सुबह मुझे जगाकर,
बैठा के खूब मुझे बढ़ाते.
हो सवाल हल ना मुझसे,

अच्छे से वह समझाते..
पढ़ने से अच्छा बन जाऊं,
यह भी अक्सर मुझे बताते.
महापुरुषों और वीरों की.
गाथाएं नित मुझे सुनाते..
कभी-कभी शाम समय को,
पापा मार्केट मुझे ले जाते.
मनपसंद खिलौने व चीजें,
झट खरीद मुझे दिलाते.
स्कूल में जब हो लंबी छुट्टी,
मम्मी सन हम बाहर जाते.
घूम घूम नई जगह को देखें,
छुट्टी में खूब मौज मनाते..

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कहानियाँ प्राप्त हुई हैं, जो हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

पूर्णेश डड़सेना द्वारा भेजी गयी कहानी

रीता जब काम से घर आती तो रोज उसके बच्चे आते ही मम्मी का हाल-चाल पूछने के बजाय वह मोबाइल मांग लेते थे और उसमें घंटों गेम खेलते रहते थे. राज्य में लॉक डाउन होने से बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही थी. कक्षा कार्य न होने और गृह कार्य न मिलने से बच्चे दिनभर खेलने में ही अपना समय बिता रहे थे. रीता के काफी समझाने पर भी उन बच्चों को यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि मोबाइल खेलने के अलावा और भी ज्ञानवर्धक चीजें देखने, सीखने और समझने के लिए है, पर जैसे ही समझाती बच्चे चिढ़ जाते थे. काफी दिनों तक यही स्थिति बनी रही. बच्चों को अपनी ही मम्मी और पापा से भी बात करने की फुर्सत नहीं रहती थी.वह मोबाइल में इतने मगन हो जाते थे कि उन्हें ना खाने का होश रहता ना ही वे बाहर खेलने जाते थे. जब रीता ने अपनी परेशान होकर अपनी यह समस्या अपनी सहेली वंदना से कहीं जो उसके पड़ोस में रहती थी. वह इस साल कक्षा 12वीं की परीक्षा दे रही थी उसने समस्या को सुनकर कहा दीदी सरकार के द्वारा बच्चों को घर पर रहकर ही पढ़ाई करने के लिए

पढ़ाई तुहर द्वार योजना शुरू की गई है जिसमें बच्चे पढ़ाई के वीडियो और साथ में गतिविधियां देखकर सीख सकते हैं और अपनी शिक्षिका से प्रश्न भी पूछ सकते हैं और अपना उत्तर जांच भी करवा सकते हैं तब रीता ने कहा अच्छा इसके बारे में मुझे पता नहीं था इनकी शिक्षिका ने फोन किया था पर मैं बात नहीं कर पाई थी शायद इसीलिए फोन की रही होंगी तो अब क्या करना चाहिए, इन बच्चों से मोबाइल में पढ़ाई करने के लिए? वंदना बोलती है दीदी तुम कुछ ना करो कल मैं कुछ बच्चों को लेकर तुम्हारे घर आऊंगी और उन्हें रोचक तरीके से मोबाइल में पढ़ाऊंगी . दूसरे दिन जब रीता काम से लौटी तभी वंदना उसके घर आई कुछ बच्चों को लेकर और उसने कहा दीदी मैं इन बच्चों को थोड़ी देर आपके आंगन में पढ़ाऊंगी क्योंकि इनमें से बहुत से बच्चों के पास मोबाइल नहीं है तब रीता ने हां में सिर हिला दिया पर उनके बच्चे इस वक्त भी मोबाइल में गेम खेल रहे थे जब वंदना नहीं नए-नए वीडियो पढ़ाई के दिखाने शुरू किए और बच्चों को मजे लेकर पढ़ते हुए देखा तो रीता के बच्चों का भी ध्यान उधर गया और वे धीरे से वंदना के पास पहुंच कर देखने लगे कि वह क्या पढ़ा रही है. उन बच्चों को तब वंदना ने धीरे से समझाया कि मोबाइल का उपयोग हमें सही तरीके से करना है. सही चीजें देखने के लिए और अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए करना है और अब बच्चे रोज वंदना के साथ बच्चे इकट्ठे होकर मोबाइल से पढ़ाई करने लगे और उन्हें मजा भी आने लगा इस तरह रीता की समझदारी से उसकी समस्या हल हो गई.

अपर्णा वर्मा कक्षा दशवीं भानुप्रतापपुर, कांकेर द्वारा भेजी गयी कहानी

लॉकडाउन की पढाई

गर्मी की छुट्टियाँ चल रहीं थीं, पर इस बार कुछ अधूरा लग रहा था. मजा नहीं आ रहा था. इसका एक ही कारण था, " लॉकडाउन ". कोरोना वायरस के चलते सभी को घर पर रहना था. केवल आवश्यक सामान लेने ही बाहर जा सकते थे. हर साल गर्मियों में बुआ जी सपरिवार आतीं थीं. पर इस साल वे सभी अपने-अपने घर पर हैं. वे सब इस बार नहीं आ रहे इसलिए बुरा तो लग रहा है पर ये अच्छा है कि सभी अपने घर पर सुरक्षित हैं.

घर पर बैठे-बैठे हम सब ऊबने लगे थे. ये और बात है कि फोन पर देख कर कुछ स्वादिष्ट बना लेते थे. कभी कुछ पढ़ लेते थे, कभी चित्र बना लेते थे. प्रतिदिन मरीजों की संख्या और लॉकडाउन की तारीख बढ़ती जा रही थी. स्कूल भी बंद थे, दोस्तों से मिलना भी नहीं हो रहा था. एक दिन हमारे टीचर का फोन आया, उन्होंने हमें सरकार द्वारा "पढ़ाई तुंहर दुआर" नाम की स्कीम के बारे में सारी जानकारी दी.

फिर क्या था, कुछ दिनों बाद हमारी भी ऑनलाइन क्लासेस शुरू हो गईं. हमें इस स्कीम से पढ़ाई में बहुत लाभ हुआ. हमारे टीचर्स ने हमें पढ़ाई से संबंधित वीडियो तथा फोटो भेजे. हमने उसकी मदद से पढ़ना शुरु किया. टीचर्स ने गृहकार्य दिए. हमने उसके उत्तर स्कैन करके उन्हें भेज दिए. उन्होंने उत्तर जाँचे. यदि उत्तर में कोई गलती रहती है तो वे वीडियो कॉल क्लासेस के दौरान हमें समझा दिया करते हैं.

यदि तब भी समझ में नहीं आता है तो हम अपने आस-पास जो टीचर रहते हैं उनकी मदद से समझ लेते हैं. अब हम घर पर बैठे-बैठे ही अपने दोस्तों और शिक्षकों से मिल लेते हैं, साथ ही पढ़ भी लेते हैं.

इस स्कीम के बारे में हमने अपने आस-पड़ोस के सभी दोस्तों को भी सारी बातें बताईं. कोई आठवीं कक्षा में था तो कोई ग्यारहवीं में. सभी को यह स्कीम बड़ी अच्छी लगी. वे सब भी जानना चाहते थे कि यह कौन सी वेबसाइट है और

मोबाइल से पढ़ाई कैसे होगी ? इसलिए हमने उन्हें अपने घर पर बुलाया और पढ़ाई तुंहर दुवार के बारे में सब-कुछ समझाया. सब साथ में बैठे तो जरूर थे पर हमने सोशल डिस्टेंसिग का पूरी तरह से ध्यान रखा था!!

अब हम सब अपने - अपने विषय की पढ़ाई मोबाइल की सहायता से कर रहे हैं एक दूसरे से दूर रहते हुए भी मोबाइल पर क्लास के समय ऐसा लगता है कि हम सब साथ में बैठे हुए हैं. कभी-कभी हम चार पांच सहेलियाँ हमारे घर के आंगन में बैठकर अपने - अपने अनुभव आपस में एक दूसरे को बताया करते हैं और मेरी मम्मी भी हमारे साथ शामिल हो जाती हैं. मम्मी इस बात का भी ध्यान रखती हैं कि हम सभी सोशल डिस्टेंसिग का पालन कर रहे हैं या नहीं? पढाई तुंहर दुवार योजना से लॉकडाउन में भी हमारी पढ़ाई चल रही है और इस नये तरीके से हम सभी को बहुत मज़ा भी आ रहा है.

अगले अंक के लिये चित्र

अब नीचे दिये चित्र को देखकर एक बढ़िया सी कहानी स्वयं लिखें या अपने बच्चों से लिखवाएं और हमें ई-मेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

भाखा जनुअला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

रचना- दीपक कुमार कंवर

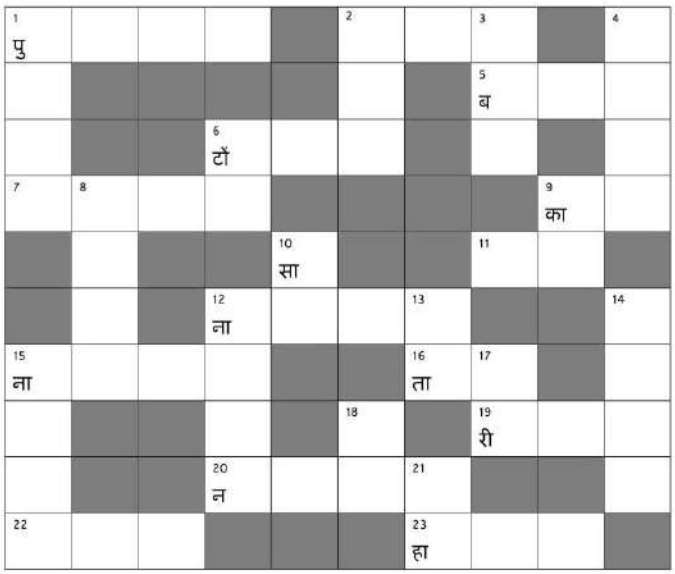

बाएँ से दाएँ – 1.मुलायम, नर्म 2. चूरा, कर्ण 6. छेद 7. तिराहा 9.कल 11. बाड़ी 12. बाजू में पहनने का आभूषण 15.बचपन 16. गरम 19.रूठा हुआ 20.नारियल 22.मैदान 23. हिलता हुआ

ऊपर से नीचे:- 1.पूर्वजों से प्राप्त 2. बड़ा छेद 4. रुमाल 6. एक आभूषण का नाम 8. नातिन 9. करिया 10. सब्जी 12. बहुत छोटा 13. खाली 14. हरा 15. छोटा टुकड़ा 17. नीचे, तल 18. क्या हुआ 21. रुको

भाखा जनउला का उत्तर

1 पु	ल	पु	ल		2 भु	र	3 का		4 उ
र					ल		5 ब	त	र
खौ			6 टों	इ	का		र		मा
7 ती	8 न	बे	ड़ा					9 का	ल
	त			10 सा			11 को	ला	
	नी		12 ना	ग	मो	13 री			14 ह
15 ना	न	प	न			16 ता	17 त		री
न			कु		18 का		19 री	सा	य
बु			20 न	री	य	21 र			र
22 टी	क	रा				23 हा	ल	य	